भारतीय किसान संघ

तत्व एवं व्यवहार

भगवान बलराम

भारतीय किसान संघ

तत्व एवं व्यवहार

प्रकाशक

भारतीय किसान संघ उत्तर प्रदेश

आमुख

देश में अनेक किसान संगठन प्रान्त स्तर पर तथा अखिल भारतीय स्तर पर चल रहे थे फिर अलग से भारतीय किसान संघ चलाने की क्या आवश्यकता थी? यह प्रश्न पूछा जा रहा था। इस प्रश्न के समाधान के लिए तथा कार्यकर्ताओं के लिए संगठन की रीति नीति, सरकार की किसानों के प्रति बरती जाने वाली नीति को स्पष्ट करने के लिए संगठन कें मार्गदर्शक श्री दत्तोपंत के भाषणों को क्रमबद्ध करके कुछ दिन पूर्व 'ध्येय पथ पर किसान' नामक पुस्तक प्रकाशित की थी।

आप सभी के सम्मुख किसान संघ के सम्बन्ध में द्वितीय पुस्तिका 'भारतीय किसान संघ तत्व एक व्यवहार' प्रस्तुत है। यह पुस्तक किसान संघ के कार्यकर्ताओं का पूर्णरूप से मार्गदर्शन करने में सक्षम होगी, ऐसा विश्वास है।

सभी कार्यकर्ता पुस्तक का अच्छी प्रकार से मनन कर उसी के अनुरूप जीवन में व्यवहार करने का प्रयास करेंगे, तभी कार्य अधिक द्रुतगति से बढ़ सकेगा तथा थोड़े ही समय में किसानों के बीच संगठन प्रकाश स्तम्भ के रूप में खड़ा दिखाई पड़ेगा। पुस्तक में प्रकट किये गये विचारों को एक-एक किसान तक पहुंचाने का उत्तरदायित्व हम सभी कार्यकर्ताओं को निर्वाह करना है। यह कार्य जितनी जल्दी कर सकेंगे, उतने ही प्रमाण में हमें सफलता मिलेगी। अभ्यास वर्ग में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सर संघचालक पूज्य बाला साहब देवरस का व्यावहारिक मार्गदर्शन हमें कार्य करने की प्रेरणा देगा। उन्होंने अपना अमूल्य समय निकालकर जो मार्गदर्शन किया है, उसे पुस्तक तक सीमित न रखकर हर किसान तक पहुंचाने की भी जिम्मेदारी हम सब कार्यकर्ताओं की हैं। इसी प्रकार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सर कार्यवाह मा० राजेन्द्र सिंह जी (मा० रज्जु भैया) ने जो कार्य करने के निर्देश दिये है, उन्हें भी लक्ष्य निर्धारित कर हमें पूरा करना है।

श्रीमान दत्तोपंत ठेंगडी के विचारों का प्रसार भी हमें करना है। यह तभी सम्भव होगा जब तीनों मनीषियों द्वारा अभिव्यक्त विचार पहले हमारे जीवन में स्थान कर लेंगे तभी हम उन्हें दूसरों को भी ह्रदयगम करा सकेंगे।

संकलन के क्रम में तीनों ही मनीषियों के विचारों को यथारूप ही प्रस्तूत करने का प्रयास किया है इस कारण, पुनरुक्ति होते हुए भी उन स्थलों पर और अधिक ध्यान केन्द्रित कर मनन एवं चिंतन की आवश्यकता है।

धम्मौर, सुल्तानपुर, उत्तर प्रदेश के अभ्यास वर्ग में दिये गये भाषणों का यह संकलन है, इस अभ्यास वर्ग को एक ओर भीषण वर्षा चुनौती दे रही थी ,दूसरी ओर कार्यकर्ता बाढ़ वर्षा की चिंत्ता न करते हुए भाग लेने के लिए 529 की संरव्या में उपस्थित होकर बाधाओं पर विजय की घोषणा कर रहे थे। इस अभ्यासवर्ग की सफलता के लिए धम्मौर विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री वंशराज सिंह विशेष बधाई के पात्र है ,जिन्होंने किसी को किसी भी प्रकार की वर्षा होने के बाद भी असुविधा का अनुभव नहीं होने दिया और साथ ही उनके विद्यालय के सभी सहयोगी अध्यापकों ने भी व्यवस्था में पूरा सहयोग दिया। हम उनके प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं।

श्याम सुन्दर द्विवेदी

महामंत्री

भारतीय किसान संघ

परम पूज्य सर संघचालक मा० बाला साहब देवरस

उद्बोधन

अपने देश का बहुसंख्यक वर्ग किसानी से जुड़ा है। अधिकांश किसान हैं या खेतों में मजदूरी करते हैं। ऐसा भी कहना अनुचित नहीं होगा कि किसानी इस देश का सबसे बड़ा उद्योग है। जितनी भूमि, जितना जन तथा जितना धन इस उद्योग में लगता है, इतना किसी भी उद्योग में अपने देश में नहीं लगता इसलिए किसानों की समस्या इस देश में बड़ी महत्व की होती है। ऐसा होने के कारण उसके बारे में ठीक से विचार होना, अच्छी योजना बनाना तथा योजना कार्यान्वित होना और उसका लाभ किसानों को मिले यह बात इस देश के लिए कुल मिलाकर बहुत आवश्यक है।

इस देश की जनता ज्यादातर गांव में रहती है। इसलिए गांव तथा गांव में रहने वाले किसान को सभी बातों में प्राथमिकता देनी चाहिये। सरकार इस विषय में कुछ भी प्रयास नहीं करती है ऐसा कहना उचित नहीं होगा। लेकिन उनके सामने जो सम्पन्न देश समाज है वे ज्यादातर औद्योगिक दृष्टि से सम्पन्न है। सामने उनका ही उदाहरण होने के कारण अपने देश की संपूर्ण र्योजनाओं का विचार जब होता है तो प्राथमिकता खेती या किसानी को न मिलते हुए उद्योगों को मिलती है। जिनके ऊपर इस देश को चलाने का दायित्व है, वे इस देश के विषय में ठीक से सोचे, विदेश की चकाचौंध में फंस न जाये और वास्तव में जिस काम से इस देश का कल्याण होगा उसके तरफ अधिक ध्यान दें। इसलिए वास्तव में जिस उद्योग में ज्यादा धन और सबसे ज्यादा जन लगा है उसके बारे में पुरानी नीति ध्यान में रखते हुए भी कौन से नये प्रयोग व्यवहारिक यशस्वी हो सकते है इसका विचार होना आवश्यक है। उसके प्रयोग केवल युनिर्वसिटी की प्रयोगशाला में न हो अपितु वे खेतों तक पहुंचे।

सरकार इन योजनाओं को तशस्वी करने के लिए लाखों करोड़ों रूपये हर प्रान्त में जो खर्च करती है वह उसी काम के लिये खर्च हो जिसके लिये उसकी व्यवस्था की जाती है। ऐसे अनेक महत्व के प्रश्न इस देश में हमारे सामने है और काश्तकार इस नाते से भी हमारे सामने है। मैं कोई इस विषय का अच्छा जानकार नहीं हूँ, किन्तु ऐसा भी नहीं हूँ कि काश्तकारी के विषय में कुछ जानता ही नहीं हूँ। जैसे नेता लोग आकर भाषण देते व चले जाते हैं इतनी रवराब अवस्था मेरी नहीं है। मेरी स्वयं की भी खेती है। पिछले १२ वर्ष से मेरा जाना असम्भव है। इसके पहले मैं खेतों पर जाता था तथा काफी दिन रहता था। गांव का सबसे ज्यादा पढ़ा लिखा काश्तकार होने के कारण तथा मेरी खेती के ऊपर परिवार का भार नहीं था, इसलिए खती की जो कमाई होती थी वह खेती मेंही लगाने के कारण जो-जो नये प्रयोग कृषि विभाग में आते थे तो विभाग अधिकारी मेरे यहाँ ही पहले आते थे और मैं उनके आग्रह के अनुसार करता था। इसलिए खेती, उसकी समस्या तथा काश्तकारों की स्थिति व मजदूरों की स्थिति एवं नया क्या करने व लेने लायक है, सभी बातों से मैं परिचित हूँ। इस दृष्टि से मैंने कुछ करने का प्रयास किया है। आप से वार्तालाप करने की मेरी क्षमता है। भिन्न-भिन्न विषयों व काश्तकारी के बारें में मैं बातचीत कर सकता हूँ। बातचीत के साथ उचित क्या है तथा अनुचित क्या है विषय संबंधी पूर्ण अध्ययन व्यवहारिक रूप में मेरा नहीं हैं। इसलिए इतनी संख्या में जो काश्तकार बंधु यहाँ उपस्थित है उनके सामने भाषण देने की मेरी इच्छा नहीं है। भाषण देने के लिये निश्चित विषय निकाल करके फिर उसका उपयुक्त अध्ययन करके विचार रखने की हमारी तैयारी चाहिये, ऐसी तैयारी मेरी नहीं है। आप यदि वार्तालाप करते है कि क्या समस्या है, उसके लिये कोई रास्ता निकल सकता है क्या? इसके बारे में कुछ मेरा अनुभव है उस आधार पर कुछ कहने की क्षमता मेरे में अवश्य है। मैंने यह भी अनुभव किया है कि अपने यहाँ काश्तकारी का ढांचा जो पहले से चलता चला आया है कुछ बिगड़ गया है। यहाँ के काश्तकार बिल्कुल बुद्धू है, अज्ञानी है, उनको कुछ मालूम नहीं, मैं ऐसा नहीं मानता। हिन्दुस्थान में पहले-पहले जो वाइस-राय इंगलैंड से यहाँ आये उन्होंने यहाँ से वहां

चिट्ठी लिरवी कि हिन्दूस्थान में काश्तकारी बहुत, ही शास्त्रशुद्ध पद्धति से चलती है। उन्होंने लिरवा है यह देश पूराना है, यहाँ की संस्कृति, सभ्यता, शिक्षा-दीक्षा प्राचीन काल से चलती आई है०, अत: सहारे सभी व्यवस्थाओं के सम्बन्ध में इनके अनुभव भी बहुत पूराने है। खेत में तैयार करना, उसमें बीज कैसे बोना, सिंचाई कब करना, जमने के बाद उसमें की घास आदि निकालना, खाद देना-सभी की जानकारी यहाँ पहले से है। इस प्रकार किसानी की जानकारी का विचार किया जाय तो यह निश्चित है कि यहाँ की खेती दुनिया में सर्वश्रेष्ठ रही है। लेकिन अनेक कारणा से जैसे परतन्त्रता के कारण नये शोध न होने के कारण हम पीछे पड़ गये।

नये लोग बाहर का उदाहरण देकर बताते है कि वहां ऐसा होता है, वहां वैसा होता है फिर भी किसान अपनी पूरानी पद्यति छोड़ना पसन्द नहीं करता है। मेरा भी अनुभव है आर्थिक समस्या जब सामने आती तो नये प्रयोग करना कठिन हो जाता है। कृषि विशेषज्ञ है अपनी पढ़ाई के आधार पर नई पर्द्धात लागू करना चाहते है पर सफलता नहीं मिलती। काश्तकार को उस पद्धति पर विश्वास नहीं होता। तो वे सोचते है और कहते है कि यहाँ का किसान पिछड़ा ही रहेगा। लेकिन कुछ समय बीतने पर पढ़े-लिखे लोगों का अनुभव आता है कि जिन बातों का आग्रह उन्होंने पहले किया था वह पूरा सही नहीं है। जैसे कुछ वर्ष पहले जापानी खेती का प्रचार हुआ। लाइन से धान लगाने का आग्रह था। मेरी खेती भी धान की है। विभाग के विशेषज्ञ मेरे पास आये और प्रयोग के लिए कहे, मैंने- हाँ कहा। जब जापान की पर्द्धात से धान लगाना प्रारम्भ हुआ तो उसमें त्रुटि दिखी ९x९ पर पौधे लगाने से अन्तर अधिक दिखता था। पौधे की संख्या कम हो जाती है। विभाग वालों के ध्यान में भी आया कि यह ठीक नहीं। अब इस पद्धति का आग्रह नही है। मैंने कहा कि ९x४ लगाओं और यही ठीक। बीज के इतने प्रकार होते जा रहे है कि हर साल एक नया प्रकार आ जाता है। कौनसा अच्छा है निर्णय होने के पहले ही वह बीज पहूँच जाता है। ऐसे कई बीज आ जाते है जिनकों बीमारी शीघ्रता से लग जाती है। इतना कहा जा सकता है कि कुण प्रगति हो रही है। इसलिये जब किसी काश्तकार को ऐसा अनुभव आता है यह बीज है तथा उपज भी ठीक देता है तो,

उसका लाभ दूसरे किसानों को मिलने की व्ययस्था होने पर लाभ होगा। दूसरे किसानों की दशाओं में सुधार होगा। मेरी खेती पहले दो गांवों में थी। असुविधा के कारण एक जगह की बेच दिया। एक जगह ही अब है। मैं देखता हूँ कि नये प्रयोगों के परिणाम से खेती का स्वरूप ही बहल गया। पहले ज्वार, धान, गेंहू की खेती होती थी, अब धान, सोयाबीन व गेंहू की खेती हो रही है। सोयाबीन से दाम भी अच्छा मिल रहा है। इसलिये ऐसा कहना ऐसा है कि जो प्रयोग हुये है और अच्छे ढंग से हो। निश्चित हो जाय कि बीज निरोग है, उपज भी ठीक है तभी किसानों को दिया जाय। दवा की कम्पनियां अमेरिका, इंग्लेण्ड की है। उनके बारे में भी ऐसी आवश्यकता है कि ५ साल तक उनका प्रयोग करना, जानकारी लेना, जब ठीक हो जाय तब बाजार में बिकने के लिए देना। ऐसा करना ठीक नहीं है कि बीज दवा या खाद बिना अनुभव किये बाजार के माध्यम से काश्तकार के पास पहुंचा देना और उसका प्रयोग किसान के यहाँ हो अर्थात् लाभ-हानि वह भोगे, यह प्रक्रिया नहीं चलेगी।

काश्तकार आर्थिक दृष्टि से दुर्बल है। उसके धन की योजना बनती है। इसके माध्यम से जो धन किसान के पास पहुंचना है, वह शत-प्रतिशत किसान के हाथ में पहुंचे एसी व्यवस्था होना जरूरी है। आर्थिक योजना किसान के लिए बनती है। प्रत्येक प्रान्त का एक ही अनुभव है कि योजना सम्बंधी कर्मचारी अधिकारी के कमीशन कटते-कटते ५० प्रतिशत किसान को मिलना भी कठिन हो जाता है। यह न हो इसके लिये क्या करना पड़ेगा? एसा भी एक विचार आता है कि हमें न लिया जाय, किन्तु इस मद से जब धन आता है तो उसका अच्छा उपयोग करने की दूसरी विधि है। किसान का अच्छा संगठन बनाया जाय। इसमें ऐसा किसान न रहें जो ५-१० रूपये देकर काम कराने की आदत रखता है। इससें, कर्मचारी की भी आदत बिगड़ती है तथा रेट भी बढ़ता जाता है। किसानों का बलशाली संगठन खड़ा होता है तो अच्छे परिणाम सम्भव है। नये-नये प्रयोगों का भी लाभ होगा। एक प्रयोग कहीं लाभप्रद होगा, वही दुसरी जगह के लिये ठीक नहीं होगा इसका सही ढंग अपनाने से लाभ मिलेगा। कोई काम फेशन समान न करे। एक ने किया,

हम भी करे, यह ठीक नहीं है। गुजरात में युकिलिप्टस से किसानों को लाभ मिला। उसका इतना प्रचार हुआ कि सभी प्रान्तों में उसके पेड़ लगने लगे जबकि यह ठीक नहीं। कर्नाटक में उसका घोर विरोध हुआ। जो भी योजना आती है उसका अध्ययन किसानों को भी करना चाहिये। पहले उसका प्रयोग थोड़े खेत में करे। लाभ होने पर बढ़ाये। तो आज जो किसानो के संगठन है, वे किसानों की आवश्यकता लिये लड़ते है, जैसे बिजली, पानी, बीज, ऋण आदि। इसमें अधिकांश ऐसे है जो किसी राजनीतिक दल के लिये लाभ हेतु आन्दोलन करते है। फिर भी समस्याएं किसानोम की ही लेते है। यह सब मिलाकर यह विचार करना पड़ेगा कि काश्त-कारी की व्यवस्था में परिवर्तन कैसे आएगा। इसका ठीक से विचार होना चाहिये। इसका ठीक से विचार होता है कि नहीं, यह एक कठिन प्रश्न है।

मैं सोचता हूँ कि सरकार एक तरफ तो सीलिंग करती है और दूसरी तरफ ऋण देकर ट्रेक्टर खरीदने का प्रोत्साहन देती है। परिणाम यह है कि कितने किसान कर्जो से लदे है। हरियाणा में जानकारी मिली कि एक किसान के पास ट्रेक्टर है, इसलिये पट्टीदारी के नाते दूसरा लाया, जरूरत नहीं थी। लोग समझने लगे है कि लटकाते चलो, कर्ज दने की आवश्यकता नहीं होगी। यह ठीक नहीं है। यह आदत पड़ना पूर्ण रूप से गलत है। रचनात्मक कार्य करने की दृष्टि किसानों को मिले, यह काम किसान संगठन का लेना चाहिये। कुछ नेता है जिनका संगठन नहीं है किन्तु कोई मांग पैदा करके आन्दोलन करते है। किसान का कुछ भला होने पर ये किसानों के नेता बन जाते है। सरकार पर दबाव पड़ने पर ही वह किसानों की कठिनाई का विचार करती है, अत: कुछ मात्रा में इसका भी विचार करना आवश्यक है। निश्चित नहीं किन्तु सुना है कि अमेरिका में यदि किसी किसान के सम्मुख कोई समस्या खड़ी होती है तो फोन करने मात्र सें कृषि विभाग के कर्मचारी खेत पर पहुँच कर उसको हल करते है। हमारे मित्र प्रभाकर ठाकुर है। पहले विदेश में थे, अब सांगली में रहते है। अंगुर की खेती के जानकार है। सांगली में इस खेती का श्रेय इन्ही को है। अंगुर की खेती सम्बन्धी किसी प्रकार की

कठिनाई की सूचना मिलने पर खेत में जाते है और उसको ठीक करते है। अपने राज्य कर्मचारी भी इसी प्रकार के होने चाहिये। समस्याओ के लिए कुछ दबाव देकर हल कराना पड़ता है। मेरे गांव में बिजली आई। मैंने थोड़ा प्रयास इसके लिये किया। बिजली वालों ने बताया कि इतने हार्स पावर की व्यवस्था पर सम्भव होगा। बात करने पर लोग तैयार हुये। एक मोटर आई और उसका कनेक्शन मिल गया। दूसरी मोटर वाले को कनेक्शन ही नहीं दिया। २५ दिन बीत गये। मैंने हेडक्वाटर पर वार्ता किया कि पहले एक को शीघ्रता से मिल मई, दूसरे को मिलने में कौन-सी कठिनाई है। जानकारी मिली कि कुछ अतिरिक्त धन लेकर देते है। फिर जिला मुख्यालय पर गया। इंजीनियर से वार्ता कर सब बात बतायी और यह भी कहा कि लाइन वालों की आदत है कि कुछ धन लेते है। उसने भी सीधा जवाब दिया कि मोटर चलने पर किसान को तो लाभ मिलने वाला ही है, यदि कर्मचारी को भी ५० रुपये मिल गये तो कौनसी बात है? फिर मैंने एक प्रार्थना-पत्र पैड पर सब हाल लिखकर उसके सामने ही अपना हस्ताक्षर करके दिया। ज्यों ही उसने नाम देखा वह समझ गया। उसने कहा चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। १-२ दिन में हो जायेगा। अगले दिन ही बिजली आ गई। परन्तु हम भी सदैव निश्चय ले कि जल्दबाजी से काम पूरा न करायें। प्रयास करें, ग्राम पंचायत यदि ठीक है। मिलकर सहयोग से काम होता है तो उसके द्वारा भी ऐसे काम हल हो जाते है।

ग्राम से लेकर ऊपर तक यदि सुविधा से सब काम होने की कल्पना है तो आवश्यक हैं कि किसान संगठन बलशाली बने। देश में अन्य किसान संगठन राजनीतिक दलों को लाभ पहुंचाने के लिये बने है तो फिर एक संगठन ऐसा बनाये जो किसाकों का हित ही शद्ध रूप से विचार करे। मिलकर अपनी मांगों को रखे। पहले सब समस्याओं का अध्ययन करें। फिर निर्णय लें। फिर मांग करने का जो उचित तरीका है, उसे अपनावें। उसके पीछे कुछ दिन लगे रहे। जब उचित तरीके से मांग करने के बाद भी सफलता न मिले तो घेराव, धरना प्रदर्शन करें। सीधे-सीधे प्रथम ही घेराव या धरना करने से दोनों ओर की आदत बिगड़ती है। आन्दोलन यह अन्तिम प्रयास है। किसान संघ के सभी कार्यकर्ताओं में यदि आदत

लगती है कि सभी कदम सोच-विचार कर उठायें है तो आगे चलकर इस पद्धति से ही काम होगा। देश के लोगों की आदत में भी सुधार होगा। बहुत से लोगों ने स्वभाव बना लिया है कि जब तक हल्ला-दंगा होकर गोली नहीं चलती, कोई मांग पूरी नहीं होगी, यह धारणा ठीक नही है। देर लगेगी किन्तु हमने अपनी पद्धति से यदि काम लिया तो काम भी पूरा होगा तथा गलत अभ्यास खत्म होंगे। यही पद्धति है अपने काम करने की।

प० पू० बाला साहब देवरस

शंका-समाधान

श्री दामोदर राव (आंध्र प्रदेश अध्यक्ष)

प्रश्न-आपके मन में यह विचार कैसे आया है, क्यों आया है कि किसानों का संगठन खड़ा किया जाय। इसके बारे में मैं जानकारी चाहता हूँ।

उत्तर-किसान बंधु अपने राष्ट्र के घटक हैं, नागरिक है। भिन्न प्रकार से काम करते होंगे। जिस क्षेत्र में काम करते हैं उस क्षेत्र में भी कछु प्रश्न कुछ समस्याएं निर्माण हो रही है। तो स्वाभाविक रूप से ही जिनके समान प्रश्न होते है और किसी कारण कहीं भी एक साथ बैठते है तो अनेक विषयों पर चर्चा चलती हैं किन्तु ज्यादा चर्चा जो विषय उनके लिए बड़ा महत्व का होता है, उसी के बारे में चर्चा चलती है। जैसे अगर पाठशाला में पढ़ाने वाले शिक्षक एकत्र आते है तो काई न कोई विषय निकलता है इसी प्रकार काश्तकार बंधु भी जब कभी एकत्र आते है तो जैसे यह विषय निकलता है कि इस वर्षा नहीं हुई। इस साल सूखा है, इस साल बाढ़ है तो इसी प्रकार और कौन-कौनसी समस्याएं निर्माण होती है, सरकार की नीति क्या होती है, अनाज को आज-कल जिस भाव से हम बेचते है, यह ठीक है क्या? उससे हमारी खेती ठीक चलकर हमारा घर भी ठीक चल सकता है क्या? इसी प्रकार तरह-तरह से स्वाभाविक रीति से काश्तकार बंन्धूओं के एकत्र होने पर विषय निकलते है और फिर कोई न काई सुझाव देता है कि भाई इन विषयों से अपना सम्बन्ध है और हम अगर ठीक से देश के हित का ध्यान में रखकर एकत्र आकर विचार करते है, तो शायद यह उचित होगा। ऐसा विचार चलते रहने के कारण किसी न किसी प्रान्त में कार्य शुरू हो जाता है, फिर वह खबर अन्य प्रान्तों में पहुंचती है तो उन्हें लगता है कि हमारे प्रान्त में भी ऐसा कार्य क्यों नहीं प्रारम्भ हुआ। अपने बंधुंओं ने किसी गांव में ऐसा संगठन के माध्यम से किया और किसान संगठन न होते हुए भी यदि किसी समस्या को हल कर लिया तो उसका भी प्रभाव होता है, ध्यान में आता है फिर चार लोग, दस लोग एकत्र आकर कुछ मांग रखते है, ठीक से रखते है जो मनवाई जा सकती है। ऐसे जब तरह-तरह से अनुभव आते है और काश्तकार भी, जिनकी सबसे अधिक देश में जनसंख्या है इसलिये उसकी समस्या एक

प्रकार से सारे देश की समस्या है। यह स्वाभाविक ही सबके मन में आता है तथा इसी प्रकार सब काम शरू होते है। इसी प्रकार किसानों का संगठन बनने लगा तथा एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त में बढ़ता गया तथा भारतीय किसान संघ का जन्म स्वाभाविक रूप से हुआ। यही एक कारण है कि मन में विचार आया कि किसानों की जो समस्या है, उसका भी व्यावहारिक ढंग से ठीक ढंग से विचार करते हुये उसके बारे में हम कछु कर सकते है तो करना किसानों के लिये याने देश के लिये उचित है।

श्री सुधर सिंह (अध्यक्ष, मध्य प्रदेश)

प्रश्न - मेरा प्रश्न है कि सरकार ने किसानों के लिए केवल १८ एकड़ सिंचित भूमि की सीमा बांधी है, जबकि अन्य वर्गों की आमदनी पर कोई प्रतिबन्ध नहीं लगाया है। यह क्या सत्तारूढ़ दल का किसानों के साथ अन्याय नहीं है?

उत्तर - भाई इसके लिये सत्तारूढ़ दल को ही दोषी कैसे ठहराया जाय। ऐसा हुआ कि देश स्वाधीन होने के पहले अनेक विषयों पर देश में भिन्न प्रकार से चर्चा चलती थी। चर्चा में यह भी एक चर्चा चलती थी। जमींदार भिन्न-भिन्न प्रान्तों में अलग-अलग अर्थ में प्रयोग किया जात है। सब जगह एक ही अर्थ नहीं हैं। किसी-कसी प्रान्त में जमीन रखने वाला किसान तथा उसमें खेती करता जमीनदार कहा जाता है। किसी के पास बहुत खेत है किन्तु खेती दूसरों से करवाता, वह भी जमीनदार कहा जाता है। यहाँ परस्पर एक दूसरे से पूछ कर हम लोग जानकारी कर सकते है। देश स्वाधीन होने के पहले काश्तकारों के सबल वर्ग का व्यवहार छोटे काश्तकारों तथा मजदूरों के साथ अच्छा नहीं था। उनकी रोजी-रोटी का भी ध्यान नहीं किया जाता था। अपनी कमाई की ही केवल चिन्ता करता था। इसके प्रकार भी प्रान्तों में अलग-अलग थे। जैसे मध्य प्रदेश व महाराष्ट्र में था कि सरकार को जितनी लगान देनी रहती थी, वह अपने घर से दे देता था। फिर काश्तकारों से वसूल करता था। अगर वह ठीक से वसूल नहीं हुआ तो वह कोर्ट में जाता था तथा उनकी जमीन पर कब्जा कर लेता था। इन सभी जमीनदारों के लिये देश स्वाधीन होने के पूर्व यह चर्चा चलती थी कि ५००, ७००, एकड़ या अधिक जमीन

कब्जा करके रखे है किन्तु खेती ठीक से नहीं करते और अन्याय भी करते है। इस वायुमण्डल में देश स्वाधीन हुआ, जब एसी चर्चा सारे देश में चलती थी। फिर स्वाभाविक रीति से ही यह विषय राज्य- कर्ताओं सामने आया। कुछ इमानदारी से आये तथा कुछ लोकप्रियता लेने के चक्कर में आये। कुछ नासमझी के कारण भी आये और दो शब्द प्रयोग अधिक चले। टिनेन्सी व सीलींग, शब्द प्रयोग मध्य प्रदेश व महाराष्ट्र में हुआ। तात्पर्य यह कि किसी के पास जमीन ज्यादा है, स्वयं खेती नहीं करता तथा कम जमीन वालो को या भूमिहीनों को जमीन देता है। इसमें यह विचार आया कि अधिक जमीन होने के कारण खाद, पानी, बीज का प्रबन्ध नहीं होता, यदि कम जमीन होगी तो व्यवस्था ठीक रहेगी और उपज भी ठीक होगी। सीलिंग की चर्चा स्वाधीनता के पहले ही चली थी। कांग्रेस के पुराने साहित्य में हमें देखने को मिलेगा कि इस प्रकार का वचन उन्हौने सबको दिया है। इसलिये स्वाधीनता के बाद स्वाभाविक रीति से यह चर्चा चली और उस समय कुछ कम्युनिज्म की भी हवा थी

ऐसी और भी बातें थी जिसके कारन सीलींग की चर्चा चली।कास्तकारी या खेती की रचना किसी निश्चित (पैटर्न) परम्परा पर विकसित नहीं हुई।

नागपुर में कई कास्तकार एसे है, जिनके पास १००० या १५०० एकड़ भूमि है। कुछ सहकारि कानून के मुताबिक है,तो कुछ लैण्ड रैवेन्यू के मुताबिक है। जब निश्चित परम्परा नहीं विकसित हुई तो एसा विचार आना भी ठीक ही है। मेरी भी धारणा एसी है कि टीनेन्सी बन्द करना ही उचित था। खेती स्वयं करना ही उचित है। मेरी स्वयं की खेती में १०० साल के अन्दर टीनेन्सी रही ही नहीं। हमारे दादा तथा पिता जी राज्य कर्मचारी थे, किन्तु नौकरी व स्थायी बैल जोड़ीयां रख कर खेती की व्यवस्था करते थे।

टीनेन्सी ठीक नही है। उससे खेती की तरफ ध्यान देना सम्भव नहीं है। किन्तु सीलींग के बारे में मेरा विचार भिन्न है। जेसा आपने कहा कि सीलिंग का विचार करते समय कितना भी विचार करे , उद्योग चलता है, कार-खाना चलता है, उस

पर कोई पाबन्दी नहीं हैं। कास्तकारों के लिये सीलिंग क्यों? इस पर काफी चर्चा हुई, लकिन नेता लोग पूर्ण विचार नहीं किये। काश्तकारी ठीक हो, यह सोचना ठीक है, क्योंकि देश के लिये उपयुक्त मात्रा में अनाज आवश्यक है। निर्णय के समय लरवपती या करोड़पती सामने न ररवें, किन्तु यह तो निश्चित हो कि आखिर काश्तकार या व्यक्ति का जीवन स्तर कैसा हो ? बिना यह निश्चित किये सीलिंग करना उचित नहीं। मैं समझता हूँ कि काश्तकार का जीवन स्तर निश्चित करते समय, जिसको सब लोग मध्यम वर्गीय बालते है उसके बराबर निश्चित होना चाहिए। सीलिंग का विचार इस विधि से न करते हुए और न ही काश्तकार के उपयुक्त जीवन स्तर व्यय की चिन्ता किये, भूमि सीमा बांधी गई। इस पर विनोबा जी के भूमिदान अभियान का भी प्रभाव हुआ है। भूमिदान अभियान का भी सर्वांग विचार नहीं हुआ था। सब लोगों को यह जानना चाहिये कि हिन्दुस्थान की जनसंख्या इतनी है कि सबकी खेती योग्य जमीन दे पाना सम्भव नहीं है। कुल मिला- कर यही कह सकते है कि यह सारा विचार सोच समझकर नहीं हुआ। प्रान्त-प्रान्त में जमीन ,किस्म तथा रकबा ध्यान में ररवकर या सिंचित ,असिंचित भूमि का विचार कर सीलींग हुई है, किन्तु यह नहीं सोचा गया कि इसमें काश्तकार को आय कितनी होगी जिससे वह मध्यवर्गीय जीवन जीने के लायक बने। मैं समझता हूँ कि किसी न किसी किसान संगठन को यह मांग फिर से उठानी चाहिये कि सीलींग से देश को कौनसा लाभ हो रहा है ? अनाज की पैदावार कितनी बढ़ी ?तथा कास्तकार का जीवन स्तर कितना ऊपर गया।

इस माग को एसा नहीं समझना चाहिए कि यह निर्णय सदा सर्वदा के लिए हो गया है। सरकार अपनी आर्थिक नीति में तरह- तरह के फर्क कर रही है, उसके कारण सरकार पर आक्षेप हो रहे हैं। सरकार पर समाजवाद छोड़कर पूंजीवादी होने का आरोप हो रहा है। अच्छे व जानकार किसान इस विषय का ठीक से अध्ययन करें। कितना धन मध्यम वर्गीय जीवन के लिए आवश्यक होगा तथा वह, कितनी व कैसी भूमि से प्राप्त होगा। इसका ठीक विचार कर पुनः इस

मांग को उठावे। मैं समझता हूँ कि यह आवश्यक है। इस पर पुन: विचार होना सम्भव है।

मदन मोहन पाण्डेय, बिहार उपमन्त्री

प्रश्न-भारतीय किसान संघ का संगठन कार्य योग्य रीति से चलाने के लिए पूर्णकालिक कार्यकर्ता कैसे निकाले जाये ?

उत्तर- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में सभी प्रकार की रूचि प्रकृति के लोग आते हें। सबके गुण भी अलग होते हैं। उनके इस स्वभाव का ध्यान कर उपयोग करने से योग्य कार्य होता है। मान लो कोई एसा स्वयंसेवक है जो खेती या किसानी के काम में अधिक रूचि रखता है, तथा उसका आग्रह है,कि इस क्षेत्र में उसे अधिक सफलता सम्भव है। यह तो हमारा काम ही है, कि अपने साथियों के गुणों का हम विचार कर और उसकी योजना करें। जैसे मानो कोई शिक्षा क्षेत्र में रुची रखता है, तो उसको शिक्षा क्षेत्र में   जाने को बोलते हैं। यह बात निश्चित है कि अपनी रुची का कार्य करने में कार्यकर्ता को अधिक सफलता मिलती है। कोई एसा साथी है जो गांव की समस्याओ से परिचित है ,तथा उनको हल करने - कराने का भी प्रयास करता है,तो उसका इस कार्य में अधिक अच्छा उपयोग सम्भव है। मैं स्वयं का अनुभव बताता हूँ ,जब मैं खेती पर बरा- बर जाता था, मेरे पास खेती करने के लिये जितने प्रकार के ओजार होते है ,वह सब मेरे पास थे और अच्छे थे।गांव के किसान मेरे पास आकर मांगते थे , मैं   उन्हे देता था ,मेने पशुऔं की बीमारी में दवा करने के लिये अपना स्वयं का चिकित्सालय बनाया है। और जब नागपुर से गांव जाता था, तो आवश्यकता अनुसार दवा लेकर जाता था। लोगों को पता भी था कि मेरे पास पशुऔ की सभी प्रकार की दवा रहती है।लोग मेरे पास आते थे ,मेने किसी को मना नहीं किया। क्योंकि मेरी रुची काश्तकारी में है। आपमें में भी एसे लोग होंगे जिनको रुची के कारण बाकी को सहायता करने की इच्छा रहती है। एसे कार्यकर्ता भिन्न भिन्न गांव में मिलते है, और कहते है देखो मेरा लड़का काश्तकारी सम्भाल लेता है।

मुझे समय है, मै पूरा समय कार्य करूंगा। एसे लोगों को किसान संगठन में लगाना उपयुक्त रहता है। आजकल कितने ही लोग अवकाश प्राप्त करते है,और आकर कहते है कि मैं खाली हूँ, मेरी रुची के लायक मैं पूरे समय कार्य करूंगा। बहुत से मिलते हैं जो किसानी, लायक होते है उन्हे इस क्षेत्र में लगाना उपयुक्त रहता है।

कुबैरदत्त शास्त्री, अध्यक्ष र्हारयाणा प्रदेश

प्रश्न-मुझे दो प्रश्न महामान्य सर-संघचालक जी से करना है। (अ) हमारे हरियाणा में कृषक मज़दूर वाहिनी का अध्यक्ष भी रहता है। भारतीय किसान यूनियन का अध्यक्ष भी वहीं है , वे पूछते है कि आप अपने को कैसे सिद्ध करगें कि आप राजनतिक नहीं है ?

(ब) काम बढ़ने के बाद यदि किसान संघ ने भी राजनीति में भाग लिया तो इसे इस समय कैसे नकारा जाय, माने लोगो को केसे विश्वास दिलाया जाय कि यह कभी राजनीति में भाग नहीं लेगा।

उत्तर - भाई इसमें प्रमाण देने की कोई आवश्यकता नहीं हैं। हमसे जो सम्पर्क में आता है और सम्पर्क के द्वारा जो उन्हे अनुभव आता है वही प्रमाण प्रस्तूत करता है। हम काम करते है। काम में ही सबसे सम्पर्क आता है और सबको स्वाभाविक अनुभव में आ जाता है। ऐसा प्रश्न हम उनसे भी पूछ सकते है। प्रमाण देने के चक्कर में न पड़ों। वाद-विवाद न करो। ऐसे समय यह बताओ हम काम करते है कछु समय में हम परस्पर एक दूसरे को समझ। आप हमें देखे कि हमारे कार्य करनें की क्या पद्धति है, कौन दिशा है? इसी पर से आप को प्रमाण मिल जाएगा। दूसरा कोई तरीका नहीं है। वाद विवाद या प्रमाण के चक्कर के चक्कर में पड़ने से निरर्थक झंझट खड़ी होती है। अपने कार्य करने के ढंग से उन्हे अनुभव करा दीजिए कि हम जो कह रहे वह सत्य है।

बद्रीलाल सोनी प्रदेश संगठन मंत्री मध्य प्रदेश

प्रश्न-यह अन्तरराष्ट्रीय युवा वर्ष है। अपने देश से कुछ लोग रूस, गये थे वहां क्या करके आये सबको पता है। अपने देश में कई संगठन युवकों को ठीक ढ़ंग से कार्य करने की दिशा देने का प्रयत्न कर रहे है।। भारतीय किसान संघ एक नया संगठन है लेकिन इस समय कॉलेजों से निकलने वाले जो गांव के युवक है, ऐसे कौनसे कार्यक्रम की रचना हम करें कि कि युवकों की इस बड़ी शक्ति को ठीक काम में लगा सके ?

उत्तर - यह प्रश्न तो सभी के लिए है केवल किसान संघ के लिए ही नहीं है। युवक खराब होना या अच्छा होना समाज की हवा कैसी रहती है इसके ऊपर निर्भर रहता है। युवक भी समाज का अंग है। राजनीतिक -नेतृत्व अगर ठीक नहीं है, शासन- तन्त्र में काम करने वाले ठीक नहीं है, कॉलेज स्कूल में पढ़ाने वाले शिक्षक बिल्कुल सामान्य है, घर में माता पिता अच्छे प्रकार का वायुमंडल नहीं रखते तो ऐसे वायुमण्डल में पलकर युवक कैसे बनेंगे? केवल युवकों को दोष देना उपयुक्त नहीं है। कुल मिलाकर समाज का वायुमण्डल कैसा रहता है इसके ऊपर यह निर्भर है। समाज का वायुमंडल अच्छा रहे यह तुम्हारा हमारा सबका दायित्व है। आपका छोटा बच्चा है। जब वह खेलने लगता है कोई दोस्त उससे दोस्ती करता है, तो कभी आप सोचते है कि लड़के के दोस्त कैसे है? किस स्वभाव के है ? अगर आपके ध्यान में आता है कि लड़के के दोस्त अच्छे नहीं है। तो अच्छे दोस्त मिले इसका प्रयास आपको करना होगा। बहुत सी पत्रिकायें या पत्र निकलते है? वह ज्यादातर अनैतिक भाव प्रेरित करते हैं। बड़े लोग लाकर घर में रखते है। अपने बच्चे कौन सी पत्रिका पढ़ते हैं। इस पर क्या ध्यान देते हो? यदि पत्रिका ठीक नहीं है तो लड़के को सुझाव देकर सिखाते हो? इस प्रकार लड़के बचपन से ही बनते रहते हैं इसके जिम्मेदार हम सभी है। यदि उनकी भाषा असभ्य है। घर में कोई बुजुर्ग आता है, जैसे हम छोटे थे तो ऐसे को तुरन्त उठकर नमस्कार करते थे, आज एसी स्थिति है कि किसी के आने पर पेर पसारे वैसे ही पड़ा रहता है। और यदि घर में उसे यह व्यवहार बताया नहीं जाता तो किसका दोष है? ऐसे छोटी बड़ी सारी

बातें मिलकर आज का यह स्वरूप बना है। हम सब मिलकर इसे ठीक करने का प्रयत्न करें केवल युवक को ही दोष न दे। आप स्वयं सिनेमा देखने जाते है और गालियां देते हो कि देखो सिनेमा देखने से लड़के बिगड़ते है। अपने बच्चों को साथ लेकर मां बाप गन्दी फिल्मे अगर देखते है और बच्चों के ऊपर उसका बुरा प्रभाव पड़ता है तो फिर कौन कारणीभूत है? तो इसलिए आज का युवक जैसा कुछ है केवल उसे ही दोष देकर नहीं चलेगा। समाज के सभी लोग, नेता, लेखक, साहित्यकार आदि जब सभी प्रयत्न करते है तभी बच्चे ठीक बनते है। अपने प्रवास क्रम में कई जगह मुझे स्कूल कॉलेज में बुलाया जाता है। स्कूल में बैठने के पश्चात् तुरन्त स्कूल स्कूल का अन्तर ध्यान में आ जाता है। एक स्कूल के बच्चे बहुत ही सुसंस्कारित है। बड़े ही शान्तचित है यह ध्यान में आ जाता है। और दूसरे स्कूल में दूसरा अनुभव आता है कि इसमें सब उल्टा है। सारे समाज की हवा बदलेगी तब सुधार होगा। सारी शुरुआत घर से होती है। आखिर देखों तुम्हारे गांव में काश्तकार है। काश्तकार युवक है। घर की स्थिति भी अच्छी है। अनुशासन भी ठीक है। बड़ी सुबह काश्तकार उठता है और खेत में पहुंच जाता है। रोटी भी खेत पर खाता है सीजन के दिन में पूरे दिन खेत पर ही रह जाता है रात में वापस आता है। ऐसे घर में जो लड़का होगा स्वाभाविक ठीक बनेगा। खेत जाते समय लड़के को भी कभी कभी साथ ले जाते है। लड़का ठीक ही बनेगा। जो लोग लड़के को केवल लाड़-प्यार से रखते है। लड़के के समान अच्छे कपड़े पहनाकर रखते है। खेत पर कभी ले ही नहीं जाते। इस तरह से लड़के पर अच्छे संस्कार नहीं होंगे। बड़े होने पर भी वह ऐसा ही रहेगा। आज के यह सभी दोष समाज की स्थिति के कारण है। समाज की हवा ठीक करने का प्रयास ही हम सब लोग मिलकर करे। यह बहुत आवश्यक है।

आशीर्वचन

प० पू० सर संघचालक मा० बाला साहब देवरस

मैने पहले ही कह दिया है आपको इस दृष्टि से मार्ग दर्शन करने की मेरी क्षमता नहीं है यद्यपि कई वर्ष तक प्रत्यक्ष गांव में रहकर खेती के जितने भी पहलू होते है उनकी ओर ध्यान देकर काफी कुछ मैंने अध्ययन किया है। फिर भी पूरी क्षमता प्राप्त नहीं होती। बहुत बार आज दिल्ली आदि में काश्तकारों के सम्मेलन होते है वहां बड़े-बड़े लोग जाकर भाषण देते है। आपने टी० वी० व समाचार पत्र में देखा होगा। तो साधारणतया जो वर्ग? बैठा रहता है उस समय उनके कपड़े देखने के बाद, इसमें से कोई भी काश्तकार होगा, ऐसा नहीं लगता। अब इनके सामने यह सारी चर्चा चलती है। मैं एसी आशा करता हूँ कि किसान संघ की स्थिति ऐसी नहीं है। यहाँ जो बन्धु आए है उनका स्वयं प्रत्यक्ष का अनुभव है। हो सकता है कि ये स्वयं खेत में उतर कर हल नहीं जोतते होंगे लेकिन गांव में रहते है, विषय का अध्ययन करते हैं सब काम ठीक से अपनी आखों के सामने ही करा लेते है और जिनका जीवन काश्तकारी के ऊपर ही निर्भर है ऐसे ही बन्धु यहाँ उपस्थित है एसी मेरी आशा है। इस समय यदि कुछ कम मात्रा में यह हुआ होगा तो अगले सम्मेलन में इसे अवश्य पूर्ण करे।

काश्तकारों की जितनी समस्यायें हैं मैं उससे सहमत हूँ। हमको विचार करना चाहिए कि यह कैसे ठीक हो। चावल का, गेहूँ का, या किसी भी उपज का मूल्य ठीक से नहीं मिलता है जो मिलता है उसको भी सरकार ठीक से बताती नहीं है। काश्तकार का खर्चा जितना लगा है वह काटकर थोड़ा भी लाभ उसको मिल जाय और जिससे वह अपने परिवार का पोषण कर सके तो भी उसे कुछ राहत मिल कहती है। विचार करने में ही गलती होती है। प्रारम्भ में ही यह सोचना चाहिए कि

किसान का जीवन स्तर ठीक रखने के लिए कम से कम कितना धन अपेक्षित है? उतनी व्यवस्था आवश्यक है। जैसा देखा जाता है कि खेती में सबसे बुद्धु लड़का ही सामान्यतया टिकता है। होशियार लड़के नौकरी के चक्कर में जाते है। एसा क्यों है? इसका कारण ऐसा है कि खेती में रहकर ठीक जीवन चलाने के लिए आमदनी नहीं होती। इसे ठीक करना होगा। इंजीनियर डॉक्टर आदि कोई गांव में नहीं रहना चाहता यह निन्दा की बात नहीं है। गांव की स्थिति ही ऐसी बन गई है। सरकारी योजनायें जो बनती है उसमें भी सही विचार नहीं होता। गांव की आश्यकता समझकर योजनायें बने सरकार को भी ऐसा सोचना चाहिऐ किन्तु एसी परिस्थिति बन गई है कि बिना कुछ दबाव उत्पन्न किये सरकार भी कुछ नहीं सोचती है। इसलिए सरकार को सोचने के लिए संगठन द्वारा प्रयास आवश्यक है। संगठित प्रयास से ही सुधार सम्भव है। एक बात यह भी सही है कि किसानों का अखिल भारतीय संगठन आज तक कोई बना ही नहीं। बिहार में स्वामी सहजानन्द ने कुछ प्रयास किया था उसमें कुछ सफलता भी मिली थी किन्तु वह भी नहीं चला। इसका कारण एसा भी है कि किसानो का संगठन बहुत कठिन भी है। बाकी लोंगो का संगठन आसान है। वे कई स्थानों से आकर एक जगह इकट्ठा होते है और किसान एक जगह से जाकर अनेक जगह फैल जाता है। परन्तु फिर भी संगठन के लिए प्रयास करना ही है। बिना दबाव के कुछ नहीं होता यह सत्य है फिर भी संघर्ष ही एक मेव मार्ग नहीं है। बहुत से नेता है जो संगठन नहीं बनाये है। ४, ६ लोग है। प्रचार तथा अखबारों में वक्तव्य दे देकर अपनी प्रतिमा खड़ी किये है। कोई न कोई मांग लेकर स्थान बदल बदल कर आन्दोलन करते है, संघर्ष करते है, हवा बनाते है कभी कुछ तात्कालिक सफलता भी प्राप्त कर लेते है। यह स्थायी रचना नहीं है। इससे कुछ भी व्यवस्था का निर्माण नहीं होगा।

किसान संघ के कार्यकर्ता समस्याओं की जानकारी करें, उसका ठीक प्रकार से अध्ययन करें, उसका प्रचार करें, सारे क्षेत्र में ऐसी हवा पेदा करे कि जिससे

किसान समुदाय का असन्तोष जाहिर हो। फिर भी समस्या का हल नहीं होता है तो धरना, प्रदर्शन या संघर्ष करे। किन्तु संघर्ष यह आखिरी बात है।

भारतीय किसान संघ का प्रत्येक कार्यकर्ता सतत् प्रयासरत हो। योजना बनाकर गांवों में जाये। वहां रात्री में ठहरे। गांव वालों को जुटाये उनकी बात सुने अपनी बात कहें। अपने बल से अपना भला होगा उनकी तैयारी करावे। बार-बार ऐसा करने से किसान समझने लगेगा। फिर संगठन खड़ा होगा। हम सदेव ध्यान रखे किसान का स्तर उठने से ही देश का स्तर ऊंचा होगा। हमारा ध्यान बराबर इसी ओर रहे। आशा है कि हम सभी कार्यकर्ता मिलकर भारतीय किसान संघ के जरिये किसान संघ संगठन भी बना लेंगे।

मार्ग-दर्शन

मा० रज्जू भैया

उपस्थित किसान संघ के आधिकारीगण किसान संघ का जब प्रारम्भ हुआ तो भाटिया जी के गांव में पहली बैठक हुई और चुंकि वह उत्तर प्रदेश में थी इसलिए मेरे कार्य क्षेत्र का अंग होने के कारण मैं उसमें उपस्थित रहा। इस प्रकार किसान संघ से मेरा परिचय व सम्बन्ध १९७४ से ही है। उसके बाद किसान संघ की गतिविधियों को मैं सुनता तो रहा तथा समाचार भी लेत रहे। किसान संघ के अधिवेनेशन कभी कोटा में है तों कभी वाराणसी में है, यह जानकारी होती थी, किन्तु कभी जाना सम्भव नहीं हुआ क्योंकि अपने कार्यक्रमों के साथ किसान संघ की योजनाओं का समन्वय नहीं हो पाया। गत जुलाई की केन्द्रीय बैठक में जब हम सब कार्यकर्ता मिले तो मा० ठेंगड़ी जी ने उसी समय कहा कि सितम्बर में एक बैठक सुल्तानपुर रख रहे है उसमें आप आऐं तो अच्छा रहेगा मैंने उनसे कहा कि आप पूजनीय सर संघचालक जी से कहिये वे एक वास्तविक किसान है, उनकी किसानी में रुची भी है, खेती भी है तथा पहले जाकर वहां रहकर वे खेती कराते भी थे जब सर संघचालक नहीं थे मैं तो खेती देखने वाला किसान या रुची लेने वाला हूँ ऐसा कह सकते है। मेरे बाबा जी तथा दादा जी किसानी करते थे। मेरे पिता जी सिंचाई विभाग में थे और किसानों से सम्बन्ध होने के कारण जब वे किसानों के बीच जाते थे तो मैं भी उनके साथ जाता था बातें सुनता रहता था। मैं कभी कभी गांव जाता हूँ तो देख लेता हूँ कि कैसे खेती होती है। देश में ८० प्रतिशत आज भी किसान है। जैसा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में कहते है कि बाकी लोगों की चिन्ता मत करो यदि हिन्दु ठीक हो गया तो देश ठीक हो गया अपने आपको ठीक प्रकार से संगठित कर लिया तो देश में समस्यायें अपने आप ठीक हो जायेगी इसी प्रकार हम कह सकते है कि ८० प्रतिशत किसान जो ५ लाख गांवों में रहता है। संगठित होकर अपनी समस्याओं को हल कर सका तो देश की समस्याओं का समाधान हो जायेगा। समाधान कोई बाहरी व्यक्ति आकर नहीं करता स्वयं अपनी समस्याओं का समाधान करना पड़ेगा। और इस दृष्टि से किसानों का संगठन एवं उसकी सभी प्रकार की व्यापकता

स्वरूप बड़ा आवश्यक है। बड़े कठिन स्थान में किसान संघ का सम्मेलन किया है। पहले सुल्तानपुर बताया गया होगा तो यह सुल्तानपुर से ओर अन्दर १५ किलोमिटर दूर है। मैं यहाँ पर विभाग प्रचारक रह चुका हूँ। धम्मोर के प्रधानाचार्य श्री वंशराज सिंह इलाहाबाद में पढ़े हैं मेंरा उनका सम्बन्ध बहुत पहले से है विद्यालय में भी मैं स्थान के लिए आ चुका हूँ। परन्तु मैं समझता हूँ कि संगठन की पहली खूबी कुछ मात्रा में आ गयी है इतने कठिन स्थान पर तथा रेडियों व टेलिविजन पर वर्षा की सूचना होने पर भी कि सुल्तानपुर बिल्कुल डूबा हुआ है, अमेठी भी बिल्कुल करीब बगल में है, कैसे वहां कोई जायेगा? कोई वैसा साधारण संगठन होता तो मैं समझता हूँ कि यहाँ पर २५ लोगों का उपस्थित होना मुश्किल होता। मैं पूछ रहा था तो पता चला कि ४०० के ऊपर संख्या पहुंच चुकी है सब प्रकार से रास्ते बंद, कष्ट कठिनाइयों के बीच सभी ट्रेने एवं यातायात अस्त व्यस्त हैं तो भी संख्या पहुंची, तो पता चलता है कि संगठन में कुछ जान हैं, दम है। संगठन के लोग जब कट्टर होते है तभी संगठन अच्छा चलता है। विचार किया जाए तो किसान की समस्याओं का तथा उन समस्याओं से जुझने का काम किसान संगठन का है तो ध्यान में आता है कि कोई भी भाग नहीं लेंगे तो कोई भी काम बिगड़ जाता है। जैसे कि हम सब प्रकार के क्षमतावान एसे लोग भाग लेते है। अच्छे लोग भाग लेंगे तो कोई भी कार्य अच्छा हो जाता है। अच्छे लोग भाग नहीं लेंगे तो काई भी काम बिगड़ जाता है। जैसे कि हम लोग अनुभव करते कि समाज के बड़े श्रेष्ठ लोग, बड़े विद्वान लोग, अच्छे-अच्छे काम छोड़कर किसी समय अपने देश की राजनीति में भाग लेते थे। कहीं सरदार पटले थे, कहीं राज गोपालाचार्य थे, कहीं गान्धी जी थे, कहीं सुभाष थे, कहीं अरविंद थे, तो कितना ऊंचा स्तर राजनीति का उठ गया था? और आज स्थिति एसी है कि जो योग्य आदमी है, राजनीति में नहीं जाना चाहता है, वह सोचता है कि सर्विसेज में जायेंगे, वकील बनेंगे, डाक्टर बनेंगे। राजनीति में जिस स्तर के लोग जा रहे है, आज उसी के कारण राजनीति गिरी है। इसलिए अगर किसानों के संगठन और किसानों के कार्यों को ठीक करना है तो अच्छे लोग आने चाहिए। आज तो अच्छे व साधारण लोग पढ़ने-लिखने के बाद किसानी करने के लिए प्रस्तूत नहीं होते इस क्षेत्र में आना नहीं चाहते। थोड़ा सा पढ़-लिख जाने के बाद जो मेधावी है, जो कुशाग्र बुद्धि का है, पढ़ने के बाद किसानी करने की बात सोचता ही नही। एक बात हमें यह करनी पड़ेगी कि मेधावी व्यकि्त, कुशाग्र व्यकि्त, बुद्धिमान व्यक्ति कैसे इस क्षेत्र में

आये? प्रयाग में बहुत प्रसिद्ध सन्त है प्रभुदत्त ब्रह्मचारी। मैं उनसे एक बार पूछा कि महराज जी मुझे यह बताइये इतनी श्रेष्ठ भाषा है संस्कृत, इतना साहित्य है उसके अन्दर, इतनी जान है, उसके अन्दर और आज संस्कृत की इतनी दुर्दशा क्यो है? आज सभी भाषा की दशा अच्छी है, संस्कृत भाषा की दशा खराब है। संस्कृत विद्यालय के अन्दर जो पंडित होते है उनकी जरा हालत देखिये, आर्थिक दृष्टि से तथा अन्य दृष्टियों से भी। बाकी की जगह भी संस्कृत का ज्ञाता हो तो उसकी कोई प्रतिष्ठा नहीं है आज। तो मुझसे कहने लगे कि भाई अच्छे लोग संस्कृत पढ़ेंगे नहीं तो संस्कृत की अवस्था कैसे सुधरेगी? आज जो संस्कृत का पंडित भी है उसका लड़का अगर होशिमार है, मेडिकल में है और जो दो नम्बर का और जरा होशियार नहीं है तो उसको एल० टी० या बी० एड० कराकर टीचर बना देगा। और जो बिल्कुल बुद्धु है, जिसको कुछ नहीं आता है, संस्कृत पढ़ायेगा तो कम से कम किसी घर जाकर पाठ कर देगा, सत्यनारायण की कथा कह देगा, दो जून का भोजन हो जायगा। सवा रुपया, पांच रुपया, कुछ न कुछ दक्षिणा मिल जायेगी। और घर का सबसे बुद्धु लड़का संस्कृत पढ़ेगा, तो संस्कृत का उत्थान कैसे सम्भव है। कोई काल था कि देश के सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति संस्कृत पढ़ते थे, इसलिए संस्कृत की क्या अवस्था थी,कैसा साहित्य निर्माण हुआ है? आज इतने वर्षों से साहित्य का उतना सृजन नहीं हो रहा, तो भी विश्व के अन्दर सबसे समृद्ध साहित्य आज संस्कृत का है। ये व्यक्तियों के कारण से होता है।

एसे लोग इस क्षेत्र में आयें, किसानी के क्षेत्र में कृषि का क्षेत्र अपनायें यह आवश्यक है। कैसे अपनाये, ये आप जानते है कि कृषि की एक प्रतिष्ठा बननी चाहिए और उसी के साथ-साथ आर्थिक दृष्टि से या एसी वस्तु होनी चाहिए कि मनुष्य को सन्तोष हो कि हां आर्थिक दृष्टि से भी कृषि में सम्पन्नता है। मैं तो अपने दोनों चचेरे भाई जो बी० एस० सी० बी० ए० मेरे पास आकर पढ़े और कहने लगे, कि भाई साहब कोई नौकरी लगता दीजिये। मैने कहा जो पढ़ाई तुमने की है वह भी बी० एस० सी० और बी० ए०, क्या नौकरी लगेगी, एकाध इंस्पेक्टर बन जाओगे कहीं, उसमें गुजारा नहीं होगा तुम्हारा। हाथ-पैर इधर-उधर फेलाओगे, बदनामी होगी हमारी भी और तम्हारी भी। इसलिए घर की खेती क्यों नहीं संभालते। कम से कम दों बातों का निश्चित हाोगा कि अन्न हमसे अच्छा खाने को तुम्हें मिलेगा, दूध हमसे तुमको अच्छा पीने को मिलेगा, वायु भी तुमको

हमसे अधिक शुद्ध मिलेगी। बाकी की रह गई आमदनी की बात, तो तुमने ग्रेजुएशन किया है बुद्धि लगाओ, कुछ नये प्रयोग करो, खेती अच्छी करो। आज तो हमारे प्रदेश के अन्दर और मैं समझता हूँ कि अन्य प्रदेशों में भी सींचित भुमि १८ ऐकड़, असींचित २७ एकड़, तथा अन्य शायद ३६ एकड़ है, एसा कानून है। इतनी भूमि पर व्यक्ति को इतना आमदनी करना संभव होना चाहिये, जितना एक अच्छा सुसम्पन्न व्यक्ति कर सकता है। एसी कृषि की स्थिति बननी चाहिये। अब मान लीजिये आई०ए०एस० का अधिकारी है। यह ठीक है कि उसके साथ सलामी भी लगी रहती है। उसे ३ हजार रुपये वेतन मिलता है, साल का ३६ हजार रुपये हुआ तो १८ एकड़ सिंचित भूमि में प्रत्येक को कम से कम २ हजार रुपये प्रति एकड़ की आमदनी वर्ष में उसकी हो तो यह काम करने में योग्य लोगों की भी रुची होगी। क्योंकि मैनें जैसा कहा, कुछ सुविधाये, कछु असुविधाये है, परन्तु आर्थिक दृष्टि से इतनी सम्पन्नता कृषि में से मिलनी चाहिये। अब इतनी कम से कम २ हजार प्रति एकड़ से निकलें तो इसके लिये सब तरह के नये नये प्रयोग करके ही प्राप्त किया जा सकता है।

आज जब कृषि करने वाले लोगों से बातचीत होती है तो वे कहते है कि २ हजार रुपये तो बड़ी दूर की बात है, १ हजार रुपये भी प्रति एकड़ हमको उपलब्ध होना कठिन है। इसके दो कारण हैं। हमारी उपज जितनी होनी चाहिये उतनी होती नहीं, जापान की तुलना में या और भी अच्छे देश है उनकी तुलना में हमारे यहाँ उपज कम है। दूसरा कारण यह है हमारे यहाँ उसका मूल्य भी कम है। मूल्य भी महत्व ही बात है। शरद जोशी भी महाराष्ट्र के अन्दर मूल्य वृद्धी के लिए आंदोलन करते है, जो उचित ही है। यदि हर क्षेत्र को आप एक उद्योग की दृष्टि से देखते है तो कृषि के लिए भी विचार करने पर जितनी लागत लगी है, उस लागत के अनुपात में या उसके अनुसार कृषि वस्तुओं का मूल्य मिलना चाहिए। मुझे स्मरण है कि जिस समय गेहूँ का मूल्य ११० रुपये निश्चित किया गया, वह संभवत: १९७७ की बात होगी पन्त नगर विश्वविद्यालय में डा० धर्मपाल सिंह कुलपति थे। वे अच्छे कृषि विशेषज्ञ थे तथा जानकार किसान भी थे। मेरी उनकी भेंट हो गई, तो मैंने उनसे पूछा कि डाक्टर साहब आप भी मूल्य निर्धारण समिति में थे। ११० रुपये गेहूँ का मूल्य घोषित हुआ है, तो वे कहने लगे कि हम लोग

तो नाम मात्र के लिये समिति में रख लिये जाते है परन्तु निर्णय तो अन्य लोग ही करते है। हमारे अनुभव में लागत १२२ रुपये प्रति क्विंटल आती है, जब हम यह बताते है तो उसे कोई नहीं सुनता। किसान जितना श्रम करता है, पूंजी लगाता है, उससे अधिक मिलना आवश्यक है। यह ठीक है कि हम खेती छोड़ कर जा नहीं सकते परन्तु इसके लिये सरकार को बाध्य करना पड़ेगा। ताकि हमारे श्रम व पूंजी के साथ लाभयुक्त मूल्य निश्चित हो। इस प्रकार कृषि एसी बन सकती है कि अच्छे लोग खेती में लगें और खेती से इतना प्राप्त करना सम्भाव हो सकता है कि योगय जीवन यापन हो सके। परन्तु इतने से ही किसान को संतुष्ट होना सम्भव नहीं, अनेक और बातें है जिनका भी विचार करना आवश्यक है। इस दृष्टि से भी मुझे दो-चार बातें और करनी है।

आप सबको भी वह ज्ञात है। उसे स्मरण कराना मात्र आवश्यक समझता हूँ। जैसे पेड़ लगाना। पेड़ में भी फलों के वृक्ष लगाएं, जिसमें अच्छी लकड़ी मिले, एसे पेड़ लगाएं, जलाने के काम में आए ऐसे पेड़ लगायें। बिहार में खेत की मेड़ पर भी पेड़ लगाऐ है। हर गांव में छेटा सा क्षेत्र छांट कर जिसे कम्युनिटि एरिया कह सकते है, पैड़ लगाएं। जहाँ भी सम्भव है यह लाभकारी है। इस ओर ध्यान कम हो गया है। सरकार भी प्रचार अधिक करती है। जंगल के क्षेत्र में २५ प्रतिशत कट गये वहां दूसरे काम प्रारम्भ है। इसी के साथ कुछ लोगों की कल्पना भी विचित्र है। मैं रांची के क्षैत्र में   अन्दर तक गया था, वहां वनवासी बन्धु हैं जिनकी जीविका लकड़ी काटना व बेचना है, परन्तु वे भी जंगल काट कर उसे साफ करते तथा वहां खेती करने लगते है। इन वनवासी बंधुओं को क्षमतावान बनाने के लिए कुछ बंधु कार्य कर रहे है। ये सब लोग वहां नर्सरी करते है ताकि वहां के लोग यहाँ से पेड़ लेकर लगाएं। एक विचित्र अनुभव वहां आया। वनवासी बन्धु कहते है कि पेड़ लगाना हमारा काम नहीं है, उसे काटना हमारा काम है और लगाना भगवान का काम है। यह सारा जंगल भगवान ने ही लगाया है। वहां उनकी धार्मक कल्पना है कि पेड़ लगाना मनष्य के वश का नहीं है। अत: उस क्षेत्र में धार्मिक स्वरूप रचकर पेड़ लगाने के लिए आग्रह करना होगा। रांची क्षेत्र में सेवाकार्य करने वाले बन्धु ६० हजार नर्सरी तैयार किये तथा एक पेड़ लगाने पर ५० पैसे देते भी है किन्तु लगाने के लिए जल्दी तैयार नहीं होते। इस और ध्यान देने की आवश्यकता है।

प्रत्येक प्रकार के पेड़ लगाये, फलों के वृक्ष लगाएं। स्वास्थ्य के लिये भी उपयोगी होगा। गांव में फल खाना कठिन हो जाता है किन्तु जो फल अपने यहाँ होता, उस खाने में कठिनाई नहीं प्रतीत होती है जैसे आम, अमरूद, कैला है। सेव, अंगुर आदि खाने में कठिनाई आती है। तात्पर्य यह है कि फल उपयोगी है, जो जहाँ पर हो उसे लगाना चाहिए तथा खाना चाहिये। प्रयत्न करने पर सभी स्थान पर ये होंगे। कुछ लोग समझते है कि संतरा नागपुर में ही होता है किन्तु मैं अभी सिक्कम से आ रहा हूँ, वहां भी अच्छा संतरा होता है। मेरा आग्रह है कि फल, उपयोगी लकड़ी तथा जलाऊ लकड़ी वाले पेड़ अवश्य लगाये। जलाने की लकड़ी भी मिलना सम्भव नहीं हो रहा है। ५० रुपये क्विंटल है। इस कारण गोबर के कण्डें बनाकर जलाते है,। खेती के लिए खाद की आवश्यकता है। गोबर जलाकर खेती को हानि पहुंच रही है। केवल रासायनिक उर्वरक से खेत खराब होंगे, खेतों में गोबर की खाद अनिवार्य है।

कुछ लोग इसी में लगे है कि खेती के लिये अधिक जमीन बनाओ और इस प्रचार के परिणामस्वरूप जंगल साफ होते जायेगे। अधिक खेत होने पर अनाज अधिक होगा, परन्तु यह सुनकर एक विदेशी ने कहा कि अनाज अधिक हो जायगा। यह ठीक है किन्तु उसे पकाने की समस्या खड़ी हो सकती है। एसी कोई समस्या न खड़ी हो। इस दृष्टि से किसान संघ के कार्यकर्ता विचार करे तथा इस ओर ठीक ध्यान दे।

जिस प्रकार रासायनिक खादों का प्रचलन बढ़ रहा है, वह आगे हानि पहुंचा सकता है। डा० नील रतन धर का कहना हे कि ५० प्रतिशत प्राकृतिक खाद होना आवश्यक इससे कम होने पर कृषि उपयोगी नहीं होगी।

यहाँ गायों की संख्या अधिक है। उनकी स्थिति! ठीक नहीं है। दूध की मात्रा हरियाणा या पंजाब छोड़कर बहुत कम है। देश में गो-हत्या जोरों पर है। बूढ़ी के नाम पर जवान गाय भी कटती है। अपने देश में मांस खाने वाले अर्थात् केवल मांसा हार पर जीवित रहने वाले नहीं है। यहाँ का पोष्टिक भोजन दूध है अत: दूध की मात्रा बढ़ाना अनिवार्य है। इसके लिए अच्छी गायें आवश्यक है। गायों की जाति सुधारनी होगी तथा काटना बन्द करना होगा। बड़े कसाई खाने, जैसे कलकत्ता में हरियाणा की गाये जाती है ज्योही कुछ महीने वह दूध देती है ओर बाद में बन्द करती है कट जाती है। इस तरह से देश की

जनसंख्या के अनुपात में गायें घट रही हैं। तिलक, गांधी व विनोबा ने कहा है कि गाय देश का मानबिन्दु है। इसकी रक्षा हमारा कर्तव्य है। गायों का कटना हमारे सम्मान के विरुद्ध है। हमारे कृषि_प्रधान देश के लिये गाय का उपयोग पूरे समय तक है। गाय कै गोबर की खाद खेती के लिए बहूत उपयोगी है। बैल जोतने के लिए मिलते है। अन्तिम समय तक गाय पर जितना व्यय होता है उससे अधिक लाभ मिलता है। जो लोग बूढ़ी गाय को बेकार समझ कर उन्हें कटने का आग्रह करते है, वह सही नहीं सोचते। एक बार सन्त श्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारी, श्री संपूर्णानन्द से जयपुर राजभवन में- जाकर मिले। उनसे गोहत्या बन्दी हेतु आग्रह किया तो उन्होंने भी बूढ़ी गायों के बारे में कहा कि इनका क्या होगा, वैसे अन्य का कटना बन्द हो, मैं पूर्ण सहमत हूँ। बूढ़ी गायौ को अलग करते हुए सुनकर ब्रह्मचारी जी ने कहा कि उनका तो बाद में विचार करेंगे, तुम जेसे बूढ़ों का क्या होगा? आप जैसे बेकार हुये तो गवर्नर बना दिये गये, में भी बूढ़ी गायों को गवर्नर बना दूंगा। हम इस ओर ध्यान दें। गायो की उपयोगिता हेतु प्रत्येक प्रकार से सामान्य किसानों को प्रशिक्षित करे, एसा वायुमण्डल बने कि गाय का कटना बन्द हो। इसके साथ इनकी नसल सुधार हो। परन्तु नस्ल सुधार के नाम पर विदेशी प्रभाव अधिक है। हमारे यहाँ की गाये ही अधिक उपयोगी होगी। देश की ही जातियों का परस्पर सम्बन्ध कराकर ८-१० किलो दूध देने वाली गायें हो सकती है, जो यहाँ की जलवायु में सुविधा से रहेगी। विदेशी गायें यहाँ की जलवायु में सब जगह रखना तथा सामान्य किसान के लिये सम्भव नहीं है, अतः देशी गायों की योग्य स्थिति बने एसा प्रचार उपयोगी होगा। कृषि के साथ गेरक्षा हमारा पुरना घोष है। हम इस ओर योग्य ध्यान दे दुध का व्यवसाथ बढ़ाकर आर्थिक सुधार भी सम्भव है। सहकारी समितियों के माध्यम से दूध बेचकर अपनी स्थिति व गांव की स्थिति भी सुधारी जा सकती है। गुजरात में दूध के मूल्य द्वारा ही गांव का विकास हो रहा है। पक्की सड़के, चिकित्सालय विद्यालय बन रहे है। मेरा विचार है कि किसान संघ गायों की उन्नीत का योग्य विचार करें तथा इस दिशा में प्रत्येक कार्यकर्ता प्रयत्न करें।

गांवों को जोड़ने वाला या नगरों को जोड़ने वाला संपर्क मार्ग भी आवश्यक है। यदि पक्का मार्ग है तथा थोड़े व्यय जैसे २०५०, ३ रुपये आने-जाने का व्यय हो तो बाजार

जाकर वह गांव ही माना चाहेगा। ९० रुपये महीने में बाजार में रहने का मकान भी नहीं मिलेगा। बाजारों की बढ़ती संख्या पर रोक लगेगी, और गांव भी ठीक रहेंगे। अत: अच्छे संपर्क मार्गों से ग्राम को जोड़ना आवश्यक है। बाजारों की गंदगी और प्रदुषण की चर्चा मात्र से केवल काम नहीं चलेगा, वरन् ग्राम में रहते हुये बाजारों तक पहुंचने की सुविधा बनेगी तो प्रत्येक ग्राम में रहना पसन्द करेगा। अध्यापक, कर्मचारी या बैंक आदि में काम करने वाले सभी ग्राम में रहेगें। अभी भी ऐसे ग्राम है जिनकी दूरी बाजार से २, ४ किलोमीटर ही है, किन्तु सुविधा से जाने योग्य नहीं है। मार्ग की सुविधा बनने से ग्रामों में पैदा होने वाली वस्तुएं जैसे दूध, सब्जी, अनाज, आदि बाजार ठीक से जायेगी। यह मार्ग बनाने में ग्राम भी आगे आये और सरकार पर भी दबाव डाले। ऐसी स्थिति धन व शक्ति की हम बनावें। यदि शासन ऐसी सुविधा देंने के लिये प्रयत्न न करे तो हम अपनी संगठन शक्ति का उपयोग लगान आदि न देकर कर सकेंगे।

इसी प्रकार हमारें गांवों में शिक्षा की दशा पर भी विचार करना होगा। गांवों में शिक्षा की दशा बहुत खराब है। मैं अपने ग्राम एक बार वर्षा के समय गया तो देखा कि पाठसाला में किबाड़ न होने के कारण रात्रि में पशु बैठते है। वह साफ न होने के कारण बालक पैड़ के नीचे बैठते है। कल मैं दीनदयाल विद्यालय में था। वहां डॉ० आत्म प्रकाश, शिक्षा निदेशक उ०प्र० आये थे। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में ७२ हजार प्राथमिक विद्यालय है, जिसमें १८००० के पास भवन नहीं है तथा ४२००० के पास श्यामपट नहीं है। यह वैसा ही है कि किसी के पास ६ बच्चे है कि के दो चेचक में मर गये या दो हेजे में मर गये। ऐसी दुर्दशा शिक्षा की है। यदि गांव के लोग ध्यान दे तथा उसकी व्यवस्था में सहभागी सदस्य रहें। आज विद्यालय में अध्यापक नहीं आते। बालक कहते हैं कि हमको पढ़ाने मास्टर ही नहीं आते है। हम क्या पढ़े। गांव का किसान संगठन इसको भी देखें कि अध्यापक आता है कि नहीं व पढ़ाता है कि नहीं। शिक्षा ठीक चलाने के लिए केवल सरकार पर ही निर्भर न रहे। हम अपनी शिक्षा के अनुसार पढ़ाई की व्यवस्था गांव की समिति बनाकर स्वयं भी करें। भवन की देख-रेख रखे। अध्यापक आवें इसका ध्यान रखें। प्रदेश में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बताते हुये निदेशक, उ० प्र० ने कहा कि प्रान्त में २८४ राजकीय है तथा ४००० प्राइवेट है। इस प्रकार सरकारी विद्यालय का योगदान नाम मात्र है। प्राइवेट विद्यालयों ने भवन तथा शिक्षा का प्रसार

किया, जो अबतक केवल २७ प्रतिशत संभव हुआ है। शिक्षा की ओर भी किसान संघ को जागरुक होना आवश्यक है।

चिकित्सा कि व्यवव्था भी सुधारनी होगी। कहीं-कहीं चिकित्सालय की योजना हुई है, किन्तु डॉक्टर नहीं दिखता। चिकित्सक व चिकित्सा की व्यवस्था ठीक हुई है। चार लोलोमीटर पर ही यह सुविधा उत्पन्न होगी तो गांव में रहना उचित लगेगा। यह जितने भी पक्ष हमने गिनाये हैं उससे- सहज ही यह अनुमान होता है कि सारी व्यवस्थायें बनाने के लिए अपने संगठन में भिन्न-भीन्न अनेक प्रतिभा के व्यक्तियों को जोड़ना होगा। एसे भी लोग आवश्यक होंगे जो कृषि विशेषज्ञ हों और वे खेती के लिए मार्गदर्शन करें। जिससे खाद, बीज का उपयुक्त उपयोग कर अच्छी खेती हो। कोई पेड़ों के जानकार होंगे तथा अच्छे पेड़ों की नर्सरी तैयार करेंगे। जिससे अच्छे व उस भूमि के लिए उपयोगी पेड़ प्राप्त हो सकेंगे। पशुओ के जानकार भी आवश्यक होंगे।

भारतीय किसान संघ

श्री दत्तोपन्त जी ठेंगड़ी

भारतीय किसान संघ के विभिन्न पदाधिकारी गण एवं कार्यकर्ता

खासकर यह क्षण हमारे लिये बहुत ही आनन्ददायक है। **अभ्यास वर्ग के लिये हम सब लोग यहाँ एकत्रित हुए है। वर्ष 1981, सितम्बर मास में पानीपत में पहला अभ्यास वर्ग हुआ था, जिसमें 80 की उपस्थिति थी, यह दूसरा अभ्यास वर्ग हो रहा है।** भारतीय किसान संघ की यह एक विशेषता है कि जब कभी किसान संघ के अलग—अलग स्थान से कार्यकर्ता एकत्रित होते है तो सभी कार्यकर्ताओं के मन में बड़ा आनन्द होता है। इसका कारण है कि अन्य संस्थाओं के समान भारतीय किसान संघ केवल एक संविधान के आधार पर चलने वाली संस्था नही है, यह एक परिवार है। हमारी मान्यता है कि सम्पूर्ण भारतीय किसान संघ यह देश के किसानों का एक परिवार है और इस कारण जब किसान संघ के लोग एकत्रित होते है तो वही आनन्द होता है, जैसे एक मां—बाप के चार—पांच बेटे नौकरी के निमित्त अलग—अलग शहरों में नौकरी के लिये जाते हैं किन्तु कभी दशहरा—दीवाली के अवसर पर सभी भाई मां—बाप से मिलने अपने बीबी—बच्चों के साथ आ जाते है, उस समय जो पारिवारिक एकत्रीकरण होता है, उसके कारण परिवार के सभी लोगों के मन में बहुत आनन्द रहता है।

पारिवारिक वायुमण्डल, यह अपनी एक विशेषता हैं। इसी के कारण यहाँ हम लोग अभ्यास वर्ग के लिये आये है, यहाँ से कुछ सीखकर जाने की हमारी इच्छा है। चार—पांच दिन हम एकत्रित रहेंगे, जो औपचारिक यहाँ कुछ भाषण होंगे, कुछ चर्चा होगी, उसके अलावा जो खाली समय मिलता है उसमें भी अलग—अलग प्रदेशों के लोग एक दूसरे के साथ मिलकर एक दूसरे की खबर लेंगे। यह जो पारिवारिक वायुमण्डल रहेगा, यह किसी भी शिक्षा—दीक्षा से अधिक महत्वपूर्ण बात हैं। यह हम लोगों का आनन्द का क्षण है, हम लोग मानते है यह क्षण जैसे आनन्द का है, वैसे परीक्षा का भी है।

किसी श्रेष्ठ संत कवि ने ऐसा कहा है कि भगवान हमेशा आपके साथ ही है किन्तु अत्यन्त दयावान, कृपालु होकर वह आपके धैर्य की परीक्षा लेता है। तो मालुम होता है यह अभ्यास वर्ग यानी हमारे धैर्य की भगवान द्वारा ली गयी छोटी—सी परीक्षा ही है, ऐसा हम समझते है। वैसे देखा जाये तो यहाँ हम लोगों को एकत्रित होना बड़ा कठिन कार्य या जोखिम कार्य नहीं था। लेकिन अनपेक्षित भगवान इन्द्र देव की जो कृपा रही, उसके कारण इस वर्ष उत्तर प्रदेश में इन दिनों में बहुत बाढ़ आयी जिसमें उत्तर प्रदेश के 57 में से 43 जिले प्रभावित रहे। बाढ़ के कारण 200 लोगों तक की मृत्यु हो गयी, ऐसा समाचार पत्रों ने दिया है, वास्तविक और भी संख्या हो सकती है। हजारों पशु बह गये। हमें ऐसा पता चला कि सभी प्रदेशों में समाचार—पत्रों ने भी, रेडियो ने भी और टी०वी० ने भी बाढ़ ग्रस्त सुल्तानपुर का वर्णन दिया था। और इसके कारण जो लोग दूर से आये थे, वे लोग निकल चुके, अब उन्हें वापस जाने का सवाल नहीं था लेकिन कई प्रदेशों से यह खबर आयी, कुछ लोग जिन्होंने शुल्क भी दिया है, जाने की पुरी तैयारी है लेकिन जब समाचार—पत्र में, टी०वी० में, रेडियों में सुना—देखा कि सुल्तानपुर बाढ़ग्रस्त हैं, पुरा उत्तर प्रदेश बाढ़ग्रस्त है तो उनके मन में आ गया कि अब सम्मेलन होगा नहीं। इतनी विपरीत परिस्थितियों में कैसे हो सकता है? इसलिये जिनकी आने की पुरी तैयारी थी, ऐसे भी कुछ लोग रूक गये। कुछ प्रदेश के लोगों ने बताया कि इसके कारण उनका एक लाभ भी हुआ, बारिश थी, कई रेलवे की लाइनें टूट गयी थीं तो हमारे कुछ प्रतिनिधि ऐसे थे जो एक बार अपने गांव में रेलवे ट्रेन में तो बैठ गये, ट्रेन निकली, लेकिन बाद में पता चला कि रास्ता बन्द हो गया है इसलिये ट्रेन को घुमाते—घुमाते लम्बे रास्ते से लाना पड़ा तो हमारे कुछ प्रतिनिधियों को यह लाभ हुआ है कि उतने ही पैसे देकर अधिक घंटों तक रेलवे ट्रेन में बैठने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। ऐसे लोगों का हम अभिनन्दन करते हैं। किन्तु यह बात स्पष्ट है कि यह परीक्षा हो रही है।

भगवान परीक्षा भी हर किसी की नहीं लेते। आदमी भी हर किसी की परीक्षा नहीं लेता—जैसे भट्ठी में सोना डाला जाता है,किन्तु क्या कोई आदमी ऐसा देखा है, जिसने ये शीशा ठीक है कि नहीं यह देखने के लिये उसको भट्ठी में डाला हो, क्योंकि वह जानता है कि कांच भट्ठी में जायेगा तो खत्म हो जायेगा। ये टिक नही सकता है, सोने जैसी वस्तु को ही परीक्षा के लिये चुन लिया जाता है। उसी प्रकार संस्था को परीक्षा के

लिये चुन लिया जाता है, जिस संस्था के बारे में कम से कम इतना तो विश्वास हों कि ये शीशा नहीं है। यह परीक्षा लेने योग्य संस्था है, उसकी ही परीक्षा लेंगे। इस दृष्टि से ही यह सोना है या नहीं, ऐसा भगवान के मन में हैं तभी तो परीक्षा हो रही है। जो प्रमाणित सोना हैं, उसकी परीक्षा नहीं होती किन्तु कम से कम यह ग्लास नहीं, इतना तो भगवान के मन में हैं। यह एक निगेटिव प्रमाण—पत्र इस परीक्षा के बाद हम लोगों को मिलता है, इसका अर्थ हम समझ लें सुल्तानपुर में बारिश के कारण जो बाढ़ आयी तो कई मित्रों ने दोनों तरह की आशंकाएं प्रकट की। अब बाढ़ के कारण लोग आयेंगे या नहीं आयेंगे, यह एक चिन्ता थी। दूसरी व्यवस्था के बारे में भी था। वैसे तो यह तय किया गया था कि किसान संघ का अभ्यास वर्ग बड़े शहरों में न हो। कुछ लोग शहर के डामर के रास्ते पर ही हल चलाते हैं, ऐसे लोगों में से हम नहीं हैं, वर्ग देहात में होना चाहिये, इसलिये यह ऐसा गांव चुन लिया गया जिसमें बिजली भी नहीं है, जिसके कारण कल आपको तकलीफ भी हुई होगी। वास्तव में ग्रामीण क्षेत्र ऐसा है और ऐसे स्थान पर विशाल एकत्रीकरण उसकी व्यवस्था वैसे भी एक बड़ा सवाल हो जाता है। जिस कॉलेज में हम लोग बैठे हैं, उस कॉलेज के कर्ता—धर्ता लोग किसान संघ के बहुत प्रेमी न होते और यह अपना ही काम हैं, यह आत्मीयता उनके मन में न होती तो शायद इस ग्रामीण क्षेत्र में इस वर्ग को चलाना हम लोगों के लिये सम्भव भी न होता। किन्तु यह भगवान की कृपा रही कि ऐसे भारतीय किसान संघ से आत्मीयता रखने वाले कर्ता—धर्ता यहाँ भी मिल गये। लेकिन उनकी पूरी ताकत के साथ सारी व्यवस्था करने के बावजूद वर्षा के कारण कठिनाईयाँ हो रही हैं। हमारे मित्रों ने सुल्तानपुर में चिन्ता प्रकट की कि कठिनाईयां बढ सकती है। कैसे होगा? बड़ी कठिनाईयां हैं बाहर से भी लोग आ रहे हैं बारिश बन्द होने का कोई सम्भव नहीं दिखता। हमने कहा कि भई अन्य संस्था में इस तरह की चिन्ता नहीं है। कारण एक ही है कि यह पारिवारिक कठिनाई है तो सबकी है। यहाँ लोग एक दूसरे से व्यवहार पारिवारिक ढ़ंग से करेंगे। कोई कठिनाईयां आ गयी तो उसका मुकाबला पारिवारिक ढ़ंग से करेंगे। जहाँ तथाकथित प्रगतिशील लोगों का एकत्रीकरण होता हैं वहीं समस्या खड़ी होती है। आपस में व्यवहार की भी समस्या रहती हैं क्योंकि वहां हरेक अपने स्वयं को बड़ा समझता है हरेक नेता जी हैं। और हर एक सोचता है कि मैं आर्डर करूंगा दूसरे को सुनना चाहिए। पहले डच (हालेण्ड) सेना के बारे में ऐसा कहा जाता था कि सेना का शिक्षण देने के लिए ट्रेनिंग

कॉलेज थे। इस ट्रेनिंग कॉलेज में लड़को को भेजा जाता था लेकिन ये लड़के बड़े लोगों के थे। कोई बड़े जागीरदार का लड़का, कोई बड़े ओफिसर का लड़का, कोई बड़े व्यापारी का लड़का, कोई बड़े कारखानेदार का लड़का, सब बड़े लोगों के लड़को को भेजा जाता था और ये जो लड़के जाते थे वे अकेले नहीं जाते थे, हर लड़के के साथ उनके घर का नौकर भी जाता था। हर एक लड़के की पुरी व्यवस्था उसका नौकर देखता था। इतना ही नहीं जब परेड ग्राउन्ड पर लड़के जाते थे तो उनको नेकर पहनाना, बूट पहनाना यह सारा काम नौकर ही करते थे। उनके हाथ में राइफल्स थमा देना यह भी नौकर का ही काम था। ये सारी तैयारी होने के बाद फिर सब लड़के मैदान में आ जाते थे तो उसका वर्णन ऐसा आता है कि सभी एक दूसरे की तरफ देखकर सोचते थे कि ये कौन है? ये तो अफसर का लड़का है, होगा अफसर का लड़का, मैं भी क्या कम हूँ, मैं भी जागीरदार का लड़का हूँ। दूसरा सोचता था होगा वो जागीरदार का लड़का, मैं भी तो बड़े कारखानेदार का लड़का हूँ। सभी अपने को श्रेष्ठ समझते थे। नतीजा यह होता था कि सभी एक दूसरे को आर्डर देते थे। कोई किसी का आर्डर सुनता नहीं था। सुनना तो छोटेपन की बात है। आज्ञा पालन यह छोटेपन का लक्षण है। आज्ञा देना यही बड़प्पन का लक्षण है। इसलिए परेड ग्राउन्ड पर जितने लड़के आते थे वे सब एक दूसरे को आर्डर देतें थे। इसके कारण सेना की ट्रेनिंग कैसी होती होगी इसकी कल्पना आप कर सकते हैं। जहाँ प्रगतिशील लोग एकत्रित होते है वहां इस तरह का दृश्य दिखता हैं।

हम लोग प्रगतिशील नहीं है। मुझे स्मरण हैं 1953 में नागपुर में एक प्रगतिशील राजनैतिक दल का अखिल भारतीय अधिवेशन हुआ था। हमारा सभी दलों के साथ सम्बन्ध रहता है, इसलिए में वहां गया था। बड़ा आश्चर्य हुआ बड़े—बड़े नेता भी केवल आवाज ही ऊपर चढ़ाकर बोलते थे। वे इतनें प्रगतिशील थें कि बड़ें और श्रेष्ठ नेता होते हुए भी एक दूसरे को गाली भी देते थे जो रास्ते के बच्चे भी नहीं करतें। इतना ही नहीं कुछ लोग तों अत्यधिक प्रगतिशील होने के कारण ऐसे भाषण देने वाले नेताओं का मारने के लिए भी दौड़ पड़े। ये दृश्य मैनें देखा। मेरे मित्र वहां थे मैनें उनसे पूछा कि भाई ये तुम्हारे दल का क्या हाल है? कैसे चल रहा हैं? बोले ठीक ढ़ंग से चल रहा हैं लोकतंत्र हैं आप के जैसे दकियानुसी थोड़े ही है। दकियानुसी का मतलब होता है (आब्सकयुरेन्टिस्ट) यहाँ तो स्वतन्त्रता है। हमने कहा भाई कुछ मर्यादा भी है तो बोले

देखियें भाई साहब हमारे दल का यह नियम है 'वाक स्वातन्त्र्यकर्म नियन्त्रण' हमने कहा इसका मतलब क्या है? तो बोले वाक 'स्वातंत्र्य'। जब सम्मेलन चल रहा हो तो हर एक को चाहें जो बोले बोलने की स्वतन्त्रता हैं। भला—बुरा खरा चाहे जो बोल सकते है। चाहे तो गालियां भी दे सकते है। स्वतन्त्रता है। लेकिन फिर एक बार यदि प्रस्ताव पारित हो जायें तो सभी को उस प्रस्ताव के मुताबिक चलना चाहिए ये डिसिप्लिन है। हमने कहा जब आपस में गाली गलोज करेंगें तो रिजलेशन पास होते ही ठीक चलेंगे इसकी गारन्टी क्या है? तो उन्होने कहा यही आप के और हमारे बीच में फर्क है। आप बड़े पुराने ढ़ंग से सोचने वाले हो हमारे यहाँ सब प्रगतिशील मामाला है। ऐसे प्रगतिशील लोगों का दूसरा सम्मेलन नागपुर में विद्यार्थियों का हुआ था जो हिन्दुस्थान के सभी अखबारों में आया था। वे इतने प्रगतिशील विद्यार्थी थे कि उन्होने नागपुर के शहरवासियों को, पुरूषो को, महिलाओं को बहुत परेशान किया, अशोभनीय बातें की। मै जब बाद में नागपुर गया था तो व्यवस्था में जो लोग थें वे भी हमारे मित्र थें। हमने कहा कि भाई क्या—क्या हुआ? कैसे हुआ? आपके पास तो पैसें बहुत थे तो वे बोलें पैसें तो बहुत थे लेकिन आने वाले प्रतिनिधियों की एक्टिविटी गलत थी। बाहर के लोगों को तकलीफ किस बात की थी? बोले मैनेजमेन्ट में हमकों तकलीफ इस बात की थी कि बाहर से आने वाला हर एक प्रतिनिधि अपने को लड़के का बाप समझता था और हमकों लड़की का बाप समझता था। और लड़की के बाप के साथ जैसा व्यवहार होता है वैसे हमारे साथ होता था, इसके कारण हम तो परेशान हो गये। तो हमने सोचा कि ये खैर है भगवान की दया हैं कि हम लोग इतने प्रगतिशील नहीं है। हमारे कुछ प्रगतिशील लोग मास्को गये थे मै समझता हूँ कि यहाँ बैठे हर एक ने वह सारी रिपोर्ट पढ़ी होगी कि मास्को जाने के बाद हमारे युवा लोगों ने किस तरह का पराक्रम वहां प्रकट किया। अपने देश की इज्जत कैसे कम कर दी। और इतने पराक्रम किये कि रूसी पुलिस को इनको गलत काम करते हुए पकड़ने के लिए आगे आना पड़ा। इतने प्रगतिशील लोग जहाँ एकत्रित हो जाते है वहां तो कठिनाई रहती ही है जब कोई मुसीबत नहीं है तब भी वर्ग चलाना कठिन है। क्योंकि मास्को में कौन सी मुसीबत थी आवश्यकता से अधिक सुविधा थी, नागपुर में पैसे की कमी नहीं थी सारी सुविधा थी। कहने का मतलब यह है कि जहाँ प्रगतिशील लोग एकत्रित होते हैं वहां चार लोग साथ में नहीं चल सकते क्योंकि हम लोग पुराने ढ़ंग से काम करने वाले है प्रगतिशील नहीं हैं इसके कारण हमने

उनको कहा कि हमारा काम पारिवारिक ढ़ंग से चलता है। पारिवारिक ढ़ंग का होने के कारण यदि हम अपने भाई के परिवार में चार दिन के लिये जाते हैं और वहां कुछ कठिनाई हुई् तो रसोई बनाने के लिए भी रसोई घर में चलें जाते हैं यह नही सोचते कि हम तो मेहमान हैं तुम्हारे घर में जो कठिनाई होगी सो होगी लेकिन रसोई बनाने का काम तुमको ही करना पड़ेगा और ठीक साढ़े ग्यारह बजे रसोई परोसनी चाहिए।

तब हमनें हमारे सुल्तानपुर के भाईयों को कहा कि भाई आप चिन्ता मत कीजिए बारिश के कारण बहुत कुछ कष्ट हो सकता है यह बात सही है लेकिन यह परिवार ऐसा है। इस कठिनाई में एक दूसरे को निभाते हुए एक दूसरे को सम्भालते हुए यह लड़की का बाप लड़के का बाप यह न समझते हुए किसान संघ का हर एक कार्यकर्ता लड़की का बाप ही हैं यह जानते हुए इसके कारण यहाँ कोई भेद नहीं रहेगा सारा काम ठीक चलेगा। उस संत कवि ने कहा की अल्प धारिष्ट यानी अल्प धैर्य की परीक्षा होती है। अब भगवान का अल्प होता है हम लोगों का बहुत हो जाता हैं यह अलग बात है, लेकिन परीक्षा हो रही है। आने वाले दिनों में सुखकारक हमारा कार्यक्रम हो सकता है शायद परीक्षा बढ भी सकती है, यह हमारे और आप के हाथ की बात नहीं, लेकिन एक पारिवारिक वायुमण्डल के कारण हम सब लोग इतने ठीक ढ़ंग से चलाकर ले जायेंगे यह विश्वास हम सब के मन में हैं।

भारतीय किसान संघ के बारे में मामूली जानकारी सबको है। कुछ लोग यहाँ नये आये हुए है संक्षेप में मैं यह कहूगाँ कि 4 मार्च 1979 को इसकी स्थापना हुई। वैसे तो 1971 के बाद जगह जगह अलग—अलग प्रदेशों में राष्ट्रवादी किसानों के मन में यह विचार चल रहा था कि राष्ट्र भक्त किसानों का एक अखिल भारतीय तो नहीं कम से कम प्रदेश स्तर का संगठन खड़ा किया जाय। थोड़ा बहुत प्रयास कुछ प्रदेशों में हुआ था। आपातकाल के पूर्व विदर्भ में श्री बाबु राव जी वैद के मार्गदर्शन में एक संस्था का निर्माण हुआ। विदर्भ के स्तर पर उसका रजिस्ट्रेशन भी हुआ। अन्य कुछ प्रदेशों में पंजीकरण तो नहीं लेकिन कुछ तदर्थ समितियां निर्माण हुई। सम्मेलन हुए। उत्तर प्रदेश, बिहार, दिल्ली, हरियाणा, आन्ध्र, कर्नाटक थोड़े—थोड़े एकत्रीकरण हुए, जहाँ तदर्थ समितियां कहीं निर्माण हुईं।

हम जानते है कि आपातकाल में सभी काम बन्द थें। ये तो नया ही काम था, इसके कारण वह भी बन्द हुआ। आपातकाल में दूसरा काम नहीं हुआ। जैसे ही आपातकाल हट गया वैसे यह जो अलग—अलग किसान कार्यकर्ता थे, फिर सक्रिय हो गये। फिर लोगों के मन में आया कि अभी तक प्रयास भी बहुत छोटा रहा। अलग—अलग प्रदेश में बिखरा रहा। अखिल भारतीय स्तर पर कुछ विचार होना चाहिये। लेकिन इसमें बहुत कठिनाई थी। जितने प्रदेशों के मैनें नाम लिये, वहां थोड़ा—थोड़ा तो काम था लेकिन कहीं भी किसान संघ इतना मजबूत नहीं था जो अखिल भारतीय अधिवेशन का जिम्मा उठा सकें। यह बड़ी समस्या थी कि सब लोगों को एकत्रित चलाना है। इतना खर्चा होगा, इतनी व्यवस्था करनी पड़ेंगी, कौन करेगा? ऐसे समय अपने ही बन्धु राजस्थान के श्री लक्ष्मण सिंह जी शेखावत ने बड़ें हिम्मत के साथ कहा हम राजस्थान में बुला सकते है। इतने बड़ें सम्मेलन के लिये सारी व्यवस्था हम करेंगे। कोटा में मार्च 1979 के पहले सप्ताह में यह अधिवेशन हुआ और वहाँ विधिवत भारतीय किसान संघ की स्थापना हुई। अब इसका काम अलग—अलग प्रदेशों में चल रहा है, किन्तु बाल्यावस्था में है, प्राथमिक अवस्था में हैं।

यह समझ लेना होगा कि भारतीय किसान संघ क्या है? हम भारतीय किसान संघ को बढ़ाते—बढ़ाते इतना बढ़ाना चाहते हैं कि देश का हर एक किसान इस बिरादरी में शामिल हो जाये। लेकिन अन्य कुछ संस्थाओं के समान नेताओं के समान हम जल्दबाजी नहीं कर रहें हैं। उतावली नहीं कर रहें, अधीरता नहीं दिखा रहें है, हमेशा हम लोगों के कामकाज का यही ढंग रहा है कि धीरे—धीरे किन्तु निश्चित रूप से आगे बढ़ना। आज तो एकदम चमक गये, कल कुछ नहीं। धीरे—धीरे आगे बढ़ना योजना पूर्वक आगे बढ़ना, इसके कारण भारतीय किसान संघ को छः, साढ़े छः साल होनें के बाद भी कार्य बाल्यावस्था में है। और इसकी ठीक कल्पना लोगों को नहीं आती है। तो हम पहले समझ लें कि भारतीय किसान संघ की परिभाषा क्या हैं? किसान, इसका मतलब क्या है? आप कहेंगे, ये कोई सवाल हो सकता है। जो किसान है, सो किसान है। इसमें सवाल करने की क्या बात है? किसान क्षेत्र में काम करने वाले अलग—अलग संगठनों में किसान को परिभाषा एक जैसी नहीं है। कुछ लोगों का कहना है कि जो हल जोतते है, वही किसान हैं, उन्हे छोड़कर बाकी हम किसी को किसान मानने के लिए तैयार नहीं। ऐसी हमारी परिभाषा नहीं है। हल जोतने वाला वह किसान यह तो

हम मानते ही हैं लेकिन हम समझते है कि खेतिहर मजदूर के खेती के लिये उपकरण तैयार करने वाले कारीगर, लौहार, बढ़ई, बाकी कारीगर, खेती पर जिनकी आजीविका अवलम्बित है, ऐसे बाकी जोड़धन्धा करने वाले लोग, वे सारे ही किसान हैं, इस तरह की एक व्यापक वृहद् परिभाषा भारतीय किसान संघ ने की है।

किसान की परिभाषा में सभी लोग आते है। जिनका सम्बन्ध सीधा या अप्रत्यक्ष आजीविका के नाते खेती के साथ आता है। इसके कारण गांव इस इकाई की तरफ देखने का भी हमारा ढ़ंग अन्य लोगों से दूसरा है। कुछ लोग ऐसे है, जो विदेशों से शिक्षा दीक्षा लेकर यहाँ आते है। विदेशों से सिद्धान्त लेकर यहाँ आते है। और हर गांव में वखैड़ा खड़ा करना चाहते है जैसे हम किसान संघ को किसानों का एक वृहत् परिवार मानते है, वैसे हमारी यह धारणा है कि भारतवर्ष में प्राचीन काल से ग्राम यह एक पारिवारिक इकाई रही है। पुरे गांव में पारिवारिक वातावरण रहा है। अलग—अलग ढ़ंग का काम करने वाले लोग रहे। मैं भी बचपन में अपने गांव में रहता था तो देखता था कि किस तरह छोटे—बड़े का भेद नही था, नाई की भी लड़की की शादी रहती थी तो बड़े—छोटे सब उसका पूछते थे। पान वगैरह तैयार करने वाला बारी भी पूछता था कि भाई इसमें तुम्हारे लिये पान कितना लगेगा? जो गांव के पटेल वगैरह रहते थे, वे भी पूछते थे कि तुम्हारे यहाँ कुछ दरियां भी लगेंगी? कुछ गाडियां लगेंगी? बोल दो सारी व्यवस्था कर देते है। जो तेजी रहते थे, वे कहते थे कि कितना तेल लगेगा,हम रख देते है? मानें जिसके पास जो चीज है, यह हमारे घर की शादी है सब लोग समझकर उसकी पूर्ति करते थें। नाई भी दूसरे के यहाँ शादी रहती थी तो वह न पुछते हुए एक एक सर की हजामत करने के लिए पांच आना देना, छः आना देना, यह झगडा न करते हुए कर देता था, बाकी परिवार के नाते हिसाब—किताब होता रहता था, जब फसल आती थी उस समय।

पूरा गांव यानें एक परिवार यह अभी—अभी बचपन में हमनें दृश्य देखा हैं। इसके कारण कोई भेद भी निर्माण उस समय नहीं होते थें, जो आज देखनें को मिलते हैं। हमारी यह मान्यता है कि पूरा गांव यह एक परिवार, यह भावना रही तभी गांव के सभी लोगों का कल्याण हो सकता हैं। लेकिन हम आपस में किसी न किसी तरह खींचातानी करते रहे तो फिर खींचातानी करने वाले सभी लोग डूबने वाले है। मान लीजियें एक

नाव हैं और सभी लोग उसमें बैठकर जा रहे हैं और बीच नदी में आपस में झगड़ा करते हैं और नाव में छेद कर देते है तो आपस में झगड़ा करने वालें सभी नाव के साथ डूब जायेंगे। ऐसा नहीं है कि जिसने छेद किया है वही डूबेंगे। तर जायेंगे तो सभी तर जायेंगे, डूब जायेंगे तो सभी डूब जायेंगे और इसके कारण नयें वातावरण में यह ध्यान रखने की आवश्यकता है कि जो गांव में अतिस्वार्थी लोग है उनके कारण ही झगड़े खड़े होते है। आज आपका अतिस्वार्थ सिद्ध हो रहा है, इसके कारण आपका पैसा बढ़ रहा है, आपका महत्व बढ़ रहा है, लेकिन इस तरह गरीबों का शोषण यदि जारी रहेगा तो यह असन्तोष इतना बढ़ेगा कि जिसके कारण यह जो महत्व आपका हैं,न रहेगा। न आपका पैसा रहेगा। कुछ नहीं रहेगा।

पारिवारिक भावना को लेकर हम चलते हैं तो परिवार भावना का क्या अर्थ होता है, इसका विचार करें। परिवार में सब तरह के लोग रहते हैं, कुछ पैसा कमानें वाले होते हैं, कुछ न कमानें वाले होते हैं। आज कल लोगों का नारा हैं, कमाने वाला खायेगा, लेकिन हमारे परिवार में यह नारा नहीं हैं कि कमाने वाला खायेगा। देखिये दस—बारह लोगों का परिवार है और कमाने वालें दो—तीन हैं, क्या वही खातें है? जो कमाते नहीं, वे खाते नहीं। उल्टा होता हैं, परिवार में तो कमाने वाले हट्टा—कट्टा रहते हैं, वे पैसा कमाकर लातें है लेकिन ज्यादा फिकर उनकी नहीं होती, ज्यादा फिकर उनकी होती है, जो दूध पीने वाले बच्चे है, अस्सी साल का बुढ़ा बाप है जो खटिया पर खांसता रहता है। कोई लंगड़ा है, कोई पंगु है, कोई किसी बीमारी से पीड़ित हैं, कोई टी०वी० का मरीज है। ऐसे जो लंगड़े, लूले, पंगु, बहुत छोटे, बहुत बुढ़े हैं, उनकी बहुत फिकर होती है। कमाने वाले की फिकर कम होती है। परिवार की यह विशेषता हैं कि जहाँ कमाने वाले की फिकर कम होती है और जो नहीं कमाता है, उसकी फिकर अधिक होती हैं क्योंकि वह अपंग हैं, अपाहिज हैं, यही भावना सबके मन में रहेगी, हो सकता है कुछ बुद्धिमान लोग बाकी लोगों का शोषण करें या कहें कि बेटा गड़बड़ मत करो, गांव एक परिवार हैं यह इसका मतलब नहीं हैं तो इसका मतलब यह हैं कि कोई शोषित गांव में नहीं रहना चाहिए, इसलिये कि यह परिवार है। इस तरह का वातावरण यदि निर्माण होता हैं, तभी पूरा गांव बच सकता हैं, वर्ना आपस के झगड़े में सभी टूट जायेंगे ऐसी

हमारी धारणा है। किसान की जो परिभाषा हैं, प्राचीन ढंग से हम सबने इस पर विचार किया है। अब भारतीय का विचार करें।

भारतीय का मतलब क्या हो सकता हैं, एक अर्थ तो स्पष्ट हैं कि सम्पूर्ण भारतवर्ष इसका कार्यक्षेत्र हैं। यह तो स्पष्ट हैं, जो कट्टर राष्ट्र भक्त हैं उनके लियें इसकी कुछ परिभाषा करनी आवश्यक होगी क्योंकि भारत ही हमारा कार्य—क्षेत्र हैं, ऐसा कहने के बाद भी अखिल भारतीय सीमायें क्या हैं, यह भी तो निश्चित नहीं है। सांस्कृतिक भारत की सीमायें अलग हैं जो विशाल हैं। राजनैतिक भारत की सीमायें छोटी हैं और मैं समझता हूँ हर एक राष्ट्र भक्त उसकी श्रद्धा आज के राजनैतिक भारत की सीमाओं में ही केवल सीमित नहीं है। जो हमेशा हजारों साल से, सनातन काल से हम सबको प्रेरणा देने वाला सांस्कृतिक भारत का मानचित्र है, वही सब लोगों के मन में हैं। किन्तु यह होते हुए भी व्यावहारिकता के नाते जब हम भारत शब्द का विचार करते हैं तो व्यवहार के नाते हमारा कार्य—क्षेत्र याने हमारे संविधान के अन्तर्गत राजनैतिक भारत की सीमायें दी हुई हैं इन सीमाओं के अन्तर्गत जो भारत हैं, उसी भारत का विचार प्रत्यक्ष कार्य के व्यवहार के लिये हम लोग करते हैं। इस दृष्टि से भारतीय अर्थात् हमारा कार्य—क्षेत्र सम्पूर्ण भारत है, यह एक अर्थ इसमें से निकलता है। इसी का दूसरा अर्थ हैं कि हम संकीर्ण नहीं है। केवल किसी एक प्रदेश के एक भाषा या केवल एक बिरादरी के लिये हम काम नहीं कर रहे। यह ठीक हैं कि हममें से हर एक व्यक्ति किसी न किसी परिवार का है, किसी न किसी भाषा का है। हमारा जो दृष्टिकोण है, वह न प्रादेशिक हैं, न जातीय हैं, न भाषाई हैं, न केवल अपने व्यक्तिगत परिवार का दृष्टिकोण है। वह तो सम्पूर्ण भारत को लेकर चलने वाला दृष्टिकोण है। सम्पूर्ण भारत से कुछ कम नहीं इस तरह का हमारा दृष्टिकोण हैं, ऐसा इसमें से अर्थ निकलता है।

भारतीय का एक अर्थ कि सम्पूर्ण भारत हमारा है। इसका स्वाभाविक रूप से कट्टर राष्ट्रवादी होने के कारण जितना प्रयास हो सकता है, उतना प्रयास छोटी भावनायें नष्ट करने के लिये करेंगे, यह भी उसका मतलब होता हैं। हमारे अन्दर कोई प्रादेशिकता नहीं। आज प्रादेशिकता का बोलबाला है। हमारे सम्पर्क में आने वाले लोगों के मन में प्रादेशिकता न रहे, कट्टर राष्ट्रीयता रहे यह हमारा प्रयास होगा। जैसा हमारा अखिल

भारतीय दृष्टिकोण है, वैसा उनका भी अखिल भारतीय दृष्टिकोण हो, धीरे धीरे इसमें सफलता मिल सकती है, यह भी इसका एक मतलब निकलता हैं।

हम भारतीय है यानी हम राष्ट्रीय है अब आप कहेंगे ये तो स्पष्ट दिखने वाली ही बात कही। इसमें नयी बात क्या कही? लेकिन हम राष्ट्रीय हैं यह बात सोचना और समझना सबके लिए इतना सरल नहीं जितना हम लोगों के लिए है। दुनिया में यह प्रबल विचार चला था कि राष्ट्र नाम की कोई चीज ही नहीं है। वर्ग है। सारी दुनिया की मानव जाति दो वर्गो में विभाजित है। एक वर्ग उत्पादन के साधनों से मालिकों का है, दूसरा वर्ग उन गरीबों का है जिनके पास उत्पादन के साधन नहीं है। इस तरह से हर एक समाज में हर एक देश में एक दूसरे से लड़ने वाले ऐसे दो समूह हैं, दो शिविर है इस तरह से हम पूरे देश को दो शिविरों में बांट रहे है। इस तरह से हम अन्त: कलह झगड़ा खड़ा करें ऐसा सोचने वाले लोग थे जो वर्ग संघर्ष जैसे सिद्धान्त को लेकर चलते थे। जो कम्युनिष्ट थे उनका धीरे—धीरे प्रभाव समाप्त होता जा रहा है। एक समय था जब उनका बहुत बोलबाला था। उनका कहना था कि राष्ट्र कोई मानव जाति की मौलिक इकाई नहीं। मौलिक इकाई अगर कोई है तो वह वर्ग हैं। भारतीय किसान संघ इस वर्ग संघर्ष को भी नहीं मानता। हम अन्याय के खिलाफ संघर्ष को मानते हैं अपने खिलाफ अन्याय को समाप्त करने के लिए संघर्ष को हम मानते हैं किन्तु वर्ग कल्पना ही मिथ्या है ऐसा हमारा स्पष्ट कहना है। हमारा कहना है कि राष्ट्र एक मौलिक इकाई है। वर्ग यह मौलिक इकाई नहीं। बेसिक युनिट राष्ट्र है वर्ग नहीं है। यह ठीक है कि परिवार में भी यदि कोई लड़का गड़बड़ करता है तो उसको थप्पड़ लगायी जाती है। कोई गलत व्यवहार करता है तो उसको सजा दी जाती है। वैसे ही राष्ट्र में भी कुछ लोग अन्याय करने वाले होते हैं तो उनको जरूर सजा मिलेगी, लेकिन दो समान शिविरों में हमारा राष्ट्र बंटा हुआ है यह मानने के लिए हम तैयार नहीं है।

पूरा राष्ट्र मिलकर एक इकाई है वर्ग कल्पना मिथ्या हैं। हां आर्थिक न्याय होना चाहिए। सामाजिक न्याय होना चाहिए। समरसता होनी चाहिए। समता होनी चाहिए और इस दृष्टि से विभिन्न लोगों की आमदनी में बहुत ज्यादा अन्तर नहीं होना चाहिए जो अखरने वाला हो। इस दृष्टि से हम यह भी सोचते है कि हमारे देश में कम से कम आमदनी ज्यादा से ज्यादा आमदनी में क्या फर्क रहे? इसका कुछ अनुपात तय होना

चाहिए। ऐसा नहीं चलेगा कि कुछ लोग तो इस कारण मर रहे है कि खाने के लिए अनाज नहीं है और कुछ लोग इसलिए मर रहे है कि खाकर बेहजमी हो गयी है। एक तरफ तो ऐसा हो कि साल में एक सौ अस्सी रूपया भी नहीं मिल रहा और एक तरफ ऐसा है कि टाटा बिड़ला के पास 22 सौ करोड़ और 24 सौ करोड़ रूपया रहे। इस तरह की विषमता देश के लिए उपकारक नहीं हैं। इसको खत्म करना चाहिए। कम से कम आमदनी ज्यादा से ज्यादा आमदनी यह तय होनी चाहिए। वर्ग नहीं है यह हमारे राष्ट्र के पारिवारिक सामन्जस्य है। दो युद्ध मान शिविरों में हमारा देश बंटा है यह समझना गलत बात है। यह भी भारतीय शब्द का अर्थ है। भारतीय शब्द का एक अर्थ और होता है एक परिवार कल्पना ही भारतीयता की विशेषता हैं। तो सम्पूर्ण भारत ही एक परिवार है एक इकाई है। इसका अर्थ यह भी है कि किसी आधार पर भारत को बांटा नहीं जा सकता। यदि ऐसा कहा जाता है कि भई! वर्ग भले हो न हो लेकिन ग्रामीण भारत एक अलग हैं और शहर में बसने वाला भारत अलग है। इस आधार पर भी हम भारत का बंटवारा नहीं होने देंगे। हमारा कहना है कि शहर में रहने वाला या गांव में रहने वाला सभी भारतीय है। वनवासी, शहरी, हरिजन, ग्रामीण सभी मिल कर यह जो 77 करोड़ का भारत है—एक इकाई है। जिनकी यह दृढ़ मान्यता है ऐसे अपना यह भारतीय किसान संघ है। पहले तो लोग भाषा, विरादरी, प्रदेश इसी के आधार पर आपस में बट जाते थे। देश बंट जाता था। आजकल एक और नया जातिवाद निर्माण हुआ है। वह जातिवाद है राजनैतिक दलों का। आश्चर्य की बात है कि हर एक राजनैतिक दल स्वयं ही एक जाति बन गया है। अब तो यहाँ तक बात आयी कि जो कट्टर पोंगा पन्थी जातिवादी लोग थे एक जाति की लड़की दूसरे जाति के साथ शादी नहीं कर सकती। आज कल तो विवाह भी राजनैतिक आधार पर होते है एक पार्टी के नेता की बेटी दूसरे पार्टी के नेता के लड़के के साथ शादी नहीं कर सकती। यहाँ तक अब जातिवाद फैल रहा है।

राजनीति और राजनैतिक दल के विषय में हमारी भूमिका क्या है। हम राजनैतिक आधार पर भी देश समाज और किसान को बटने नहीं देंगे। हम मानते है कि हमारे देश की कुछ व्यवस्था है। इस व्यवस्था में राजनैतिक दल का एक स्थान है। दल का काम करे इसमें हमें कोई आपत्ति नही है। भारतीय किसान संघ तो राजनीति से दूर है। गैर राजनीतिक है। हर किसान जैसा किसान है वैसे नागरिक भी है। इसके कारण

नागरिक के नाते किसी भी पार्टी का काम करने का उसको अधिकार है। काम न करने का भी उसको अधिकार है। किस पार्टी का तुम काम करोंगे किस पार्टी का काम नहीं करोंगे यह बाहर का आदमी नहीं बता सकता। हर एक की इच्छा का सवाल है। भारतीय किसान संघ भी किसी की स्वतन्त्रता पर बन्धन नही डाल सकता। पर जहाँ तक किसान संघ का सम्बन्ध है हम लोगों ने यह तय किया है कि यह संगठन किसी भी राजनैतिक दल के अंग के रूप में नही है। हम राजनीति के बाहर है। किसान संघ को राजनीति में घसीट कर कोई न ले जाय और राजनीति को घसीट कर किसान संघ में न ले आये दोनों बातों में हम सतर्क हैं। इस दृष्टि से हमने यह भी सतर्कता बर्ती कि जहाँ हर एक किसान को कहा कि व्यक्तिगत नागरिक के रूप में किसी भी दल का काम करने या काम न करने की स्वतंत्रता तुमको है वहां किसान संघ के मंच पर हम एकत्रित होते है तो अपने राजनैतिक पहलु को भुलकर केवल किसानों के लिए कार्य करेंगे क्योंकि यह किसानों का किसानों के लिए, किसानों द्वारा चलाया हुआ संघ है। यहाँ जब हम आते है केवल किसान के नाते आते है। इस दृष्टि से यह बन्धन भी रखा गया है कि किसान संघ का कोई भी पदाधिकारी किसान संघ का पदाधिकारी रहते हुए राजनैतिक दल का पदाधिकारी नहीं रह सकता राजनैतिक दल का पदाधिकारी राजनैतिक दल का पदाधिकारी रहते हुए किसान संघ का पदाधिकारी नहीं रह सकता। इस प्रकार की मर्यादा यहाँ रखी गयी है। पुराने जातिवाद के कारण यदि राष्ट्र में कुछ भेदभाव निर्माण होते है उनको भी हम चलने नहीं देंगे। हम अपने अन्दर नहीं आने देंगे। दूसरो के अन्दर भी हम दूर करने की कोशिश करेंगे। भा०कि०स० के नाते राजनीति के विषय में हम अनुकूल प्रतिकूल कुछ बोलना भी नहीं चाहते। हम अपनी दृष्टि से सोचें। गरीब आदमी का दृष्टि से सोचें कि देश में एक व्यवस्था है हर राजनैतिक नेता बताता है कि आपको कुछ करना नहीं है। अपनी भलाई के लिए कुछ कर्तव्य करने की आवश्यकता नहीं है। आप हमें पांच साल में एक बार वोट दे दीजिए, हमको शासन में लाइयें, एक बार हम शासन में आ जाये तो आपका कल्याण करेंगे। हमें बहुत संदेह है कि कहां तक यह वादा पुरा हो सकता है। आज हमारे देश में जो व्यवस्था है उसमें 60 प्रतिशत लोग गरीबी रेखा के नीचे है। 42 करोड़ लोग निरक्षर है। 12 करोड़ लोग ऐसे है जो अद्र्ध साक्षर है। अद्र्ध साक्षर का मतलब पढ सकते है। गरीबी और निरक्षरता जिस देश में इतनी भीषण जो केवल हस्ताक्षर करते हैं या अखबार के बड़े—बड़े हेड

लाइन ही पैमाने पर हो वहां हमारे नेताओं ने संविधान बनाने वालों ने पश्चिम से जो ढांचा लिया है वे उसको पाश्चिमात्य सांस्कृतिय लोकतंत्र कहते है यह प्रणाली गरीबी और निरक्षण देश में ठीक ढंग से कभी नहीं चल सकती। चाहे वह हिन्दुस्तान हो या अन्य देश। इसका कारण है इस प्रणाली के अन्तर्गत जिस किसी को शासन में आना है उसको ज्यादा एम०पी०, एम०एल०ए० चुनकर लाना होगा क्योंकि जनता ज्यादा शिक्षित नहीं आप सिद्धान्त की बातें कहेंगे लोगों के पल्ले नहीं पड़ेंगी। ज्यादा गरीब और निरक्षर होने के कारण जो जनता को कुछ न कुछ लालच दे सकते है प्रलोभन दे सकते है। खरीद सकते है ऐसे लोगों को वोट मिलेगा। जो वोट खरीद सकता है वही सरकार बना सकेगा। अगर वोट खरीदना है तो पैसा कहां से आयेगा? गरीब आदमी से पैसा नहीं आयेगा। पैसा पैसे वालों से ही आयेगा। यदि पैसे वाला पैसा देता है तो क्या वह राजा कर्ण है? या हर्ष वर्धन है कि कहेगा मै सन्यासी बनना चाहता हूँ, मेरा सब कुछ ले लो। ऐसा कहने वाला कोई पैसे वाला नहीं है। पैसे वाला अपने पैसे के मुनाफे की बात सोचेगा और उसके साथ मेरी भी कुछ शर्त है। बिना शर्त के तो वह पैसा नहीं देगा। शर्त क्या रहेगी? यह स्पष्ट है कि हमारे पैसे के बलबूते तुम्हारे शासन में आने के बाद हमारा पैसा बढ़ाने की मुनाफा बढ़ाने की और उसके लिए आम जनता का गरीबों का शोषण करने के लिए खुली अनुमति होनी चाहिए। यही शर्त पैसे वाले की होती है और इस शर्त को स्वीकार करते हुए पैसे वालों से पैसा लेकर वोट खरीद कर जो पार्टी सरकार बनाती है क्या आगे, चलकर पैसे वालों के खिलाफ नीतियों का निर्धारण कर सकेगी? हमारा ही कबुतर हमी से गुटर गुं करेगा? पैसे वाले तो चालाक होते है किसी पार्टी को पांच करोड़ दे देते है किसी को पचास लाख देंगे। छोटी पार्टी को 5 हजार देंगे हर एक को उपकृत करते रहते है। कुछ पार्टी वाले ऐसे भी होते है उनका कोई एक भाई दूसरी पार्टी में दूसरा भाई दूसरी पार्टी में और चाचा तीसरी पार्टी में। बड़ी चतुराई के साथ आज कल व्यवस्था होती है। लेकिन जो पैसा देगा वह यही शर्त रखेगा कि हमारे पैसे के बदौलत जो भी सरकार बनायेगा वही हमें आम जनता का, गरीब जनता का, खुले आम शोषण करने की छूट देगा और जिससे पैसा लेना होता है उसके सामने आंखे झुक जाती है।

यही 1947 से आज तक चला आ रहा है। केवल हमारे देश में नही नये स्वतंत्र हुए सभी देशों में यही चल रहा है। और इसके कारण हमारे देश में एक वृहत षड्यंत्र

चला। देश के नेताओं को खरीदने के लिए विदेशी सरमायेदार तैयार हैं। चुनाव जीतने के लिए विदेशीयों के पैसे की जिनको आवश्यकता है ऐसे हमारे नेता चौराहे पर खड़ें है दोनो का संगम हो जाता है तो विदेशी सरमायेदार कुछ विदेशी सरकारें और सरकारी दल जिसका हमेंशा षड्यंत्र रहता है गरीब जनता के खिलाफ। सरकार चलाने वाली पार्टी में फर्क हो सकता है आज एक पार्टी है कल दूसरी पार्टी होगी लेकिन कुल मिलाकर व्यवस्था ऐसी है जिस किसी व्यक्ति को या जिस किसी राजनैतिक दल को हुकुमत में आने की जल्दबाजी हो गयी है उसके लिए वगैर इसके कोई चारा नहीं हैं। हां ऐसी भी कोई पार्टी हो जिस पार्टी के लोग कहेंगे कि हम भ्रष्टाचार नहीं करेंगे और वे किसी भी पैसे वाले से पैसा नहीं लेंगे चाहे वह विदेशी रहे या देशी रहे। हम जनता को प्रशिक्षित करेंगे निरक्षरता को खत्म करेंगे। जनता को जागृत करने में 20 साल लगेंगे तो भी आपत्ति नहीं है, लेकिन भष्टाचार करते हुए पैसे वालों का पैसा लेकर चुनाव नहीं लड़ेंगे। साधन शुचिता यह विचार लेकर जो चलेंगे। इतने धीरज के साथ 20 साल 25 साल काम करने में लगेंगे तो भी हिम्मत करके कोई राजनैतिक दल हो तो वह भष्टाचार से बच सकता है। इसके कारण आज की व्यवस्था के अन्तर्गत जिनको हुकुमत में आ जाते है तब स्पष्ट है कि गरीबों के पक्ष में वह निर्णय नहीं ले सकते।

हम जानते है कि जो किसान हैं वह नागरिक भी है। सामान्यतया हम राजनैतिक दलों के विरूद्ध बोलने वाले नहीं, लेकिन सर्वसाधारण जनता और किसान में यह जागृति निमार्ण करने का दायित्व भी है, ऐसा हम समझते हैं। किसान को बिरादरीवाद के जातीयता प्रादेशिकता एवं भाषावाद के चक्कर में नहीं आना चाहिये। जिसे जिस पार्टी में काम करना हैं, उसे खुली छूट है। हमारी तरफ से कोई बन्धन नहीं हैं, लेकिन यह जो राजनैतिक जातिवाद है वह न फैलाया जाय, पूरा देश मिलकर एक इकाई है— यह भावना रहनी चाहिये। यही हमारे भारतीयता की परिभाषा है।

हम किसान है, हम भारतीय हैं, अब तीसरा शब्द आता है संघ 'भारतीय किसान संघ'। संघ का अर्थ स्पष्ट हैं संगठन। आज कल किसी भी एकत्रीकरण को संगठन समझा जाता है। ऐसा नहीं हैं। संगठन यह कोई एक विशेष अवस्था हैं, कोई एक विशेष शास्त्र हैं। किसी भी भीड़ को संगठन नहीं कहा जा सकता है और भारतीय किसान संघ की यह विशेषता है कि हमारा सबसे अधिक आग्रह संगठन पर ही होता

है। यह ठीक हैं, अपना काम चलाने की भी आवश्यकता है। रचनात्मक कार्य की भी आवश्यकता है। यह सारा काम हम लोग कर रहे हैं, करने वाले हैं, लेकिन हमारा मुख्य आग्रह संगठन खड़ा करने पर हैं क्योंकि हम सोचते हैं कि किसानों का स्थायी कल्याण केवल तात्कालिक आन्दोलन से नहीं होगा। केवल तात्कालिक आन्दोलन या केवल रचनात्मक कार्य से नहीं होगा। किसान के स्थायी कल्याण की गारन्टी स्थायी संगठन शक्ति में है। इसके लिये बाईफोकल चश्मा पहनने की आवश्यकता है जिसमें से दूर का भी देखा जा सकता है, नजदीक का भी देखा जा सकता है। इसमें दोनों तरह की व्यवस्थायें हैं। जैसे हम पहले कहते थे जंगल से गुजरना, अंधेरी रात्रि है, रास्ता जानते नहीं, केवल ध्रुवतारे को देखकर दिशा निश्चित करना है। एक—एक कदम हम बढ़ रहे हैं। हमें केवल ऊपर की ओर देखने से खड्डे में गिरने की या किसी पत्थर से या पेड़ से टकराने की सम्भावना हैं। हम कहीं गिर न जायें, इसलिये लालटेन से नीचे देखने की भी आवश्यकता हैं, किन्तु हमारी दिशा कहीं गलत न हो जाये, इसलिए ध्रुवतारे की तरफ भी देखने की आवश्यकता है। देश के किसानों की तात्कालिक समस्या क्या हैं, यह भी समझने की आवश्यकता हैं। आगे चलकर देश का और किसान का कल्याण कैसे होगा, यह विचार करने की भी आवश्यकता है। 50 साल बाद किसान का, देश का क्या होगा, केवल यही सोचना गलत है, लेकिन आज जो हो रहा है, उतना ही विचार सामने रखा और आगे चलकर किसान का और देश का क्या होगा, इस पर विचार न किया यह भी गलत हैं। दोनों तरह के कार्य के लिए आन्दोलन एवं संघर्ष की आवश्यकता है लेकिन संघर्ष करते हुए भी हमारा प्रमुख आग्रह संगठन पर रहता है। हमने यह कहा, चाहे संघर्ष हो, चाहे रचनात्मक कार्य, हमारी पद्धति यही रहेगी कि पहले थोड़ा संगठन खड़ा करो, उसके आधार पर तात्कालिक समस्याओं का मुकाबला करने के लिए संघर्ष करो। उस संघर्ष से जो लोग सम्पर्क में आयेंगे, उनको लेकर उनका उपयोग संगठन बढ़ाने के लिये करो। इसके कारण जो शक्ति बढ़ती है, उसके आधार पर और भी प्रखर संघर्ष हम आगे ले सकते है। इस तरह से कुछ संगठन, कुछ संघर्ष, फिर कुछ संगठन, फिर कुछ संघर्ष तो संगठन, संघर्ष, संगठन, संघर्ष यही हमारी पद्धति हैं। हमारा प्रमुख आग्रह संगठन पर हैं इसलिये संगठन, रचनात्मक कार्य, संगठन, रचनात्मक कार्य, रचनात्मक कार्य द्वारा फिर संगठन बढ़ाना है। तात्कालिक समस्याओं

के लिये छोटे—बड़ें आन्दोलन अवश्य करने हैं लेकिन किसानों की स्थायी शक्ति खड़ी करने में ही देश का एवं किसान का कल्याण हैं। यही हमारा कहना है।

अब हमारे देश में एक नयी पद्धति चल पड़ी हैं। डा० बाबा साहब अम्बेडकर थे, अपने साथियों को कहते थें कि भई संगठन का महत्व समझो, साथियों ने कहा कि वो तो हम कर ही रहे हैं। आप हमारे नेता हैं। उस समय सिड्युल काष्ट फेडरेशन इस नाम से संस्था चलती थी। बाबा साहेब अम्बेडकर की मृत्यु के पश्चात् ही रिपब्लिकन पार्टी का निर्माण हुआ। एक बार सिड्युल काष्ट फेडरेशन की बैठक थी, मैं उस समय वहां था। जब यह बात चली तो अम्बेडकर जी ने कहा कि संगठन का महत्व समझो। नये कार्यकर्ता ने कहा कि बाबा हम तो आपके नेतृत्व में संगठन करेंगे। उन्होंने कहा, आप संगठन नहीं कर रहे हैं, केवल विभूति—पूजा कर रहे हैं। व्यक्ति—पूजा कर रहे है, इससे काम नहीं होगा। यह ठीक है कि आप मेरा सब कुछ मानते हो, लेकिन मैं आज हूँ, कल नहीं। बाबा साहेब अम्बेडकर कहते थे कि यदि दलित लोगों का काम होना है तो एक बाबा साहेब अम्बेडकर पर निर्भर न हो, सम्पूर्ण दलित वर्ग में जागृति आनी चाहिये। उनका काम करने वाले कार्यकर्ता चाहिये। उन कार्यकर्ताओं का सही दृष्टिकोण होना चाहिये, तभी दलित वर्ग का उद्धधार हो सकता हैं। वर्ना जब तक मैं हूँ, तब तक हूँ बाद में कुछ भी नहीं किन्तु हमारे देश में व्यक्ति पूजा, विभूति पूजा इतना ही महत्व हैं। आज कल हवा शब्द का बहुत प्रयोग चलता हैं। लोग कहते हैं कि यदि कोई् समस्या खड़ी हो जायेगी तो हवा खड़ी हो जायेगी। धुंआंधार प्रचार करके लाखों लोगों को इकट्ठा कर लेंगे। फिर एक अच्छा आन्दोलन छेड़ लेंगे। सफलता या असफलता मिल ही जायेगी। उसके लिए एक नेता होना चाहिए। एक नेता रहा तो पर्याप्त है, बाकी यह सब झंझट है। इस हवा का महत्व है, धुंआंधार प्रचार का महत्व है, लेकिन संगठन का नहीं। केवल एक नेता हैं, यह करिश्मा आज चल रहा हैं। इस करिश्में के कारण लोग नेता की पुकार पर सब इकट्ठा हो जाते है और कुछ आन्दोलन होते है, उसमें सफलता— असफलता प्राप्त होती है। क्या इसी के किसानों का स्थायी कल्याण हो सकता है? यह देखने की आवश्यकता है। एक नेता के करिश्में के कारण होने वाले आन्दोलन की सफलता—असफलता के बारें मैं एक बात स्पष्ट समझना चाहिए कि आन्दोलन की असफलता के बारे में एक बात स्पष्ट समझना चाहिए कि आन्दोलन की असफलता के लिए नेता को ही दोषी नहीं बनाया जा सकता। आन्दोलन एक ऐसी चीज है जो कई

बातों पर अवलम्बित रहता है। वह सफल भी हो सकता हैं, असफल भी हो सकता है। कोई आन्दोलन असफल होने पर हम कहने लगें कि यह नेता गलत है। ऐसा मानने की आवश्यकता नहीं किन्तु एक नेता पर अवलम्बित केवल हवा पर चलने वाला काम रहा तो किसानों की स्थायी शक्ति निर्माण नहीं हो सकती। जैसे मैंने बाबा साहब अम्बेडकर के बारे में कहा, वैसे परम पूज्यनीय डा० हेडगेवार के बारे में है। वे कहते थे कि व्यक्ति पूजा नहीं, सिद्धान्तों की पूजा और उसके द्वारा संगठन होना चाहिए। व्यक्ति पूजा के विपरीत उन्होंने यहाँ तक कहा कि आप सब अपने आदर्शो का सिद्धान्तों का सम्मान करते जाओ। आज आप मेरी बात मान रहे हो, कल यदि दुर्भाग्य से मैं सिद्धान्तों के साथ गद्दारी करता हूँ, ऐसा दिखाई पड़े तो मुझे भी ठोकर मार कर आगे बढ़िये, मेरी फिकर मत करिये। चिन्ता करना हैं, सम्मान करना है, तो आदर्शो का सम्मान करीये, सिद्धान्तों का सम्मान करीये। व्यक्ति का सम्मान नहीं। ऐसा अपने परम् पूज्यनीय डॉक्टर जी भी कहते थे। एक व्यक्ति के आधार पर चलने वाली चीज स्थायी नहीं हो सकती। हालांकि जैसे अन्धेरी रात हैं, उसमें बिजली चमक जाती है और एकदम जगमगाहट हो जाती है तो बड़ा अच्छा लगता है। किन्तु जब तक बिजली चमक रही है, तब तक तो बहुत अच्छा लगता है और जैसे वह बिजली चली जाती है, वैसे अन्धेरा पहले से भी घना मालूम पड़ता है। वैसे ही एक नेता पर चलने वाले संगठनों का भी यही हाल है एवं संगठन के आधार पर जो काम चलता है,वह चल सकता है। हमारे भारतीय मजदूर संघ में कोई नेता नहीं, लेकिन भारत सरकार ने भी घोषित किया है कि सभी मजदूर संगठनो में भारतीय मजदूर संघ नं० 2 का संगठन है लेकिन हमारे यहाँ इमेज बिल्डिंग यानी प्रतिमा बनाने। हर तरह की सही गलत खबर देकर नेता की प्रतिमा उुंची करने से ही काम हो जायेगा, ऐसा नहीं है। हमारे मजदूर संघ में कोई प्रतिमा निर्माण और प्रचार ऐसा कुछ नहीं। सब कन्धे से कन्धा मिलाकर काम कर रहे है। 23 जून, सन् 1955 को भारतीय मजदूर संघ का निर्माण भोपाल में हुआ। उस समय हमारी हालत यह थी, एक भी कार्यकर्ता हमारे पास नही था। एक भी रजिस्टर्ड युनियन हमारे पास नहीं थी। एक भी पैसा हमारे पास नहीं था। कुछ नहीं था। भोपाल से नागपुर जाते समय मेरे मित्र वर्धन, जो मेरे साथ थे उन्होंने पूछा आपने स्थापना किया। तो मैंने कहा घोषणा तो की हैं। वे बोले आपका काम चलने वाला नहीं है। हमने कहा नहीं जमेगा तो छोड़ देंगे। हमने ठेका थोड़े ही लिया है। वे बोले नहीं ये आपके लोगों

के वस का ही है। यूनियन कितनी हैं? हमने कहा जीरो। बोले कार्यकर्ता कितने है? हमने कहा जीरो। पैसा जीरो। फिर भी आप अखिल भारतीय स्तर की संस्था खड़ी करने वाले है? उस समय हिन्दुस्थान में चार बड़ी श्रम संस्थायें थी, आई०एन०टी०सी०, ए०एन०टी०सी०, आई०यू०टी०, एस०ओ० थे, चारों सरकारी मान्यता प्राप्त थी। हर एक के पास बड़े—बड़े कार्यालय, हर एक के पास बड़े—बड़े सैकड़ो कार्यकर्ता, हर एक के पास लाखों का फण्ड और हमारे पास कुछ नहीं। तो हमारे वर्धन साहब ने उपमा दी, देखो ठेगड़ी साहब आपकी यह जो घोषणा है, वैसी है जैसा कि कोई आदमी घोषणा करें, मै बादशाह की बेटी के साथ शादी करने जा रहा हूँ— लेकिन वहां तक पहुंचने के लिये रिक्शा को देने के लिये अठन्नी जेब में नही हैं। माने उसकी माली हालत ऐसी है कि रिक्शे वाले को आठ आने देने की स्थिति भी उसकी जेब में नहीं है और बादशाह की बेटी से शादी करने जा रहा हैं। इसमें से भी भारतीय मजदूर संघ ऊपर आया और आज सरकार ने यह घोषणा की है। आज दो खेमे में कम्युनिस्ट पार्टी बट गयी, सी०पी०आई०, सी०पी०एम०। सी०पी०एम० की विंग है सी०टू०। सी०पी०आई०की विंग है, ए०आई०पी०सी० और भारत सरकार ने यह घोषणा की है, दोनों की संयुक्त शक्ति से अधिक शक्ति भारतीय मजदूर संघ की है। ऐसी यह बात देखने को मिली। कई प्रदेंशो में भारतीय मजदूर संघ नं० एक पर भी है, अखिल भारतीय स्तर पर नं० दो पर है। आज दोनों कम्युनिस्ट पार्टी की युनियनों के संयुक्त शक्ति से हमारी शक्ति अधिक है लेकिन ये सारा करते हुए भी हमने किसी नेता की प्रतिमा नहीं बनायी। हमने स्पष्ट कहा कि भारतीय मजदूर संघ, यह किसी व्यक्ति का नहीं है हम सब कार्यकर्ता हैं। कुछ हमारे नेता ऐसे थे, जो बताते थे कि संगठन की क्या आवश्यकता हैं। केवल हवा चलनी चाहिये। बम्बई में जार्ज फनान्डीज का नाम आप सबने सुना है। उनसे व्यक्तिगत हमारी मित्रता हैं, अच्छा आदमी हैं। हमारी विचार पद्धति में अन्तर होगा, लेकिन आदमी अच्छे हैं। उनकी काम की पद्धति रही है कि हवा पर काम चला देना। बम्बई में एक बार ऐसा समय आया, जब बम्बई के मजदूरों का बादशाह काई होगा तो जार्ज फनान्डीज। इसके कारण अखिल भारतीय श्रेष्ठ नेता यानी जार्ज फनान्डीज इस अवस्था तक वे पहुंच गये। उस समय भी हम उनको कहते थे कि भई जरा पैर के नीचे से धरती खिसक न जाय, इस दृष्टि से कुछ आधार तो रखो। उन्होंने कहा हमारा प्रचार तन्त्र हैं। समाचार पत्रों के सम्पादकों के साथ हमारे अच्छे

सम्बन्ध है। हम तर जायेंगे र्वतनी। आज क्या हालत हैं? जो बम्बई के बादशाह हमारे मित्र जार्ज फनान्डीज थे और बम्बई प्रमुख शहर होने के नाते सम्पूर्ण भारतवर्ष के प्रमुख नेता के रूप में उनकी गिनती थी। आज बम्बई में वे स्वयं हड़ताल करने का निर्णय ले तो नहीं हो सकती। उनके पैरो तले से धरती खिसक गयी है। अखबार में ही केवल उनकी शक्ति है। अखबार के दफ्तर में। कहीं मजदूर क्षेत्र में उनकी शक्ति नहीं है। बड़े पोजीसन से नीचे की पोजीसन में क्यों आ गये? इसका एक ही कारण था कि संगठन बनाने की फिकर नहीं थी। एक नेता का नाम जार्ज फनान्डीज बहुत चला। यहाँ तक कि जब हमारे छोटे—छोटे कार्यकर्ता रमनशाह, मनोहर मेहता वगैरह जब यूनियन बनाना चाहते थे तो लोग कहते थे कि काहे की यूनियन बना रहें हैं। बस फर्नान्डीज की जय बोल दो, सारा काम हो जायेगा। अब दत्ता सामन्त का नाम आ रहा हैं, किन्तु उनकी भी यूनियन अब हमारे पास धीरे—धीरे आ रही है। इसलिए हम लोगों ने कहा भई ठीक है, हम उनको भी मानते हैं। इसलिए हम लोगों ने कहा भई ठीक हैं, हम उनको भी मानते हैं। वे भी श्रेष्ठ हैं। यह भी आपको मालूम है, जब जार्ज फर्नान्डीज को 1963 में जेल में डाला गया तो मुक्त कराने के लिये जो संयुक्त मोर्चा बम्बई में मजदूरों का हुआ, वह भारतीय मजदूर संघ के संयोजकत्व में हुआ। यहाँ तक हम जार्ज फर्नान्डीज को मानते हैं, तो भी उनकी काम करने की पद्धति अलग है, हमारी काम करने की पद्धति अलग हैं, और इस दृष्टि से आज हम देखते है कि नेता का करिश्मा कुछ साल तक बहुत चलता है, फिर धीरे—धीरे संगठन का आधार न होने से मामला खत्म हो जाता है।

श्रेष्ठ पुरूषों में से जिनके बारे में कोई विवाद नहीं हो सकता हैं, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस श्रेष्ठ पुरूष थे। अब उनके सिद्धान्त अत्यन्त श्रेष्ठ थे, उनकी विचार परम्परा भी श्रेष्ठ थी और नेता जी को मानने वाले लोग भी, किन्तु उनको कई कारणों से संगठन खड़ा करने के लिये समय नहीं मिला। मैं यह नही कह रहा हूँ कि वे नहीं कर सकते थे। वे कर सकते थे, लेकिन घटना चक्र इतना तेजी से चल रहा था कि फारवर्ड ब्लॉक बनाने के पश्चात् 1939 में फारवर्ड ब्लॉक का संगठन ठीक ढंग से खड़ा करने के लिए समय नहीं मिल सका और आज उनका संगठन न होने के कारण जहाँ नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, यह नाम सुनते ही सब नतमस्तक हो जाते है, वहां उनके आदर्श सिद्धान्त, पद्धति को

चलाने वाला आज कोई भी नहीं है। इसके विषय में बहुत अच्छा डिस्कसन हमारे पार्लियामेन्ट के सेन्ट्रल हाल में हुआ। मैं उस समय मेम्बर आफ पार्लियामेन्ट था। हम सेन्ट्रल हाल में बैठे थे। प्राय:हम लोगों का चाय—पान चलता था। चार—पांच कम्युनिष्ट एम०पी० वहां बैठे थे। मैंने इन्दिरा गान्धी से लेकर नक्सलाइट तक सबको बताया था कि मैं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का प्रचारक हूँ। ये जो राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ हैं, किसने इसकी स्थापना की, हम तो जानते ही नहीं। हमने कहा डा०केशव बलिराम हेडगेवार ने की। हमको जरा छोटा दिखाने के लिये, चिढ़ाने के लिये उन्होने कहा, भई यह नाम तो हमने सुना ही नहीं। मैं तो कुछ नहीं बोला, लेकिन हमारे साथ हमारे एक मित्र उस समय ए०आई०टी०सी० के वाइस प्रेसीडेन्ट पालघाट के बाल चन्द्र मेनन थे। वे समझदार थे। उन्होंने कहा कि भई देखो इसका जवाब ठेंगड़ी जी नहीं देंगे। मै तुमको बताता हूँ कि ये तुम्हारी वृत्ति ठीक नहीं हैं। तुम छोटा दिखाने का प्रयास कर रहे हो। ये बताओं जिनका नाम दुनिया में बहुत चलता है, पं० जवाहर लाल नेहरू, इनकी मृत्यु बोलो कब हुई 1964 में। डॉ० हेडगेवार की मृत्यु हुई 1940 में। मानो नेहरू जी की मृत्यु 24 साल पश्चात् हुई। नेहरू जी की मृत्यु हुई उस समय नेहरू जी की प्रतिष्ठा बहुत थी, आज भी है। वे केवल देश के नेता नही थे, तृतीय जगत 'तटस्थ राष्ट्र' के नेता थे और यह 'थर्डवर्ड कन्ट्रीज' में टीओ और नासिर के साथ के नाते तीसरा नाम नेहरू का आता था और इसके कारण विश्व नेताओं में से एक ऐसी ख्याति नेहरू जी को प्राप्त थी। जब डॉ०हेडगेवार की मृत्यु हुई, तो उनकी क्या प्रतिष्ठा थी? विश्व तो छोड़िये, बल्कि देश के भी लोग उनका नाम नहीं जानते थे। महाराष्ट्र विदर्भ, जहाँ थोड़ा बहुत आर०एस०एस० का काम था, उनको छोड़ कर कौन जानता था। यहाँ तक कि आज भी ज्यादा लोग उनका नाम नहीं जानते होगें। मैं आपसे सवाल करता हूँ कि विश्व नेता पं० जवाहर लाल नेहरू के सिद्धान्तो पर मर मिटने के लिए कितने लोग सामने आयेंगे। मुझे लगता है कि पांच व्यक्ति भी सामने नहीं आयेंगे। हां, मिनिस्टर बनने के लिये सामने आ सकते है। लेकिन डां० हेडगेवार के बारे में इतना निश्चित कहा जा सकता है कि उनके सिद्धान्तों पर मर—मिटने के लिये अगर आह्वान आया तो लाखों लोग आगे बढ़ जायेंगे। डां० हेडगेवार का जादू है, इसके कारण है, क्योंकि उन्होंने संगठन खड़ा किया, व्यक्तिगत नेता गीरी नहीं की। अपनी इमेज बिल्डिंग नहीं की। अपनी प्रतिमा निर्माण नहीं किया। संगठन खड़ा किया। जो पीढ़ी दर पीढ़ी उनके आदर्शो एवं सिद्धान्तों को

लेकर चल रहा है। हम भी किसानों की स्थायी शक्ति चाहते है और स्थायी शक्ति यदि निर्माण करना हो, उसके लिये संगठन चाहिये। यह बात सही है, तात्कालिक समस्या का हल निकालने के लिये प्रचार की आवश्यकता है, धुंआधार प्रचार की आवश्यकता है, नेता की आवश्यकता है, आन्दोलन की आवश्यकता है। ये सब ठीक है और तात्कालिक समस्याओं को सुलझाना भी आवश्यक है। तात्कालिक समस्या के लिये जहाँ आन्दोलन चलेगा, वहां नेतृत्व भी रहेगा। वहां प्रचार भी चलेगा और हवा की भी आवश्यकता रहेगी किन्तु भविष्य का भी देखना होगा कि आने वाले लम्बे समय तक देश और किसान के कल्याण के लिए आवश्यक स्थायी शक्ति कैसे खड़ी हो। वह स्थायी शक्ति संगठन के आधार पर ही खड़ी हो सकती है। लेकिन संगठन खड़ा करना आज की दुनिया में इतना सरल काम नहीं रहा।

संगठन खड़ा करने के लिये अलग ढंग के लोगों की आवश्यकता है। आजकल हर व्यक्ति तुरन्त नेता बनाना चाहता है। उसको फुर्सत नहीं है। धीरज से लम्बे समय तक काम करना, इसको आज मूर्खता कहा जाता है। 1947 के पहले देश का वातावरण अलग था, आज का अलग है। 1947 के पहले का जीवन मूल्य अलग है। पहले कोई भी व्यक्ति अपने खुद के बारे में नहीं जानता था। मै नेता बन जाउ यह अलंकार नहीं था।व्यक्तिगत आकांक्षा नहीं थी देश का उदधार कैसे होगा यह विचार था और इसके काम यही जीवन मूल्य था। जो देश के लिए एक समय का खाना छोडेगा देश के लिए खद्दर पहनेगा, देश के लिए जेल में जायेगा, देश के कारण अपने परिवार को बर्बाद करेगा, देश के लिये फांसी के तख्ते पर चढ़ जायेगा वह उत्तम पुरूष है, ऐसा पहले माना जाता था। 1947 के बाद सारे लोग बहुत चतुर हो गये। कुछ न करते हुए कैसे तरक्की की जाय कि मिनिस्टर बन जाउं। कम से कम ग्राम पंचायत का सिक्रेटरी बन जाउं। कहीं न कहीं कुछ न कुछ मै कैसे जल्दी बन जाउं यह चिन्ता लगी रहती है। इसके कारण जीवन मूल्य बदल गये। आज जो त्याग करेगा उसको मूर्ख कहा जाता है। ये खुद भी बर्बाद हो रहा है पत्नी को पहनने के लिए अच्छी साड़ी नहीं खरीद सकता, बच्चें को अच्छे कपड़े नहीं है, घर में टी०वी० नहीं रख सकता, खुद बर्बाद हो रहा बाल बच्चों को भी बर्बाद कर रहा है मूर्ख है। हम बचपन में सुनते थे कि देश के लिए फांसी के फन्दे पर लटकने वाले राम प्रसाद विश्मिल फांसी पर जाने से पहले एक कविता की थी। वह कविता ऐसी थी कि सर फरोसी की तमन्ना अब हमारे दिल में है देख लेगें जोर

कितना बाजुये कातिल में है। खींच कर लायी थी तब तो कत्ल होने की उम्मीद आशिको आज जमघट बाजये कातिल में है। आज यदि राम प्रसाद विश्मिल फिर आयेगे सारे देश की हालत देखेगे इससे कविता बनायेगे तो उसमें फरक होगा। उन्होने कहा था खींचकर लायी थी सबको कत्ल होने की उम्मीद। क्योंकि उस समय जेल में जिनको फांसी की सजा हुई थी ऐसे सारे क्रान्तिकारी इकट्ठा थे। इसलिए कहाकि खींचकर लायी थी सबको कत्ल होने की उम्मीद कत्ल होने की उम्मीद यह पागलपन है। मंत्री होने की उम्मीद ऐसा लिखना उनकी बाध्यता होती।

ऐसी अवस्था में भारतीय किसान संघ के जैसा काम संगठित करना बहुत कठिन काम है। हवा खड़ी हो सकती हैं, नेता खड़ा हो सकता है उसका करिश्मा चल सकता है प्रतिमा भी खड़ी हो सकती है लेकिन किसानों की स्थायी शक्ति बनाने का निश्चय करते हुए कोई व्यक्ति जिसको नेतागिरी की चाह नहीं ध्येयबाद को लेकर चलने वाले कार्यकर्ताओं की किसान संघ निर्माण होने के पूर्व और उसके बाद में हम लोग बहुत खोज करते थे क्योंकि हम लोग समझते है कि किसान किसान कार्यकर्ताओं को एक स्तर का नही मानते भारतीय किसान संघ किसानों को अलग पद देना चाहता हैं लेकिन जो किसान कार्यकर्ता है उसको अलगवाद देना चाहता है किसान कार्यकर्ता के नाते आप सब को बता देना चाहता हूँ जिससे कल सब हमको गाली न दें। किसानों को हम आवाद करना चाहते हैं, उसका कल्याण हो जाय हमारी इच्छा है लेकिन कोई तभी किसान कार्यकर्ता कहा जायेगा जो देश को, किसान को आबाद करने के लिए स्वयं को बर्बाद करना चाहता हैं। इस तरह बर्बाद करने वाले पागल लोग कितने मिलेंगे? यह हम देखना चाहते हैं। आप इतने लोग यदि वास्तव में पागल बन जायं तो हमें बड़ी खुशी होगी। इसलिए इस वर्ग का आयोजन हुआ है। बड़ा आनन्द होगा। पागल लोगों को निर्माण करने का कारखाना एक ही देश में चल रहा है वह है राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ। वह फैक्ट्री है जहाँ यह माल निर्माण हों रहा है। इसलिए काम विशाल हैं तो पागल लोगों की आवश्यकता है। इसलिए हम फैक्ट्री से माल मंगाना चाहते हैं और माल मंगवाने की कोशिश करते रहते हैं। अपना यह जो अभ्यास वर्ग हैं इस अभ्यास वर्ग में आपको यह सुनकर प्रशन्नता होगी कि यह जो फैक्ट्री है इस फैक्ट्री के मैनेजिंग डायरेक्टर कल दोपहर तीन बजे से अपने साथ रहेंगे। और 29 तारीख को सुबह से दिन भर इस फैक्ट्री के चेयर मैन आफ दी बोर्ड आफ डायरेक्टर्स दिन भर हमारे साथ रहने वाले हैं लेकिन

यह जो अभ्यास वर्ग में हम लोग एकत्रित आये हैं हमें समझ लेना चाहिए की आज की परिस्थिति में भारतीय किसान संघ के जैसा काम खड़ा करना यह अन्य संस्थायें खड़ी करने जैसा सरल आसान सुलभ काम नहीं हैं। बहुत कठिन काम हैं क्योंकि यह व्यक्तिगत नेतागिरी का काम नहीं हैं। जहाँ किसान और देश के लिए जिसके मन में अत्यन्त आत्मीयता है जो कट्टर राष्ट्रवादी है, जो इतने राष्ट्रवादी है कि राष्ट्र का एक भी आदमी भूखा रहा तो हमें सुख से नींद नहीं आ सकती। जैसा स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि इस देश का एक कुत्ता भी जब तक भूखा है तब तक मैं मोक्ष की कामना नहीं करूंगा। इस तरह की भावना जिनके मन में जागृत है इस तरह के राष्ट्रवादी लोगों को कार्यकर्ता के रूप में अपने साथ लेने से ही भारतीय किसान संघ का काम खड़ा हो सकता है। प्रतिमा वाले जल्दी आ सकते है। नेतागिरी वाले जल्दी आ सकते है। भाषण देने वाले जल्दी आ सकते है। यह अभ्यास वर्ग लच्छेदार भाषण देने वाले लोगों के लिए नहीं है जिनके मन में यह लगन है जिनके मन में यह आत्मीयता है कि इस देश का गरीब से गरीब आदमी जब तक भूखा है तब तक मैं सुख की रोटी नहीं खा सकता यही हमारे किसान संघ का तात्पर्य हैं।

मा० दत्तोपंत ठेंगड़ी जी

हम और हमारा कार्य

कुछ मित्रों ने जानना चाहा है कि ठेंगड़ी जी आपका इरादा क्या है? आपने 4,5 दिन के लिये यहाँ पर लाया है। आप इसमें से कौन सी चीज बनाना चाहते हैं। मैने कहा क्यों? बोले पता ही नहीं चलता। कभी सुन रहे हैं कि संगठन खड़ा करो तो कभी सुनते हैं आन्दोलन करो, कभी सुनते है रचनात्मक काम करो। यहाँ प्राचीन भारत में कृषि कैसी थी? इसका विवरण सुना तो क्या हम वेद वेदांग पढ़ेगे? मार्केटिंग के सम्बन्ध में बताया गया तो उसके कानून कायदे पढ़ेगे? उत्पादन खर्चा निकालने की विधि बतायी गयी तो क्या अर्थशास्त्र का ज्ञान करने के लिए बी०ए०, एम०ए० पढ़ना होगा? आप चाहते क्या है? मैं समझता हूँ कि इस बारे में समझ लेना आवश्यक है।

यहाँ अलग—अलग विषय आयेंगे। सभी विषय सभी के रूचि योग्य होंगे यह असम्भव है प्रत्येक व्यक्ति की रूचि अलग—अलग होती है। सभी विषयों में प्रत्येक रूचि नहीं ले सकता। दूसरी बात भी हैं, यहाँ कुछ विषय आ रहे है। अब एक एक विषय में हम सभी लोग विशेषज्ञ हो जायेंगे, यह भी नहीं समझा जा सकता। जैसे मैंने प्रारम्भ में ही कहा कि यहाँ केवल विषय में रूचि होगी उस विषय में अध्ययन करने की क्षमता हम लोगों में आ जाय इतना ही केवल यहाँ किया जा सकता हैं। चार दिन में इतने सारे पहलु है व खेती के जितने शास्त्र हैं उनका ही केवल विचार किया तो उनकी बहुत बड़ी संख्या है। अब इन सभी शास्त्रों के विशेषज्ञ बनने के लिए हमारा कार्यकर्ता कोशिश करेंगा तो इसके लिए 3, 4 जन्म इसी में निकल जायेंगे फिर बाकी काम वह क्या करेगा? हमसे विषय विशेषज्ञ बनने की अपेक्षा नहीं है लेकिन सभी विषयों का कामचलाऊ ज्ञान हमारे लिए आवश्यक है। विभिन्न विषयों का प्राथमिक ज्ञान हमकों हो ऐसी आवश्यकता है। जिस विषय में किसी को अधिक रूचि हो उसमें अधिक अध्ययन करके अपनी जानकारी बढ़ा सकता है। अत: यहाँ हम अपनी तैयारी इतनी अनिवार्य रूप से रखें कि सभी विषयों को हमें ध्यान पूर्वक सुनना हैं।

हमारे यहाँ ऐसा माना गया हैं कि एक आदमी बोले और बाकी केवल सुनते रहें यह शिक्षा का अच्छा मार्ग नहीं है। जिसको अंग्रेजी में डम्पिंग सिस्टिम या बैंकिंग सिस्टिम कहा है, मानों अपनी जानकारी दूसरों पर थोप देना। यह अच्छी पद्धति नहीं है वास्तव में अच्छी पद्धति सम्वादात्मक हैं। बोलने वाला या सीखने वाला, दोनों आपस में बैठे। सिखाने वाला या अध्यापक पहले पूरी जानकारी विघार्थी के बारे में कर ले। हमारे यहाँ पहले ऐसी ही पद्धति थी। यह स्वाध्याय वर्ग या अभ्यास वर्ग है किन्तु सही माने में यह स्वाध्याय वर्ग या अभ्यास वर्ग नहीं हैं। ऐसा कहा गया हैं कि एक अध्यापक है एक विघार्थी हैं। अध्यापक विघार्थी को पढ़ाता है किस ढंग से पढ़ाया जा सकता है? विद्यालयों में जो पढ़ाने की पद्धति है वह सही नहीं है। ऐसा कहा गया कि अध्यापक विद्यार्थी के मन, आदत, बुद्धि को पहले समझ लें फिर अध्यापक विद्यार्थी के सम्पर्क में इतना आये कि विद्यार्थी को भी अध्यापक के सम्बन्ध में समझने का मौका मिल जाय। माने विद्यार्थी के बारे में पूर्ण जानकारी अध्यापक को हो जाय तथा विद्यार्थी को भी पूर्ण जानकारी अध्यापक के बारे में हो जाय। इसके बाद दोनों मिलकर बाहर की दूनिया की जानकारी प्राप्त करें। यही योग्य शिक्षा पद्धति है। अध्यापक क्या पढ़ाना चाहता हैं इसका महत्व नहीं है। वास्तव में विद्यार्थी जानने की चाह कौन सी रखता है; इसका महत्व है। हमारे यहाँ यही पद्धति थी कि अध्यापक विद्यार्थी को नहीं सिखाता था। अध्यापक व विद्यार्थी संयुक्त रूप से दुनिया की खोज करते थे, अन्वेषण करते थे। इसलिये कहा गया था 'तेजस्विनावर्धातयस्तु' अर्थात् तुम्हारा व मेरा अध्ययन तेजस्वी होगा। तेजस्वी अध्ययन वही है जो अध्यापक व विद्यार्थी दो मिलकर करते है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि हमारी इस पुरानी बात को आधुनिक शिक्षा की क्रान्तिकारी पद्धति के प्रवक्ता मिस्टर फ्रेयर, जिनका अभी 4 साल पूर्व देहावसान हुआ हैं, उन्होने भी स्वीकार किया है। इसका यह अर्थ हुआ कि हमारी प्राचीन पद्धति इस आधुनिक काल में उत्तम मान्य हुई हैं।

अब अपने वर्ग के सम्बन्ध में विचार करें कि हम 529 है और बोलने वाले हैं। वे आपस में पुरी तरह समझ लें अर्थात् बोलने वाले 529 को समझ लें तथा 529 बोलने वालों को समझ लें तो इसके लिये कितना समय लगेगा? बहुत साल लगेंगे। अत: अपनी आदर्श पद्धति से यहाँ स्वाध्याय सम्भव नहीं है किन्तु कामचलाऊ जानकारी भिन्न भिन्न विषयों की हम यहाँ प्राप्त करेंगे। अपने स्थान पर जाने के बाद इस

जानकारी के आधार पर स्वयं अध्ययन करें यह सम्भव हैं। स्वाध्याय वर्ग के सम्बन्ध में कुछ लोगों की गलत धारणा भी रहती है प्रारम्भ में किसान संघ का कार्य जब चला तो हमारे एक पुराने मित्र ने कहा कि देखिंए जी मेरा तो आपके ऊपर विश्वास है कि आप हमें गुमराह नहीं करेंगे लेकिन मैं ऐसे किसान संघ के काम में आने वाला नहीं हूँ। इसका अर्थ यह है कि किसान संघ के बारे में आप मेरी पूरी ट्रेनिंग कर दीजिये। पूर्ण शिक्षित होने पर ही मैं यह कार्य करूंगा। हमने कहा कि यह बहुत कठिन है। किसान संघ के कार्य का स्वरूप ही ऐसा है कि वास्वविक शिक्षा काम करते करते ही होगी। ट्रेनिंग मैदान में होती है वह कमरे में नहीं होती हैं। यह एक व्यवहारिक कार्य है। काम करते करते ही प्रत्येक सीखेगा। तुम यदि कहोंगे कि पहले तुम्हारी शिक्षा दीक्षा हो जाय फिर तुम काम करोंगे तो वह वैसा ही होगा जैसे कोई आदमी तैरना सीखना चाहता है लेकिन उसकी शर्त है कि मैं तब तक पानी को स्पर्श नहीं करूंगा जब तक मुझे पुरा तैरने का अभ्यास नहीं होता तो क्या कोई उसे तैरना सीखा सकेगा? जब तक पानी में कूदकर कुछ डुबकियां न लगायें, मर गये 20 बार कहकर चिल्लाये नहीं, मुंह व नाक में पानी नहीं भर जाय, तब तक तैरना आयेगा ही नहीं। धरती पर हाथ हिलाने से तैरना नहीं आता। किसान संघ का कार्य भी एक व्यवहारिक कार्य है। काम करने पर ही अच्छे व बुरे अनुभव आयेंगे। आशा व निराशा मैं से होकर जाना होगा। यश व अपयश दोनों का अनुभव होगा। फूलों व जूतों की माला पहनने की तैयारी रखनी होगी। तभी काम करने की उपयुक्त शिक्षा होगी। जिन्दाबाद व मुर्दाबाद के नारे लगेंगे तभी अनुभव का प्रगटीकरण होगा तो वास्तव में ट्रेनिंग है, ऐसा कहा जायेगा। हमारी क्षमता बढ़े इसी दृष्टि से सभी विषयों की जानकारी यहाँ दी जा रही है। इसका ऐसा अर्थ नहीं है कि 5 दिन में आपको ऐसी शिक्षा दीक्षा दी जायेगी कि यहाँ से मुक्त होकर ही मैदान में तलवार लेकर उतर जायेंगे। आप यह बात ध्यान में रखें कि स्वयं अध्ययन करने तथा जानकारी प्राप्त करने की जिज्ञासा पैदा करने की शिक्षा यहाँ होगी।

एक बात और ध्यान में रखें कि यहाँ से सीखकर जाने के बाद भी समस्यायें बनी रहेंगी। हममें से हर एक आदमी को भगवान ने अलग—अलग ढ़ंग का बनाया है। कोई आदमी ऐसा है जो अच्छा लिख सकता है। मान लीजिए कलेक्टर को ज्ञापन देना है तो वह अच्छा मांग—पत्र तैयार कर सकता है किन्तु यदि उसको कहेंगे कि ध्वनि वर्धक के सामने खड़े होकर अच्छा भाषण करो तो जानकार कार्यकर्ता होने पर भी उसको

भाषण देना कठिन हो सकता है। श्रोताओं को देखकर लाउडस्पीकर के सम्मुख खड़े होते ही पांव लड़खड़ाने लगेंगे। कुछ ऐसे भी है जिनको भाषण देने की सदैव प्रतीक्षा रहती है। भाषण देने में उन्हे हिचक नहीं हैं। किसी विषय पर भी चाहे जितना बोल सकते है लेकिन उनको किसी पत्र का उत्तर देने के लिए कहा तो सम्भव नहीं होगा। कहेंगे साहब कागज कलम से हमारी दुश्मनी है। भाषण आधे घंटे के बजाय एक घन्टे दिलवा लीजिए लेकिन लिखने के लिए न कहें। हमने मजदूर क्षेत्र में अनुभव किया है। कुछ लोग भाषण बहुत अच्छा देते है। एक जगह मैं गया था एक नेता जी का भाषण चल रहा था। मैं एक बाजू में खड़ा था। बाद में चाय पीने लगे और वहीं बैठ गये। उन्होंने मालिक को गाली दी तथा जनरल मैनेजर के एक एक रिश्तेदार का नाम ले लेकर उद्धार किया। उनकी काफी गालियां सुनकर मजदूर बड़े प्रसन्न थे। लोगों ने कहा नेता हो तो ऐसा हो, देखो कैसी गाली निकाल रहा है। मालिक मैनेजर की लिहाज न करते हुए निर्भयता से गाली दे रहा है। लोगों ने कहा आपके पास उन्हे लायें तो मैंने कहा कि नहीं, नेता जी को किसी अच्छे होटल में चाय पिलाइये। उन्हें अच्छे होटल में ले गये। अब भाई अच्छे होटल में आप जानते है कि कोई भी चीज जल्दी नहीं परोसी जाती ऐसे होटल में फुरसत से ही जाया जाता है, जब कोई काम धन्धा न हो। चाय का आदेश देने के बाद वहां 25 मिनट में प्याला आया। उतनी देर में नेता जी ने सबसे परिचय कर लिया, फिर लोगों को विचित्र अनुभव आया गेट मीटिंग में जिस प्रकार मालिक मैनेजर को गाली दे रहे थे वैसे ही कार्यकर्ताओं से भी व्यवहार किया। यह पूर्व अभ्यास के कारण हुआ। चाय होते—होते तक सभी कार्यकर्ताओं ने निर्णय ले लिया कि अगले बार इन्हें अपने कार्यक्रम में नहीं बुलायेंगे। अपने इस व्यवहार से यह दुश्मन खड़ा कर देता हैं। यह नेता अपने चार लोगों को चार मिनट भी साथ लेकर नहीं चल सकता। अहंकार के कारण गुस्सा हो जायेगा। ऐसे नेता को गेट मीटिंग में लाना तथा अकेले ही चाय पिला कर वापस भेज देना उपयुक्त होगा। लोगों के सम्पर्क में नहीं आने देंगे।

परन्तु हम किसान संघ के कार्यकर्ता स्वयं में एक निश्चय लेकर चले हैं कि हम अच्छे कार्यकर्ता बनेंगे। स्वयं अपने में हम सुधार लाने की कोशिश करेंगे। नई—नई बातें सीखेंगे। हम पांव पोश के समान नहीं हैं जिस पर लिखा रहता 'यूज मी एज आई ऐम' अर्थात् मैं जैसा हूँ वैसा मेरा उपयोग करो। हमारा कार्यकर्ता पांवपोश नहीं हैं। वह ऐसा नहीं कहता कि वह जैसा है वैसा ही रहेगा जो उपयोग करना हो करो। वह अपने में

सुधार करता है जैसी संगठन को आवश्यकता होती है। नई बातें सीखता हैं लेकिन एक व्यवहारिक बात भी है, कुछ आदतें रहती हैं और वह कहता है कि उसकी कुछ सीमायें हैं। मैं धीरे—धीरे कोशिश करूंगा, तो क्या उतने समय तक किसान संघ का कार्य रूका रहेगा। आदत सुधारने में 20 साल लगा तो किसान संघ के कार्य का क्या होगा? काम के लिए भिन्न—भिन्न गुणों की आवश्यकता है। यह आवश्यक है कि अपने सम्पर्क में आने वाले लोगों की खोज करें कि किस में कौन सा गुण है? किसका कौन सा उपयोग हो सकता है? ऐसें लोगों से अलग—अलग सम्पर्क करना। उनकी रूचि किसान संघ के लिए निर्माण करना तथा मधुर सम्बन्धों के आधार पर अपने साथ कार्यकर्ता के नाते खड़ा करना और गुणों के अनुसार कार्यकर्ता को काम में लगाना। तहसीलदार से मिलना है। प्रतिनिधि मण्डल लेकर जाना है। शायद मैं वार्ता नहीं कर सकता। दूसरा सदस्य है, वह अच्छी बातचीत करता है मुझे पता है। अत: उससे मिलकर इस कार्य के लिए इच्छा जागृत करना और कार्यकर्ता के रूप में भेजना।

प्रत्येक स्थान पर भिन्न प्रतिभा के कार्यकर्ताओं की एक टीम खड़ा करना अपना काम है। ऐसी टीम के प्रत्येक व्यक्ति के मन में एक ही ध्येय रहें 'भारतीय किसान संघ।' इन सभी 5—7 कार्य कार्यकर्ताओं की टीम में एक ही मंजिल के राही होने के कारण परस्पर विश्वास हो। कोई गलत फहमी न हो सब मिलकर काम करें, ऐसी ही टीम को मास्टर माइण्ड ग्रुप कहा है। मास्टर माइण्ड ग्रुप का अर्थ है कि अलग—अलग गुण वाले सभी व्यक्ति एक ही ध्येय के पुजारी हैं। सभी परस्पर प्रेम व विश्वास करते हैं तथा सब मिलकर काम करते है। सबके मिलकर काम करने से नई ताकत खड़ी हो जाती है। सबकी अलग—अलग ताकत मिलकर बड़ी ताकत नहीं वरन् संगठन के प्रभाव की अतिरिक्त शक्ति खड़ी हो जाती है। वही मास्टर माइण्ड ग्रुप है। ऐसा ग्रुप हर जगह खड़ा करना है। यह कैसे खड़ा होगा? यह कार्यकर्ता पर निर्भर हैं। कार्यकर्ता जितना निरहंकार रहेगा, वह जितना ध्येय समर्पित रहेग—लोग उसके साथ खड़े होते जायेंगे। ऐसा कार्यकर्ता यदि बहुत ज्यादा जानकारी रखने वाला नहीं हुआ, विद्वान नहीं हुआ तो भी बड़े—बड़े विद्वान भी इसके साथ काम करने के लिए तैयार होंगे। हेंनरी फोर्ड नाम के फोर्डकार के कारखाने के मालिक को आप जानते हैं। 1913 में टी माडल की कार उस कारखाने की थी जिसका ऐक्सीडेण्ट हुआ। उसका मुकदमा चला। न्यायालय में हेनरीफोर्ड को बुलाया गया। दूसरे चालक द्वारा दुर्घटना हुई थी उससे उनका मतलब

नहीं था किन्तु कार के पुर्जों सम्बन्धी जानकारी के लिए उन्हें बुलाया गया था। फोर्ड साहब गवाह के कटघरे में खड़ें हुए। दूसरे पक्ष ने प्रश्न पूछा कि साहब इस बोल्ट के बारे में आपको क्या कहना है? उन्होंने कहा मुझे नहीं मालुम। फिर मशीन के बारे में दूसरा प्रश्न पुछा उन्होंने कहा मुझे नहीं मालुम। ऐसे ही प्रत्येक प्रश्न का उत्तर नहीं मालुम यह देने के कारण जज ने वकील को रोका और पूछा कि किसी मशीन के बारे में अंजान होने पर भी इतना बड़ा कारखाना आप कैसे चला रहे है? फोर्ड साहब ने उत्तर दिया कि किसी मशीनरी के बारे में मैं उत्तर नहीं दे सकता, परन्तु कारखाना चलाने के लिए दूसरी बात की आवश्यकता हैं, जो मैं जानता हूँ। मशीन के भिन्न भिन्न पुर्जों की जानकारी रखने वाले विशेषज्ञों को जोड़ कर रखने तथा काम कराने की योग्यता मुझमें है। मनोवैज्ञानिक आधार पर उन सभी की टीम बना कर काम कराने की पात्रता के कारण मेरा कारखाना चलता है। हमारा कार्यकर्ता भी भिन्न—भिन्न गुण वालों की टीम के रूप में अपने साथ खड़ा कर सकने की क्षमता रखे। इसके द्वारा अपेक्षित कार्य होगा। लेकिन यह सरल नहीं हैं।

आज हर आदमी जल्दी से जल्दी कुछ बनना चाहता है। उसके सामने बड़ा ध्येय नहीं हैं। राष्ट्र का क्या होगा? किसान का क्या होगा? यह विचार नहीं हैं। मैं अपना नाम कैसे रोशन करूं? यही हर एक सोचता हैं। स्वाभाविक है कि अपने सामने यदि कोई नेता बनता हैं तो मैं भी क्यों न बनुं? ऐसा विचार मेरे मन में आता है। यह एम०पी० बनना चाहता या अध्यक्ष बनना चाहता हैं तो मैं क्यों न बनूं? ऐसा प्रत्येक सोचता है। जिस समय व्यक्ति में स्वयं ही पद प्राप्ति की इच्छा जागृत होती है उसमें अहंकार उत्पन्न हो जाता है। वह सहयोगात्मक प्रयत्न नहीं करता है वरन् होड़ करने लगता है। मेरे राजनीतिक क्षेत्र के एक मित्र थे। वे जब कभी भाषण करते थे तो मैं शब्द का प्रयोग बहुत करते थे। एक भाषण के समय परोक्ष से उनका 'मैं' गिनती किया गया तो 60 मिनट के भाषण में 47 'मैं' का प्रयोग आया। अहंकार पूर्ण व्यवहार से दूसरे सहयोगी का भी अहंकार जागृत होता हैं। ऐसे के साथ कोई दूसरा कार्यकर्ता नहीं खड़ा हो सकता। कार्यकर्ता निरहंकारी रहे। इसके कारण उसे यह प्रयास नहीं करना पड़ता कि हर स्थान पर उसी का नाम आगे रहे। आप ऐसे नेताओं को देखें जिनके नाम हम हर समय समाचार पत्रों में देखते थे, वे 5,10 वर्षों में पीछे चले गये। इसका कारण उनका अहंकार हैं। जो निरहंकारी है उसमें भी यह बात खड़ी हो सकती हैं, कि मेरे कारण ही

सब कुछ हो रहा है। किन्तु इससे परे जब कार्यकर्ता सोचता है तब मास्टर माइण्ड ग्रुप खड़ा होता हैं।

अच्छा संगठक श्रेय दूसरे को देता है वह स्वयं नहीं लेता। इस प्रकार सहयोगी कार्यकर्ता भी सोचते है कि यह मेरा काम है इसे मुझे करना है। एक उदाहरण ध्यान में आता है। 1400 साल पहले जब अरेविया में इस्लाम नहीं था। मक्का में वर्षा तो होती नहीं, किन्तु जब होती है तो कठिन हो जाता है। जहाँ वर्षा नहीं होती वहां वर्षा में जो गड़बड़ होती है उसे संभालना कठिन होता है। एक बार जोरदार वर्षा हुई। काबा का पत्थर उस समय भी पूज्य माना जाता था। आज धार्मिक कारण है परन्तु उस समय भी पूज्य था। वहां भवन की दीवार टूट गई तथा पत्थर का स्थान जो पूरब था वह सामने आ गया। मक्का में रहने वाले कोरिश जाति के लोग थे। मक्का जो लोग जाते थे उस भवन में विश्राम करते थे क्योंकि वह पवित्र स्थान था। सब लोगों ने सोचा कि भवन का निर्माण फिर से किया जाय। सब लोगों ने पैसा लगाया। पैसा लगाते समय लोग एक दूसरे के साथ सहयोग करते थे उत्साह से काम करते थे। भवन बन गया। अब एक काम बाकी रहा। सब जाति वाले एक साथ इकट्ठा आये और विचार किये कि काबा का पत्थर जो खिसक कर सामने आ गया है उसको उसी अपने मूल स्थान पर ले जाने वाले के परिवार तथा उसका सम्मान बढ़ेगा। उसकी प्रतिष्ठा बढ़ने का सवाल था। इस परिस्थिति में यह प्रश्न खड़ा हुआ कि कौन इस पत्थर को उठाकर यथा स्थान रखें? परिवार की प्रतिष्ठा बढ़ने के नाम पर स्पर्धा शुरू हुई। सभी अपने परिवार की प्रतिष्ठा चाहने के कारण आपस में 'तू तू, मैं मैं' करने लगे। फिर पंच बैठे। पंचों ने फैसला किया कि हम यह नहीं निश्चित कर सकते कि कौन सा परिवार श्रेष्ठ है, तथा कौन कनिष्ठ है। टास डालने का विचार कर कहने लगे महाद्वार से आने वाला जो पहला आदमी होगा उसी को हम यह मान लेंगे वही आदमी पत्थर उठाकर मूल स्थान पर रखें। थोड़े समय बाद एक जवान लड़का अन्दर आया। सब लोगों ने कहा इसे यह मान देना चाहिए और उसको बताया गया कि वह पत्थर उठाकर उस स्थान पर रखो। वह पत्थर के पास खड़ा हुआ। उसी समय पता लगा कि सबके अन्दर बहुत रोष हैं। उस लड़के को सब प्रकार से प्रतिष्ठा प्राप्त करने का मौका सर्वसम्मति से मिला था किन्तु वह रूक गया और कहा कि मैं आपका बहुत आभारी होऊगां, वैसे मैं उठाने के लिए तत्पर हूँ परन्तु मेरा आग्रह है कि कोरिश जाति के जितने मुखिया है वे आगे आ जाये तथा पत्थर के हर ओर खड़े

रहें। सब लोग आ गये। तब उसने कहा कि हम सब लोग एक साथ इस पत्थर को उठा मूल स्थान पर रखेंगे। यह सम्पूर्ण प्रतिष्ठा उसको व उसके परिवार को मिलने वाली थी किन्तु सभी मुखिया लोगों को सम्मान देकर प्रसन्न कर उसने पत्थर रखवाया। प्रतिष्ठा प्राप्ति में सबको सहभागी बनाया। यही नौजवान आगे चलकर मोहम्मद साहब के नाम से प्रसिद्ध हुआ। किसी भी बड़े संगठक के गुण का परिचय इसी प्रकार मिलता है। हमारे देश में और भी उत्तम उदाहरण है। भगवान श्री कृष्ण गौवर्धन पर्वत स्वयं उठा सकते थें। किसी की सहायता की आवश्यकता उनको नहीं थी लेकिन उन्होंने सोचा कि मैं अकेला उठाउंगा तो अन्य बन्धुओं को उठाने के कारण उनको जो आनन्द होगा उसकी पूर्ति कैसे होगी? फिर आत्मीयता कैसे निर्माण होगी? बड़ा कठिन प्रसंग है। मुसलाधार वर्षा हो रही हैं। गौवर्धन पर्वत ही हमको बचा सकता हैं। सभी मिलकर उसे उठायें। कोई कहता है कि उन्होंने सब लोगों को अपनी लकड़ी लगाने के लिए कहा और ऊपर उठाने की आज्ञा दी। जैसे संकठा जी ने नौ मत का एक मत का खेल बताया था। इसी प्रकार भगवान के कहने पर सबने अपनी अपनी लकड़ी या उंगली लगाई और सब लोगों ने मिलकर गौवर्धन पर्वत को ऊपर उठाया। सबका हौसला बढ़ाने के लिए भगवान ने यह व्यवस्था बनाई संगठन खड़ा करने वाले के अन्दर इस भावना का होना अनिवार्य है बिना इसके कोई टीम नहीं खड़ी होती और न ही मास्टर माइण्ड ग्रुप बनता हैं। हमारा कार्यकर्ता भी अपने को छोटा बना कर (आपन बने दास की नाईं) निरहंकार रह कर, ध्येय समर्पित होकर सभी को साथ लेकर काम चलायेगा तो अनपढ़ रहने पर भी विश्वविद्यालय के कुलपति भी उसकी आज्ञा पर कार्य करेंगे यह हम विश्वास के साथ कह सकते हैं।

हमारी रीति—नीति

मा०ठेंगड़ी जी

जो बात भारतीय किसान संघ की नीति से सम्बन्धित हैं आपके सम्मुख रखना आवश्यक समझ रहा हूँ। आप प्रत्यक्ष काम कर रहे है। अलग अलग प्रदेशों में अलग अलग परिस्थितियां हैं परिस्थिति के कारण कार्यकर्ताओं के मन में कई विचार निर्माण होते हैं तथा सन्देह उत्पन्न होता हैं, उलझनें निर्माण होती हैं। प्रश्न निर्माण होते हैं। उनका जवाब केन्द्र से मिलना सम्भव नहीं है; इसलिए नीति विषयक विचार करने की अपनी पद्धति क्या हैं?उनको बताना मैं आवश्यक समझता हूँ।

भारतीय किसान संघ के विषय में हम यह जानते हैं कि यह कट्टर राष्ट्रवादी किसान संगठन हैं। यह मान्यता रखता है कि किसान—हित व राष्ट्र—हित दोनों एकरूप हैं। हिन्दुस्थान में कई किसान संस्थायें हैं, कई किसान नेता हैं। वे या तो किसी राजनीतिक दल के अन्दर काम करते हैं या किसी दल के साथ न रहते हुए स्वयं राजनीतिक महत्वाकांक्षा रखते है। वे ऐसा समझते हैं कि अन्य किसान संस्थाओं से उनकी स्पर्धा है तथा होड़ लग रही है कि कौन बाजी मार लेगी। इस तरह का एक राजनीतिक विचार उन संस्थाओं तथा नेताओं में हम देखते हैं। ऐसा विचार भारतीय किसान संघ के विषय में हम लोगों के मन में संस्थागत अहंकार नहीं हैं। हम भारतीय किसान संघ के लिए सब कुछ करने के लिए तैयार हैं क्योंकि हम इसको किसान की सेवा का, राष्ट्र—सेवा का अच्छा माध्यम समझते है। भारतीय किसान संघ ध्येय नहीं है साधन है ध्येय राष्ट्र है तथा राष्ट्र के अन्दर किसान हित को अपना ध्येय राष्ट्र है तथा राष्ट्र के अन्दर किसान हित को अपना ध्येय मानते हैं तथा राष्ट्र के अन्दर किसान अत: उसका कल्याण। चूंकि हम राष्ट्रहित और उसी के अन्दर किसान हित को अपना ध्येय मानते है तथा भारतीय किसान संघ को साध्य के लिए माध्यम या साधन मानते है इसलिए हमारे मन में इसके लिए संस्थागत अहंकार नहीं है।देश और किसान के कल्याण हेतु जब तक हम किसान संघ को पाते है तब तक हम उसके लिए सब कुछ करने को तैयार हैं। कल यदि किन्हीं

कारणों से ऐसा हुआ जो सम्भव नहीं है फिर भी यदि साधन ही साध्य बनकर देश का नुकसान करे तो ऐसी परिस्थिति हमारे बर्दाश्त के बाहर होगी। उन संस्थाओं के कार्यकर्ताओं तथा अपने कार्यकर्ताओं की मन:स्थिति में अन्तर है। हमारे अन्दर संस्थागत अंहकार नहीं है अत: हमारी किसी संस्था से स्पर्धा नहीं है। दूसरी भी बात है। राष्ट्र या किसान की सेवा करने में स्पर्धा किस बात की और 10 लोग सेवा करें अच्छा ही है। किसान क्षेत्र इतना विस्तृत हैं कि जितनी संस्थाओं व नेता कार्य कर रहे है उनके अतिरिक्त 1000 गुना अधिक काम करने वाले लग जाये तब भी पार पाना कठिन है। यदि सेवा मात्र ही करना है तो स्पर्धा क्यों की जाय? हम तो सबका स्वागत करते हैं। जो किसान क्षेत्र में नहीं हैं उन्हे भी कहते हैं कि आप आवें और लग जायें। 1000 संस्थायें भी बन जायं तो भी हम उनका स्वागत करेंगे।

तीसरी बात यह है कि सभी किसान संस्थायें तथा काम करने वाले सभी किसान नेताओं का उद्देश्य व हमारा उद्देश्य एक जैसा नहीं है। उनका लक्ष्य व हमारा लक्ष्य अलग अलग है। सभी किसान संस्थायें रहने पर उनके व हमारे मन में समानभाव नहीं है। हमारा उद्देश्य राष्ट्र हित के अन्दर किसान हित है। मैं विश्वासपूर्वक यह कह रहा हूँ कि अपने देश में इतना शुद्ध राष्ट्रभाव रखकर कार्य करने वाली भारतीय किसान संघ छोड़कर अन्य संस्थायें नहीं है। संस्थायें व नेता वर्तमान समय में बढ़े अवश्य है किन्तु राष्ट्र हित इतना प्रखर प्रगट करने वाले कोई नहीं है। यह किसी के लिए कोई चुनौती नहीं है। हमारे ऊपर ऐसी पद्धति का संस्कार हैं जैसे एकादशी के दिन कहते है कि विष्णु जी सबसे बड़े है, शिवरात्रि के दिन कहते है कि शिव जी बड़े है और गणेश चतुर्थी को गणेश जी को बड़ा मानते हैं। इस प्रकार सबको महत्व देने में हमें कोई आपति नहीं है किन्तु जिस पद्धति से उनका प्रयत्न चल रहा है उसमें कोई पद प्राप्त करने की लालसा है। जिस दल से वे सम्बन्धित है उसको बढ़ाने या जिताने के लिए किसानों के दु:ख दर्द का नाजायज फायदा उठाने का विचार रख कर काम कर रहे है। ऐसा सम्भव है कि कोई व्यक्तिगत रूप में किसान का हित सोचता हो वह अपवाद होगा। हम किसी भी पद या राजनीतिक लाभ लेने की इच्छा से कार्य नहीं करते अत: किसी से होड़ का प्रसंग ही नहीं उत्पन्न होता। हमारा कोई भी कार्यक्रम विधायक बनने का नहीं है इसलिए कोई भी हमारे निकट यह इच्छा रखकर आयेगा ही नहीं। यहाँ देने

की बात होती है। लेने के लिए कुछ भी नहीं है। राष्ट्र हित ही सदैव ध्यान रखकर हम कार्य करें इसमें कहीं स्पर्धा नही हैं।

कुछ प्रदेशों में दूसरा भी सवाल चलता हैं। हमने कहा है कि हम किसानों को स्थायी शक्ति का निर्माण करना चाहते हैं। यह ठीक है कि तात्कालिक समस्यायें आती हैं। उसके लिए कभी आन्दोलन करना पड़ता है। रचनात्मक कार्य होता हैं लेकिन हम यह चाहते है कि किसानों की स्थायी शक्ति का निर्माण हो। इस दृष्टि से जब तक भारतीय किसान संघ सर्व—दूर एकमात्र प्रबल शक्ति के रूप में नहीं आता तब तक स्थान—स्थान पर प्रदेश—प्रदेश में जो किसानों की समस्यायें निर्माण होती हैं उनके बारे में क्या किया जाये? यह प्रश्न हैं? अभी किसान संघ की बाल्यावस्था है। इसी कारण हमारी शक्ति कुछ पाकेट में हैं। हम चाहते हैं कि अखिल भारतीय स्तर पर सर्वदूर हमारा शक्ति केन्द्र निर्माण हो। वह स्थिति आने में अभी देर हैं। उतनी देर तक समस्यायें राह नहीं देख सकतीं। ऐसें समय अन्य संस्थायें यदि किसी समस्या को लेकर खड़ी होती हैं तो क्या हम उन्हें सहयोग करें या हम किसी समस्या को लेकर खड़े होते हैं तो उनसे सहयोग की मांग हम करे।

सहयोग या संयुक्त मोर्चे के बारे में हमारी क्या नीति है यह भी एक दूसरा प्रश्न हैं। आप जानते है कि भारतीय मजदूर संघ एक संस्था मजदूर क्षेत्र में कार्यरत हैं। मजदूर संघ ने संयुक्त मोर्चे के बारे में अपनी नीति निश्चित की हैं। मांग यदि ठीक है तथा सभी संगठनों के नेता विस्तार से आन्दोलन की रूप रेखा एक मत होकर निश्चित करते हैं। तात्पर्य यह कि मांग ठीक हो तथा आन्दोलन में विधि—निषेध क्या रहेंगे? क्या करना, क्या नहीं करना हैं? सभी विषयों पर सबकी स्वीकृति हो। ऐसा होने पर संयुक्त मोर्चा सबके साथ बन सकता है। संयुक्त मोर्चा बनाने में कोई हिचकिचाहट नहीं है। मजदूर क्षेत्र में तो सबको ज्ञात हैं। कम्युनिस्टों के साथ मोर्चा बनाने में सबका कहना था कि इनके साथ मोर्चा बनाने वालों को इन्होंने समाप्त कर दिया। कई वर्षो से दोनों कम्युनिस्ट पार्टियों से मजदूर संघ का संयुक्त मोर्चा चल रहा है किन्तु उनकी ताकत घटी हैं तथा मजदूर संघ की ताकत बढ़ी हैं। हमारा कहना हैं कि कार्यकर्ता यदि ध्येयनिष्ठ है, योग ठीक है, आन्दोलन की रूप रेखा विस्तार से बनाकर सबकी सहमति हुई है तो शैतान के साथ भी संयुक्त मोर्चा बनाने की अनुमति हैं। हम ध्येयवादी रहे तो शैतान को भी खा जायेंगे। यदि पत्थर जैसी कोई चीज होगी तो उसे भी खा लेंगे। हमारा कुछ नहीं बिगड़ेगा वरन्

दूसरे को अपना दांत देखना पड़ेगा। मोर्चा बनाते समय अपनी मूल रीति नीति ध्यान में रखकर रूप रेखा निश्चित करने की सतर्कता अवश्य रहे।

कई प्रदेशों में शरद जोशी का नाम पुछते हैं। पहले नारायण स्वामी नायडु का नाम पुछते थे। अब वे नहीं है। दुख की बात हैं। अब शरद जोशी के बारे में पुछा जाता है कि भारतीय किसान संघ का मत क्या है? आपका मत क्या है? मुझे स्मरण होता हैं कि कुछ वर्ष पूर्व यही प्रश्न मुझे दिल्ली में मजदूर संघ के कार्यालय में पुछा गया था तथा पुछने वाले भी श्री शरद जोशी ही थे। उन्होंने स्वयं ही पुछा था कि मेरे बारे में आपका क्या मत हैं? जैसे ही उन्होने प्रश्न किया उनके साथ उनके तीन साथी और थे माधव राव खण्डे राव मीरे तथा माधव राव बोरान्ते और एक थे। प्रश्न के बाद में देखता रहा क्योंकि सामान्यतया स्वयं के बारे में ऐसा कोई नहीं पुछता। उन्होंने कहा कि मेरे बारे में आपकी क्या राय हैं? मैंने कहा आप अपना हेतु स्पष्ट करिये। उन्होंने कहा कि मेरे बारें में कुछ गलत प्रचार हो रहा हैं। आप उस प्रचार को गलत समझते है या सही समझते हैं? मैंने कहा कि मुझे कोई प्रचार नहीं सुनाई पड़ा। वे बोले, कहा जा रहा हैं कि शरद जोशी सी०आई०ए० के एजेण्ट हैं। मेरी नौकरी बहुत ही लाभ की अमेरिका में थी। इतनी लाभदायक नौकरी छोड़कर केवल किसानों का कल्याण करने मैं यहा आया हूँ तो भी कुछ लोग ऐसा सन्देह करते है कि इतनी बड़ी नौकरी छोड़कर ये यहाँ क्यों आये हैं? अभी किसानों में काम करके प्रभाव जमाना, फिर सी०आई०ए० के माध्यम से अमेरिका को लाभ पहुंचाना ऐसी इनकी योजना होंगी। दूसरा यह है कि शरद जोशी अभी किसानों में अपना प्रभाव बना रहे हैं, अपने को अराजनीतिक बताते हैं, परन्तु बाद में काम बढ़ने पर उसका लाभ राजनीति के लिए लेंगे। इन दोनों विषयों पर अपनी राय बतावें। मैंने कहा आप सी०आई०ए० के एजेण्ट हैं ऐसा किसी ने सबूत मेरे समक्ष कभी पेश नहीं किया अत: ऐसी स्थिति में मैं यह नहीं कह सकता कि आप सी०आई०ए० के एजेण्ट हैं। बाद में यदि किसी ने ऐसा सबुत पेश किया तो मैं आपको सी०आई०ए० का एजेण्ट कहने से चुकुंगा भी नहीं। हमारा कहना हैं जब तक सबुत नहीं हम क्यों कहेंगे और सबुत के बाद कहने में संकोच क्य हैं? जहाँ तक राजनीतिक लाभ का सवाल हैं तो अब तक आपने लाभ नहीं उठाया और जब राजनीतिक लाभ उठायेंगे तो उस समय यह भी स्पष्ट कहेंगे 'यह वार्ता नासिक आन्दोलन के समय की हैं'

इसके बाद उन्होंने कहा आपने तो उत्तर न देकर टाल दिया है तो मैंने कहा कि यही सत्य है। मैंने टाला नहीं है।

अब संयुक्त मोर्चा या विलयन अर्थात् एक संस्था दुसरी संस्था में विलीन कर देना। दोनों संस्थाओं का एक रंग हो जाय ऐसे कई विकल्प सम्भव है। कुछ मित्र सदभावना से शरद जोशी के काम को ठीक कहते है। वामपंथी लोगों के समान आन्दोलन उन्होंने नहीं किया। किसानों को प्रशिक्षित किया। यह उनको प्रतिष्ठा देने की बात हैं। नासिक के आन्दोलन में किसान संघ के लोग भी सत्याग्रह करके जेल गये किन्तु कोई निशान नहीं था। उन्होंने स्वीकार किया और कहा कि मालुम है। उस समय मेरी ओर से कोई स्पर्धा का भाव नहीं रहा। इसलिए संयुक्त मोर्चा इस प्रकार का बन सकता है। बाद में जोशी जी के मित्रों ने कहा कि संयुक्त मोर्चा से काम नहीं होगा। आप सोचते है कि जोशी जी का काम अच्छा हैं तो उनकी संघटना में आप विलीन क्यों नहीं हो जाते ? हमने कहा कि उनके काम का स्वरूप सीमित है परन्तु हमारे कार्य का स्वरूप अखिल भारतीय है। पंजाब में उनके प्रति जो निष्टा है वह भी उनके कारण नहीं है। पंजाब में किसान युनियन भुपेन्द्र सिंह मान के कारण है। वह पहले से चल रही हैं। भुपेन्द्र सिंह के मन में यह भावना रही है किसी अखिल भारतीय नेता का संरक्षण उनकी ख्याति बढ़ायेगा। इसीलिए उन्होंने पहले नारायण स्वामी नायडु का पल्ला पकड़ा और अब उनकी मृत्यु के पश्चात् शरद जोशी से हाथ मिलाया है। वहां जो कुछ है वह भुपेन्द्र सिंह का बल है। श्री जोशी का कुछ भी नहीं है। अभी अखिल भारतीय प्रसिद्धि अवश्य है किन्तु कोई आधार नहीं है।

दूसरी बात यह है कि इन परिस्थितियों में विचार करते समय हमारा कार्यकर्ता कौन सी बात ध्यान में रखे। जैसे मैंने कहा कि हमारी किसी के साथ स्पर्धा नहीं है। हम कोई अच्छा काम करते हैं, आन्दोलन करते है रचनात्मक काम करते हैं तो हमें किसी नेता का सहयोग लेने में कोई संकोच नहीं है। दूसरे किसी के आन्दोलन में सहयोग देने में भी हमें कोई हिचक नहीं है। न तो उनके नेतृत्व में काम करने में कोई बाधा है। विलीनीकरण के प्रश्न के समय लोग लम्बा नहीं सोचते। खाली तात्कालिक आवेश में आकर इसका विचार कर लेते हैं किन्तु दूरगामी परिणाम नहीं सोचते। पूर्व के इतिहास को देखना चाहिए कि विलीनीकरण का क्या फल हुआ हैं? विलीनीकरण तभी हो सकता है जब हमें यह पूरा विश्वास हो कि हमारा लक्ष्य व उनका लक्ष्य समान हैं। हमारी

पद्धति रीति—नीति के समान उनकी भी हैं। हमारे व उनके सोचने के ढ़ंग समान हैं। पुरी तरह से एकात्मता होने का जब विश्वास होगा तब विलीनीकरण सम्भव हैं। नहीं तो क्या होता हैं जैसे जल्दबाजी में शादी कर लेना फिर जीवनभर पछताते रहना ऐसी एक कहावत हैं। विलीनीकरण का यही अनुभव हैं। इसलिए विलीनीकरण ठीक नहीं हैं।

डा०बाबा साहब अम्बेडकर श्रेष्ठ राजनीतिज्ञ थे। उनके समय कांग्रेस का दबाव आ रहा था कि शेड्युल्ड कास्ट फेडरेशन को कांग्रेस में विलीन कर दो। महाराष्ट्र के शेतकरी पक्ष के कई नेता कांग्रेस में मिले थे। शेड्युल्ड कास्ट फेडरेशन की मीटिंग भी हुई थी। विदर्भ के सम्बन्ध के कारण मैं भी उस मीटिंग में था। बाबा साहब ने कहा कि कांग्रेस के साथ सहयोग करना न करना अलग सवाल है। हो सकता है फेडरेशन की हमारी झोपड़ी है और कांग्रेस का महल होगा। हम अपनी झोपड़ी तोड़कर कांग्रेस के महल में जाने का प्रयत्न करें तो हमको पछताना होगा। इसलिए हम उनके साथ सहयोग कर सकते हैं परन्तु झोपड़ी न तोड़ें। उन्होंने उदाहरण दिया कि महाराष्ट्र का जो ब्राह्मणेतर पक्ष था उसने लालच में आकर अपने को खत्म कर दिया और कांग्रेस में मिले किन्तु कोई लाभ नहीं ले पाये और कहीं के नहीं रहे। माया मिली न राम। बाबा साहेब ने कहा कि झोपड़ी कायम रखें आवश्यकता हो तो सहयोग करें। इसी प्रकार 1977 में जल्दबाजी में विलीनीकरण हुआ। उसका परिणाम ज्ञात है। सहयोग भी सावधानी से किया जा सकता हैं। इसका एक अच्छा उदाहरण कम्युनिस्ट चीन के नेता माओत्सेतुंग के जीवन में आता हैं। जापान का आक्रमण हुआ। जापान के आक्रमण के समय अकेले च्यांगकाई शेक थे। वे ही सत्ताधारी थे। अकेले अपनी सेना के सहारे जापान के आक्रमण का मुकाबला नहीं कर सकते थे। माओं की सेना बहुत छोटी थी। लाल सेना भी मुकाबला नहीं कर सकती थी। यदि संयुक्त होकर कार्य नहीं करते तो पुरा चीन जापान के अधिकार में होना सम्भव था। माओ ने च्यांगकाई शेक को संदेशा भेजा कि हम आपके मातहत काम करने के लिए तैयार है। आप हमारे सेनापति हैं। च्यांगकाई शेक ने कहा कि माओ मेरे लिए यदि काम करना चाहते हो तो लाल सेना बर्खास्त कर दो और हमारी सेना में सबको भेज दो। माओ ने कहा यह नहीं होगा। हमारी लाल सेना अपना स्वतंत्र अस्तित्व कायम रखेगी लेकिन हम एक सम्माननीय शब्द आपको दे रहे है कि आप हमारे सेनापति है आप जो आज्ञा देंगे हम वही करेंगे। उसके बाहर नहीं जायेंगे। हमारी लाल सेना का स्वतंत्र अस्तित्व रहेगा।

भारतीय किसान संघ के विलीन होने की जो बात करते है वह ऐसी है जैसे चाकू खरबुजे पर पड़े या खरबुजा चाकू पर पड़े नुकसान जिसका होना है होगा। जब तक पूरी जानकारी न हो विलीनीकरण की वार्ता ठीक नहीं हैं। जो संगठन नेता के करिश्मा पर आधारित है तथा उसका स्पष्ट कोई चित्र नहीं है उसके बारे में विचार करने की आवश्यकता नहीं है। भले ही हम उनकी योग्यता की प्रशंसा सुने। जो बन्धु शरद जोशी के कार्य से प्रभावित होकर विलीनीकरण की बात सोचते है उसके बारे में यही ध्यान रखना है, कि जब तक उनकी आगे की योजनायें स्पष्ट न हों सहयोग लेना देना चले किन्तु अन्य कुछ न सोचा जाय।

हम किसानों की स्थाई शक्ति देश में खड़ी करना चाहते है अत: हमारा प्रमुख आग्रह संगठन के लिए है। हमारे कार्यकर्ता वाई—फोकल चश्मा लेकर चलें। वाई फोकल चश्मा ऐसा है जिससे दूर का भी दिखता है तथा निकट का भी दिखता है। जो तात्कालिक समस्यायें किसानों की है उस पर भी हमारा ध्यान रहे तथा उनके निवारणार्थ भी हमारी योजना रहे। आगे चलकर भी किसान का भला किसमें हैं? उसकी भी रीति नीति निश्चित करें। लम्बी दृष्टि हम रखें। इसीलिए हमने दूर व निकट देखने वाला चश्मा पहनने के लिए कहा। इस दृष्टि से आन्दोलन की भी आवश्यकता हो सकती है लेकिन अन्य लोगों से इस विषय में हमारी भूमिका कुछ भिन्न है। उसका कारण यही है। हम किसान संघ को एक साधन या माध्यम समझते है। हिन्दुस्थान में किसन संघ राष्ट्रीय शक्ति की एक सेना है। आप जानते है कि किसी भी लड़ाई में सेना के विभाग अलग अलग मोर्चो पर लगाये जाते है। जैसे हिटलर की सेना का एक भाग फ्रांस के मोर्चे पर था, एक रूस के मोर्चे पर, एक भाग अफ्रीका के मोर्चे पर था। अलग अलग मोर्चे थे, अलग अलग सेनापति थे किन्तु सेना एक थी। हिन्दुस्थान की राष्ट्रीय शक्ति की सेना एक है लेकिन अलग मोर्चो पर लगी हुई है। किसान मोर्चे पर राष्ट्रीय शक्ति की लगी हुई सेना ही किसान संघ है किन्तु एक एक मोर्चे पर पूरी सेना नहीं है। सम्पूर्ण योजना का एक हिस्सा है। एक अंग है। इसी तरह से राष्ट्र सेवा का एक माध्यम समझ कर हम किसान संघ की ओर देखते है। हम संगठन को ही महत्व देते है। स्थायी शक्ति खड़ी हो उसके लिए आन्दोलन करें। केवल आन्दोलन के लिए आन्दोलन नहीं। तात्कालिक समस्याओं को हल करने के लिए आन्दोलन करें जिससे संगठन बड़ा हो। यह भी दृष्टि रखें कि इसमें से कार्यकर्ताओं की संख्या बढ़ेगी तथा संगठन बढ़ जायेगा

तब बड़ा आन्दोलन कर सकेंगे फिर अधिक कार्यकर्ता होंगे और संगठन अधिक बढ जायेगा। अर्थात् संगठन आन्दोलन—संगठन हमारा हेतु है। इसी प्रकार रचनात्मक कार्य की भी हमारी यही दृष्टि है। संगठन—रचनात्मक कार्य—संगठन हमारी योजना है। माने रचनात्मक कार्य करना उसके बल पर संगठन बढ़ाना। संगठन द्वारा रचनात्मक कार्य करना फिर संगठन बढ़ाना।

लोग पूछते है कि आप संघर्षवादी हैं या समन्वयवादी हैं? मैंने कहा हम दोनों नहीं है क्योंकि वादी का मतलब होता है कि केवल वही वाद करना। हम संघर्ष व समन्वय दोनों की क्षमता रखते है। कार्य की सफलता के प्रयास में प्राथमिकता समन्वय के लिए है किन्तु संघर्ष भी उसी हेतु से करेंगे कि कार्य सफल हो। किसानों की समस्याओं का निराकरण हम करेंगे यह निश्चित है यही हमारे कार्य की पद्धति है। आन्दोलन की दृष्टि से सोचने का ढंग हमारा खुला सा है। जो संगठन नही चाहते ऐसे नेता लोग किसी भी कार्य क्षेत्र में होगे आन्दोलन का उपयोग अपनी प्रसिद्धि प्रतिभा वृद्धि, व प्रचार के लिए करते है। इसके कारण नेता का नाम बढ़ जाता है, बहुत बड़ा हो जाता है। आन्दोलन कभी सफल हो सकता है, कभी असफल भी हो सकता है। आन्दोलन की सफलता असफलता पर नेता की श्रेष्ठता या कनिष्ठता हम नहीं मानते। मान लीजिए आन्दोलन असफल हो जाता है और किसानों की पिटाई होती है तो भी नेता जी का कुछ भी नहीं बिगड़ता। नेता का नाम तो समाचार पत्रों में छपता है और लोग समझते है कि ये बड़े नेता है। इस प्रकार अखबार में पढ़ने के कारण दूसरी व तीसरी जगह लोग बुलायेंगे कि ये बड़े नेता हैं। किसान की चाहे जितनी पिटाई हो नेता जी का कुछ भी नहीं बिगड़ता। ऐसे एक नेता है जो कई जगह आन्दोलन खड़े कर चुके है। कई जगह पिटाई भी हुई है।। इसमें उन्हें कोई दुख की बात नहीं लगती। हमने उनको पुछा कि आप संगठन क्यों नही खड़ा करतें उन्होंने कहा इसका कारण है। आप भारतीय किसान संघ इसलिए खड़ा कर रहे कि आप लोगों को पहले से जानते है। इसी कारण आपका पूर्व परिचय है। मेरा वैसा तो परिचय नहीं है। अब यदि मैं संगठन खड़ा करूगां तो उसमें कौन लोग आयेंगे? गांव के आयेंगे परन्तु आज मैं नेता हूँ, लोग भाषण सुनते है और वे मेरे अनुयायी होते है। नेता व अनुयायी का संबंध यहाँ आ जाता है। संगठन खड़ा होने पर जगह इकाइयां बनेगी। ग्राम की इकाई, विकास खण्ड की इ्काई, जिले की इकाई आदि बनेगी। अब हर जगह मेरा तो परिचय नहीं है। इसलिए स्थान पर निहित—स्वार्थ लेकर

बैठे अन्य नेता उसके प्रमुख बन जायेंगे। इस प्रकार स्थानीय कामों की सफलता का सारा श्रेय उनको मिलेगा। फिर संगठन पर मेरा नियंत्रण नहीं रहेंगा। निहित स्वार्थी लोग सब जगह ग्राम से प्रान्त तक प्रभावी होंगे। मेरा भला इसमें कहां है? मेरा भला तो इसमें है कि मैं नेता हूँ तथा लोग अनुयायी है। नेता लोग संगठन इसलिए नहीं चाहते कि उनपर बाकी लोगों का कुछ नियंत्रण आ जाता है। आपने सम्पूर्ण वृत्त कथन में अनुभव किया होगा कि आन्दोलन हुए किन्तु संगठन के अभाव में हम उसका लाभ न ले सके। नेताओं की कहानी जानकर मुझे बचपन में सुनी हुई एक घटना याद आती हैं। यह शिवाजी के बारे में है। आज एक आन्दोलन जैसे एक जगह खड़ा करते है, कुछ दिन बाद दूसरी जगह करते है। उसी स्थान पर कुछ उसका लाभ लेकर निर्माण नहीं करते हैं। इनको केवल यही फिकर रहती है कि अखबार में नाम आता है अत: सब ठीक है। शिवाजी को भेष बदलकर प्रजा से जानकारी प्राप्त करने का शौक था। एक बार ऐसे ही वे भेष बदल कर घुम रहे थे। घोड़े पर घूमते घूमते रात हो गई। वहां जंगल में एक दीपक टिमटिमाता दिखा। वहां एक बुढ़िया रहती थी। उसके पास पहुंचे तो बुढ़िया ने कहा इतने अंधकार में कहां जा रहे हो? शिवाजी ने कहा कि मुझे रास्ता नहीं मिल रहा है। बुढ़िया उन्हें अन्दर अपनी झोपड़ी में ले गई और कहा कि कुछ खाकर यहीं सोवो प्रात: जाना। उसने भोजन की व्यवस्था की। तथा उनको भोजन करने के लिए बैठाया। बुढ़िया ने उनके पास दोना रखा। दोना ठीक नहीं बना था अत: कढ़ी पड़ते ही लुढ़क गया। दोनों को रखते समय चारों ओर चावल लगा लेते है ताकि वह सीधा रहे। शिवा जी दोने को हाथ से पकड़ कर जब रखते थे वह ठीक रहता था परन्त छोडते ही पुन: लुढ़क जाता था। इस प्रकार दो तीन बार हुआ तो बुढ़िया ने कहा कि तुम भी शिवा जी के समान दिखते हो। शिवा जी को आश्चर्य हुआ और पूछे यह कैसे? तो बुढ़िया ने कहा कि वह एक किला लेता है, छोड़ देता है। फिर दूसरा लेता है तब तक पहले वालों को शत्रु ले लेता हैं। वह जीतकर व्यवस्था नहीं करता। बुढ़िया की सीख शिवाजी ने ध्यान में ली और निश्चय किया कि एक बार जिस किले को लिया और झण्डा गाडा वह सदैव अपने अधिकार में रहे ऐसी व्यवस्था आवश्यक है।

आज अनेक नेता संगठन की चिन्ता छोड़ अपनी प्रतिमा बनाने में लगे हैं। परन्तु यह ठीक नहीं है। संगठन स्थायी शक्ति है। नेता रहे या न रहे परन्तु संगठन आवश्यक है। संगठन में सभी ध्येय के लिए कार्य करते रहे है। कोई भी व्यक्तिनिष्ठ नहीं वरन् ध्येयनिष्ठ

है। इस प्रकार के समर्पित जीवन वाले कार्यकर्ताओं की टीम हर जगह हो। जब ऐसे कार्यकर्ताओं का जाल जगह जगह खड़ा होता है तो किसी नेता के आने जाने से कोई फरक नही पड़ता है। कोइ् बड़ा नेता आयेगा तो लाभ हो सकता है किन्तु किसी के जाने से कोई हानि नहीं होगी। स्थायी शक्ति का निर्माण हमारा उद्देश्य होने के कारण जब हम आन्दोलन के बारें में सोचते है तब हम उससे किसानों की समस्याओं के निराकरण का विचार करते है। उसके बाद संगठन बढ़ाने की योजना करते हैं। संगठन हमारा मुख्य मुद्दा है।

इसी प्रकार रचनात्मक कार्य के बारे में भी हम सोचते है। आपको आश्चर्य होगा परन्तु हमें ध्यान रखना है कि अभी हमारा कार्य बाल्यावस्था में है। क्षणिक चिन्तन उपयुक्त नहीं होगा। क्षणिक चिन्तन वालों को सनसनीखेज बातें बहुत अच्छी लगती हैं। जब मैं बीमार था। उड़ीसा में कटक के पास राष्ट्रीय प्रबन्ध समिति की बैठक थी। एक आकर्षक सुझाव था कि हमको रचनात्मक कार्य में सहयोग देना चाहिये। मैं उस बैठक में उपस्थित नहीं हो सकता था, अत: मैंने पत्र लिखा। उसका अन्तिम भाग यह था कि इस समय केवल संगठन कार्य ही करने का निर्णय लेना उपयुक्त होगा। मेरे स्पष्ट लिखने के कारण कुछ लोगों ने बाद में कहा कि यह उपयुक्त नहीं था। सारी दुनिया रचनात्मक कार्य की प्रशंसा करती है और आप उसको रोक रहे है। मैंने कहा कि हम आगे रचनात्मक कार्य करने वाले है। अपनी ताकत के अनुसार ही हमें कार्य करना हैं। हमें सब कार्य करना है किन्तु संगठन प्रथम आवश्यक है। हमारी जितनी ताकत होगी, उतना आन्दोलन करेंगे या रचनात्मक कार्य करेंगे परन्तु किसी लाभ में नहीं फंसेंगे। मैं स्पष्ट बताना चाहता हूँ कि आज भी हमारी क्षमता इतनी है कि यदि हम चाहें तो कोई भी लुभावना आन्दोलन या रचनात्मक कार्य ले सकते है तथा प्रचार के साधन जैसे अखबार, रेडियो या टेलीविजन पर चमक सकते है। यह होने पर शीघ्रता से हम चमक जायेंगे किन्तु संगठन ठप हो जायेगा तथा हमारी वर्तमान शक्ति भी नष्ट हो जायेगी। थोड़े समय के लिए चमकना हमारा उद्देश्य नहीं है। इसलिये ऐसा उपक्रम हमने हाथ में नहीं लिया है। यही हमारी नीति व रीति है कि संगठन पर मुख्य दृष्टि है, वह हमारे कार्यकर्ता सदैव ध्यान रखें। सब लोगों ने देखा होगा कि कोई भी पहलवान दंगल में जाने के पहले घर पर रियाज करता है अपनी ताकत बढ़ाकर दंगल में उतरता हैं। समर्थ गुरू रामदास ने 300 वर्ष पहले कहा है कि अभ्यास पूर्ण होने पर हमको प्रत्यक्ष संघर्ष

में आना चाहिये या प्रचार में बढ़ना चाहिये। पुरी ताकत न होने पर भी यदि हम ख्याति के चक्कर में पड़े तो हमारा सारा कार्य नष्ट हो जायेगा। इतने वर्ष पूर्व कही हुयी बात भी आज के लिये उतनी महत्वपूर्ण एवं सत्य है। आज हम जगह—जगह छोटी कुश्तियां कर रहे है, रियाज कर रहे हैं, थोड़े ही समय में हम बड़े दंगल में उतरेंगे। जल्दबाजी की कोई जरूरत नहीं है। हेसेन्स स्लोली यह हमारा नारा हैं। धीरे—धीरे जल्दी करो। इसका अर्थ यह है कि हमें जल्दी तो करना है किन्तु धीरे धीरे करना है। जल्द बाजी नहीं हैं, किन्तु सुस्ती भी नहीं है। यही हमारी नीति हैं। सभी कार्यकर्ता नीति के नाते इन सारी बातों को ध्यान में रखकर कार्य करें।

भारतीय किसान संघ के इस अभ्यास वर्ग में हम नया रंग ग्रहण करने के लिये आये हैं किन्तु पहले से ही हम लोग अपने कपड़ों पर मैला रंग लादकर लाये हुये हैं। उसको प्रथम साफ करना होगा। जगह—जगह से कुछ बातें भी सीखकर आये हैं, उन्हें भुलना होगा। हम भुलेंगे नहीं तो नई बात यानी किसान संघ की बात सीख भी नहीं पायेंगे। यहाँ की बातें समझ भी नहीं सकेंगे। इसके दो कारण हैं। एक तो यह है कि व्यक्तिगत जीवन में हर एक के अलग—अलग अनुभव होते हैं, उसी के आधार पर वह नई चीज को देखता है। इस प्रकार जो भी कलुष होगा या पूर्ण जीवन किसी का दुखमय होने के कारण मन में बड़ा क्लेश रहता हैं या अन्याय अत्याचार बर्दाश्त कियें रहने पर मन में क्रोध रहता हैं। ऐसे विकारों को भी भूलना पड़ेगा। इससे भी ज्यादा आज के वायुमण्डल में जो जीवन मूल्य हैं, उनका कुप्रभाव भी हमारे ऊपर हो सकता हैं। राजनीति के कारण ये मुल्य विशेष गिरे है। सारा सार्वजनिक जीवन प्रभावित हैं। अत: हमारे मन के कपड़े पर जो मैला रंग चढ़ा है, उसे भी धोना अनिवार्य हैं। इन जीवन मूल्यों से हमारे जीवन मूल्य बिलकुल अलग हैं। बाहर के जीवन मूल्य क्या है? वहां आदमी को व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा रखने की छुट हैं। मैं बड़ा हूँ। मैं कुछ न कुछ बनुंगा। बड़ा कौन? जो बड़े मोहरे पर हैं। इसको बड़ा कहा जाता हैं।

व्यक्तिवाद जीवन में आने के कारण स्वयं को ही केन्द्र बनाकर कार्य करना। मेरे सुख के लिये परिवार हैं। संस्था भी मुझे बड़ा बनाने के लिये हैं। मुझे प्रधानमंत्री बनाने के लिये भारत देश का जन्म हुआ है। जो कुछ है वह मुझे बड़ा बनाने के लिये है, ऐसी धारणा

हैं। यह आज का जीवन—मूल्य है। लोग भी यही समझते है कि जिसके पास कोई बड़ा पद है, वही बड़ा आदमी हैं। वास्तव में यह भारतीय जीवन मूल्य नहीं हैं।

जिन लोगों ने बड़ा काम किया है वे व्यक्तिवादी नहीं थे। वे स्वयं को भुलने वाले थे। ध्येय में इतने लीन हो जाते थे कि अपने बारे में सोचने के लिये उनको समय ही नहीं मिलता था। जहाँ आज का राजनीतिक नेता चौबीस घंटे तिकड़मबाजी सोचता है, किसी की टांग खींचकर अपने बड़े स्थान पर पहुंचना चाहता है, पहले के लोग हो गये जिन्होंने बड़े होने का विचार भी नहीं किया। हमेशा ध्येय का विचार किया। अलग—अलग क्षेत्र के लोग स्वयं अपने को भूल जाने वाले हुये। जो बड़े—बड़े शास्त्रज्ञ हुये, जिन्होंने मानव जाति पर उनकार करने वाला अन्वेषण किया है। क्या वे ऐसा सोचते थे कि मेरानाम सर्वोपरि हो? ऐसा नहीं था। हरेसिन के बारे में कहते हैं कि वे कोई प्रयोग कर रहे थे, उसी समय उनको कुछ धन की आवश्यकता हूई। वे अपनी पास बुक लेकर पोस्ट आॅफिस गये परन्तु प्रयोग में ही रमे रहे। जब लाइन में खड़ें हुये उस समय भी प्रयोग करते रहे। लाइन में खड़े रहकर अपना नाम ही भुल गये। नम्बर आने पर विजिटिंग कार्ड से अपने नाम की जानकारी करने की सोचे तो पीछे वाले ने उन्हें उनका नाम बताया। जो बड़े रहते हैं, वे अपने को भूल जाते हैं, इसीलिये कहा है कि एक कौआ शिखर पर बैठा किन्तु गरूड़ नीचे मैदान में बैठा है तो क्या कौआ गरूड़ से बड़ा माना जायेगा? हमारे यहाँ मंत्री आदि का मूल्य नहीं है। वह कहां बैठा है इसका मूल्य नहीं हैं। उसके अन्दर क्या हैं? उसका मूल्य है। सभी अपने को भूलने वाले लोग ही बड़े माने गये है। न्यूटन की एक कहानी है। जब वे प्रयोग करते थे, उनकी नौकरानी भोजन की तश्तरी ले आती थी तो उन्होंने उससे कहा कि समय पर भोजन लाकर रख दिया करो, मुझसे कहो नहीं क्योंकि मेरे प्रयोग में बाधा पहुंचती हैं। उसने समय पर भोजन लाकर रख दिया और मौका पाकर बिल्ली आईं तथा सारा भोजन खाकर तश्तरी भी चाटकर साफ कर गई। जब प्रयाग पूर्ण कर उनका ध्यान तश्तरी की ओर गया तो उसे साफ देखकर न्यूटन ने समझ लिया कि उन्होंने भोजन कर लिया। जब नौकरानी ने आकर पूछा तो उन्होंने बताया कि तश्तरी साफ है। ऐसा लगता है कि मैंने खाना खा लिया, तब नौकरानी ने उन्हें बताया कि बिल्ली खा गई, आपने नहीं खाया हैं। जो स्वयं के सम्मान तथा बड़प्पन के लिये मरते है वे कभी भी बड़े नहीं बन सकते है। अपने यहाँ श्री कृष्ण भगवान का उदाहरण हैं। पाण्डव उनके शिष्य थे। एक बार युधिष्ठिर ने यज्ञ

किया। बड़े—बड़े राजे महाराजे आये। युधिष्ठिर ने सबको कहा सब लोग अपनी रूचि से व्यवस्था में सहभागी बन कर काम चुन लें। उसी समय उन्होंने कृष्ण भगवान से पूछा कि आपने कौन सा काम चुना? कृष्ण जी ने उत्तर दिया कि खाने के बाद जूठी पत्तल फेंकने का काम मैंने लिया हैं। अच्छा साफ सुथरे कार्मों को औरों ने लिया किन्तु श्री कृष्ण ने जूठा उठाने का काम लिया। जो ऐसी धारणा से कार्य करता है वही वास्तविक नेता हैं। आजकल तो तिरछी टोपी लगाकर चलता है। गर्दन टेढ़ी करके देखता है। किसी ने नमस्ते किया तो भी अकड़ा ही रहता हैं। जो सबसे नम्र होकर चलता है उसे नेता कहा हैं। ईसा मसीह के 12 शिष्य थे। आखिरी भोजन का समय था। एक शिष्य के यहाँ भोजन के लिये गये। उनको पता था कि वे बन्दी होंगे तथा उन्हें फांसी दी जायेगी। उन्होंने कहा जब तक प्रकाश है प्रकाश में चलों अर्थात् जब तक सीख सकते हो, सीख लो। वे उस शिष्य के यहाँ पहुंचे जहाँ भोजन था। जब भोजन के लिये टेबुल पर बैठे तो उन्होंने देखा कि मसीह के पास बैठने की स्पर्धा शिष्यों में होने लगी कि कौन उनके पास बैठता हैं। वह देख कर ईसा खड़े हो गये और मकान मालिक शिष्य से कहा कि पानी व टावेल लाओं और एक—एक को कहा कि सामने आकर खड़े हो। एक—एक करके उन्होंने सबके पांव धोये और पोंछे फिर बताया कि अपनी सीट पर जाकर बैठो। उसके बाद स्वयं बैठे। अब बड़ा विवाद चला कि ऐसा क्यों हुआ? सबके भाव जानकर उन्होंने बताया कि यह जानबुझ कर किया हैं। इसलिये कि तुम यह समझ लो कि मेरे मन में तुम लोगों के लिये जो आत्मीयता व प्यार है, उसी तरह का प्रेम सब लोग आपस में करो। यह नम्रता श्रेष्ठ आदमी में ही होगी, छोटे मै नहीं होगी। जब किसी को अंहकार करते देखा जाता है तो लगता है कि स्वयं को बड़ा समझ कर व ऐसा कर रहा है परन्तु ऐसा नहीं हैं। जो पद के अनुरूप स्वयं को लायक समझता, उसमें अहंकार नहीं आता है। जो अयोग्य रहता है, पद प्राप्त कर अहंकार करता हैं। जो आदमी बड़ा होता है वह सदैव नम्र होता है। नेतृत्व कैसे प्राप्त होता हैं, हमारे यहाँ बताया गया हैं। विष्णु शहस्त्र नाम में नेता की प्रक्रिया का वर्णन है। विष्णु के शहस्त्र नाम उसमें दिये हैं किन्तु उसमें उनके जीवन के एक—एक पहलु पर प्रकाश डाला गया हैं। **'अमानी मानदो मान्यो लोक स्वामी त्रिलोक धृक।'** जो अपने लिये सम्मान नहीं चाहता, लोगों को सम्मान देता हैं। इसके कारण ही वह सर्वमान्य होता है। स्वयं को छोटा समझ कर अन्यों को बड़प्पन देता है, वही सर्वमान्य है। वही नेता बनता है।

जबरदस्ती नेता बनने की प्रक्रिया में से योग्य व स्थायी नेतृत्व नहीं खड़ा होता। इसलिये जब हम भारतीय किसान संघ के लोग किसी को नेता कहते है तो बहुत सोच समझकर कहें। नेता कौन है? मोहम्मद साहब के जीवन की एक घटना हैं। जब वे बुढ़े हो गये थे, आना जाना कम करते थे। उसी समय कुछ स्थानों में विवाद बढ़े। लोग उनके पास बुलाने आये कि चलकर सबको समझायें। उन्होंने सबको एक ढंग समझाया, हर स्थान पर अमीर 'मुखिया' चुन लो और जो वह कहे, वही करो। लोगों ने कहा कि सभी मुखिया बनना चाहेंगे। उन्होंने समझाया कि जो अमीर बनने की इच्छा न करें, उसे ही चुनो। यह प्रक्रिया इस समय भी उपयोगी हो सकती है। जो नेता बनने के लिये घुमते हैं उन्हें न बनाया जाय तो सुधार हो सकता है किन्तु अभी कठिन प्रतीत होगा। चारों ओर प्रदूषण फैला है। ऐसे समय में भी हम अपनी संस्था के बारे में सोचे कि इसे ठीक रखना है। बाहर का यह प्रदूषण हमारे अन्दर न आये, यह सतर्कता सदैव रखें। हमने देखा होगा आपरेशन थियेटर में प्रवेश करते समय बाहरी जूते—चप्पल उसमें नहीं जाने देते ताकि दुषित तत्व, जो वहां हानि पहुंचा सकते हैं, न जाये। राजनीतिक प्रदुषणों को इसी प्रकार बाहर रखकर हम किसान संघ में आवें।

हम ध्येयवादी बनें। व्यक्तिवादी नहीं। किसान संघ में व्यक्तिवाद के लिये कोई गुंजाइश नहीं हैं, जो कोई कर्तव्य के बिना प्रमुखता प्राप्त करने की चेष्टा में है, उन्हे भारतीय किसान संघ में नहीं आना चाहिये। ध्येय के लिये पागल होकर आने वालों के लिए ही किसान संघ के पास स्थान है। अवसर की खोज में रहने वालों के लिए यहाँ स्थान नहीं है। यह समझ कर सभी बन्धु स्वयं को ढ़ाले ऐसी मेरी प्रार्थना हैं। ध्येय समर्पित विचार वालों के लिए ही किसान संघ है। नये आने वाले बन्धु इस विचार को ठीक प्रकार से समझें। जगह—जगह कार्यरत पुराने बन्धु प्रयत्न पुर्वक उनको यह बात समझावें। उनको संभालकर कार्य से जोड़े तथा आगे लावें।

पुराने कार्यकर्ता कुछ और भी ध्यान रखें। वैसे पुराने लोगों को कुछ बताने की आवश्यकता नहीं है किन्तु ऐसा कहा है कि अनुभवी व्यक्ति के जीवन में भी कभी कुछ क्षण ऐसे आते हैं जिसमें सावधान रहने की जरूरत हैं। अच्छा आदमी भी असावधान रहने से फिसल सकता है। मोछन्दर नाथ का उदाहरण हैं। पहले एक पिक्चर थी माया मोछन्दर नाथ। नाथ सम्प्रदाय के प्रथम महात्मा थे। भिक्षा हेतु स्त्री राज्य में चले गये।

रानी के यहाँ भिक्षा के लिए गये। रानी बहुत सुन्दर थी। इनको देखकर मोहित गई। उसने कहा कि घर घर भिक्षा न मांगें। यहीं रहे मैं सब व्यवस्था कर दूंगी। इन्होंने कहा—मैं योगी पुरूष हूँ। स्त्री राज्य में कैसे रहुंगा? वह भी मानव शास्त्र जानने वाली थी। उसने कहा कि आपका स्वयं पर भरोसा नहीं है। क्या आप समझते है कि यहाँ रहने पर फिसल जायेंगे? इस पर उन्होंने कहा कि मैं तो हर स्थान पर अडिग हूँ। फिर वही रह गये। फिर भूल गये और वहीं रम गये। अधिक दिन व्यतीत होने पर उनकी खोज में उनके शिष्य गये। शिष्यों के भजन से पुन: प्रेरित हुए और अपने मूल स्वरूप में वापस आये।

प्रारम्भ में यह अनुभव नहीं होगा परन्तु जब कोई ऐश्वर्य प्राप्त होता है तभी विचलित होने की सम्भावना होती है प्रत्येक के जीवन में ऐसे क्षण सम्भव हैं किन्तु उसका मौका आता है, जैसे बाल्यावस्था से किशोरावस्था पार करते तरूणायी के प्रारम्भ में नैतिक दृष्टि से व्यक्ति में च्युत होने की घड़ी आती है। ध्येय समर्पित कार्यकर्ता भी जब यश पद प्राप्त करता है तो उसमें भी ऐसी स्थिति सम्भावित है कि वह विचलित होवे। यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया हैं। ऐसे समय में सावधान रहने की आवश्यकता हैं। अपना आत्म निरीक्षण करते रहने की आवश्यकता है। आज भारतीय किसान संघ इसी अवस्था में है। अत: पुराने कार्यकर्ताओं को स्वयं जागरूक रहने की आवश्यकता है। हमारे सभी पुराने कार्यकर्ता बहुत अच्छे है, कट्टर है लेकिन भली प्रकार सतर्क रहें। जब कुछ नहीं रहता, अर्थात् संगठन की कोई ताकत नहीं होती तो कोई पूछता ही नहीं। कोई मान—सम्मान नहीं तो फिसलने की स्थिति नहीं आती हैं। जब कुछ प्रभाव उत्पन्न हो जाता है। यश मिलने लगता है तभी फिसलन की स्थिति होती है, ऐसे ही समय में सावधान रहना आवश्यक है। जैसे सत्ताधारी दल की विरोधी दल निन्दा करते है। एक बार नेता विरोधी दल से वार्ता हुई। व सत्तापक्ष की त्रुटियां गिनाने लगे। मैंने कहा कि आप भी सत्ता में आने पर ऐसा ही कर सकते हैं। उन्होंने झट उत्तर दिया कि हमारी कोई गलती नहीं है। मैंने कहा अभी तो आपके पास कुछ नहीं है। आपका ब्रह्मचर्य व्रत वैसे ही है जैसे कोई जंगल में रहे। परख तो तब होती है जब शहर में भी अडिग रहे। संस्था के जीवन में भी ऐसा ही रहता हैं। ताकतहीन संगठन को कोई नहीं पूछता। ऐसे समय प्रत्येक कार्यकर्ता अडिग रहता हैं। जैसे जैसे संगठन को यश मिलता है, उसके कार्यकर्ता भी प्रतिष्ठित होते हैं। यही समय सतर्क रहने का है। हम सभी को सतर्क व सावधान रहने के लिये

अब समय आ गया हैं। आगे और भी आने वाला है। सिनेमा के एक डाइरेक्टर हैं। उनका नाम वसन्त ठेंगड़ी है। मेरे चचेरे भाई हैं। एक बार उन्होंने एक फिल्म बनायी। उसमें उन्होंने डाइरेक्टर व ऐक्टर दोनों का कार्य किया। जितने लोगों ने उसमें भाग लिया, सभी बहुत अच्छे थे। अखबारों में इनकी तथा अन्य पात्रों की बहुत प्रशंसा छपी। उसकी कटिंग इनके पी०ए० ने काटकर फाइल बनाई। उसको इन्होंने एक रोज रात्रि में पढ़ा। इनके मन में आया कि सारा अभिनय मेरा है किन्तु मेरे साथ अन्य पात्रों की भी प्रशंसा हो रही है। यह ठीक नहीं है। दूसरी बार इन्होंने किसी को साथ न लेकर अकेले सब काम करते हुए साथियों को छोड़ दिया। साधारण पात्रों को साथ लिया जो कुशल नहीं थे। फिल्म बन गई। इसमें भी इनकी प्रशंसा हुई किन्तु फिल्म के बारे में छपा कि आपरेशन सक्सेसफुल पेशेण्ट डेड। इसी प्रकार संस्थाओं का होता है। जब संस्था योग्य प्रकार से चलन लगती है तो कार्यकर्ताओं को विचार आने लगता है कि अब संस्था तो चल रही किन्तु मेरा बड़प्पन अलग से कैसे दिखे? सबसे अधिक मेरी प्रशंसा कैसे हो? मैं केसे बड़ा बनूं? इसी समय सावधान रहना आवश्यक है। एक सन्त कवि ने कहा कि मुझे हर समय स्वयं के साथ लड़ाई लड़नी पड़ती है। प्रत्येक क्षण यदि हमने ध्यान रखा कि हमारा जीवन सदैव ध्येय समर्पित ही रहे तो मैं निश्चयपूर्वक कहता हूँ कि हमारे सिद्धान्त अच्छे है, आदर्श इतने अच्छे है, हमारी काम करने की पद्धति इतनी अच्छी है कि हम स्वाभाविक सफलता प्राप्त कर लेंगे। हमें अलग से सोचने की जरूरत नहीं। हम अपनी संस्था के प्रति निष्ठापूर्वक जूटे रहे यह आवश्यक है। बीच बीच बीच में संदेह में पड़ने से सफलता नहीं प्राप्त होती है। जैसे हमको दिल्ली से मद्रास जाना है। हमने गाड़ी का पता लगाया। मालुम हो गया कि जी०टी०ट्रेन सीधे मद्रास जायेगी और हम उसमें बैठे एक के बाद एक स्टेशन आ रहे है किन्तु हम धीरे धीरे उतावली में है। कुछ घंटे बीते, हम स्टेशन पर उतरकर पूछते है कि गाड़ी कहां जा रही है। फिर बैठे, फिर पूछे फिर बैठे और नागपुर पहुंचते पहुंचते धीरज खो बैठे। सोचा इतनी देर हो गई, पता नहीं पहुंचेगे कि नहीं और नागपुर में ही उतर गये। पूर्ण विश्वास के साथ मद्रास आने तक गाड़ी में बैठते तो सफलता मिलती। ऐसा न होने के कारण यात्रा अपूर्ण रही किन्तु गाड़ी अवश्य मद्रास पहुंच गई। इसी प्रकार भारतीय किसान संघ का कार्य ध्येय तक पहुंचेगा ही। हम स्वयं के बारे में सोचे कि हम इस कार्य में समर्पित भाव से जुटे रहेंगे

कि नहीं। जूटे रहेंगे तो निश्चित पहुंचेगे। यह बात नये पुराने सभी कार्यकर्ताओं को सोचना अनिवार्य हैं।

ध्येयवाद व व्यक्तिवाद एक ही मन में नही रह सकते। जीसस ने कहा है कि जिस ह्रदय के सिंहासन पर शैतान बैठा है, उस पर आप भगवान को बैठने के लिये कहेंगे तो वे अस्वीकार कर देंगे। जब व्यक्तिवाद नष्ट होता है, तब ध्येयवाद आता है। अत: सम्पूर्ण आत्म समर्पण ही सदैव आवश्यक है। हमारा जीवन मूल्य सम्पूर्ण आत्म समर्पण ही है। हमारा जीवन मूल्य कोई पद नहीं है। हम भारतीय किसान संघ में विधान के अनुसार किसी पद के कारण बड़ा नहीं समझते। अध्यक्ष या मंत्री है, इसलिये वे बड़े है, ऐसा जीवन मूल्य हमारा नहीं है। जो सदस्य बड़े पद पर रहते हुये भी भारतीय किसान संघ के लिये समर्पित नहीं है उसे हम बड़ा नहीं मान सकते, परन्तु किसी पद पर न रहते हुये यदि कोई समर्पण भाव से कार्य करता है तो हमारे लिये मान्य है। हमारे यहाँ छोटे—बड़े का भी सवाल नहीं है। गरीब व्यक्ति भी समर्पित होने के कारण संगठन को मान्य है, प्रतिष्ठित है। भगवान ने दुर्योधन के यहाँ भोजन न करते हुए विदुर का साधारण भोजन किया था, यह हम जानते है। प्रत्येक कार्यकर्ता का बड़प्पन किसान संघ के परिवार में उसके पद से नहीं, वरन् उसके समर्पित जीवन से ही नापा जायेगा। जहाँ—जहाँ श्रेष्ठता है वहां—वहां यही मापदण्ड हैं। एक अच्छी कहानी एक फ्रान्स के लेखक की हैं। उन्होंने सत्य घटना के रूप में लिखा हैं। फ्रान्स में नाटर डैम एक गांव है। बहुत प्रसिद्ध हैं। नाटर डैम में एक चैंपिल 'छोटा चर्च' था। ईसाई समाज में पोप, विशप, पादरी आदि दर्जे छोटे—बड़े मान्य हैं। वहां एक गांव का गरीब आदमी था, जिसको चर्च झाड़ने का काम दिया गया था। वह रोज चर्च साफ करता था, बचे समय में अपनी रूचि के कारण जादुगरी करता था। कहानी इसी के नाम पर 'जगलर आफ नाटर डैम' लिखी गई है। जब बड़ा दिन आया। इस पर्व पर सब लोगों में विचार चलने लगा कि हम ईसा को क्या भेंट चढ़ाये। अपनी भेंट देने के लिये सब लोग चर्च में आ गये, उस नौकर को बड़ा दुख हो रहा था। वह लगातार सोचता रहा कि मेरे पास देने के लिये कुछ नहीं है। धीरे—धीरे शाम होने लगी। एक एक से बढ़कर सब लोग भेंट चढ़ाकर जाते गये। अब दरवाजा बन्द करने का समय आया। ख्याल नहीं किया। ईसा की प्रतिमा के सम्मुख खड़े होकर कहने लगा कि मेरे पास भेंट चढ़ाने के लिये धन नहीं है किन्तु मेरी जादूगरी की कला है। आपको वही मैं भेंट चढ़ाउुंगा। वह ईसा की प्रतिमा के सामने चादर बिछाकर

जादूगरी के प्रयोग क्रमश: दिखाने लगा। प्रयोग पूर्णकर प्रसन्न चित्त उठा। किसी ने इसके प्रयोग को देखा नहीं। जब जाने लगा तो अन्तिम कोने में बैठे अधिकारी ने इसे पुकारा कि मै हूँ, और कहा कि तुम्हारी भेंट सबसे बड़ी है। यहाँ जितने लोग आये, वे आपस में होड़ करते थे कि उनकी भेंट दूसरे से बड़ी है परन्तु तुम्हारी किसी से स्पर्धा नहीं है। जो सच्चा भक्त है वही भगवान को प्रिय है। केरल की एक कहानी है एक ने कविता लिखी। पढ़ा लिखा न होने के कारण उसमें अशुद्धियां बहुत थी। इसकी कविता का प्रचार केरल में बहुत हुआ, इसलिये अन्य कवियों को बहुत खराब लगा। इसके एक सम्बन्धी थे जो उच्च कोटि के विद्वान कवि थे। उन्होंने कहा कि दोषयुक्त कविता की इतनी ख्याति हितकारी नहीं है। और उन्होंने उत्तम कविता लिखी। इनकी कविता लोकप्रिय नहीं हुई। वह स्वयं जाकर बताता था कि नारायण की कविता बहुत अशुद्ध है, मेरी पढ़ो। सब होने के बाद भी किसी ने इस कविता को याद नहीं किया। उसकी कविता इसलिये लोकप्रिय हुई है कि विष्णु भगवान ने उसे पसन्द किया है, ऐसा लोगों ने श्रेष्ठ कवि जी को बताया। तुम भगवान को पढ़कर सुनावो, यदि उन्हें पसन्द हो जायेंगी तो निश्चित लोकप्रिय होगी। वह भगवान के पास गये। अपनी कविता सुनाकर बोले कि नारायण की कविता में बहुत दोष है, इसलिये मेरी कविता ठीक है ऐसी घोषणा आप करें। भगवान ने मना करते हुयें कहा कि मुझे वही कविता पसन्द आती है जो भक्तिभाव से रची व कही जाती है चाहे उसमें स्वर विभक्ति व्याकरण की त्रुटि क्यों न हो। ध्येय देवता भी कार्यकर्ता का निरहंकार समर्पण देखते है व तौलते है। अहंकार व ध्येय एक साथ नहीं रह सकते। एक ने कहा है कि 'जब मैं था तो हरि नाहीं, जब हरि हैं मैं नाहीं।' और भी कहा है 'प्रेम गली अति सांकरी जा में दो न समाय।' कहते है राधा बहुत श्रेष्ठ भक्त थी किन्तु उसके मन में भी ईर्ष्या निर्माण हुई बांसुरी के प्रति। बांसुरी भगवान के होठो पर ज्यादा समय तक रहती थी। राधा के मन में विचार आया कि मैं शरीर धारी हूँ। हर तरह से मैं भगवान को प्रसन्न करने के लिये मैं चेष्टा करती हूँ। किन्तु मेरे से ज्यादा बांसुरी भगवान के होठों पर रहती है, ऐसा पक्षपात क्यों हैं? उन्होंने बांसुरी से पूछा कि भगवान का प्रेम तुम्हारे प्रति इतना अधिक क्यों हैं? प्रत्येक कार्यकर्ता को यह बात ध्यान देने योग्य है। बांसुरी कहती है कि :—

'प्रथम तज दिया सुन्दर बांस झारी रें।

तन कटवायो, मन कटवायो, ग्रंथिन—ग्रंथिन में छिदवायो।

फिर जैसो बजावत है श्याम, वैसे सुर सुनवायों।

यही कारण, निज अधरन पर रखत मुरारी रें।

बासुरी कहती है हमने अपना सुन्दर परिवार छोड़ दिया। बड़ें शरीर से एक टुकड़ा कटा, मन कटा, गांठ—गांठ छेंदी गई। जिस प्रकार का स्वर भगवान चाहते है, वैसा स्वर निकाला। यही कारण है कि श्याम अपने होठों पर मुझे रखते हैं।

हम यदि कार्य करने का निश्चय लेते और चाहते है कि संगठन से जुड़े रहें तो हमें भी ऐसा ही समर्पण प्रगट करना होगा।

जागृत—किसान

मा०ठेंगड़ी जी

आज हमारे लिए यह बड़े ही सौभाग्य की बात है कि जिन लोगों ने हमारा अभ्यास वर्ग यशस्वी होने के लिए सहायता की है। ऐसे ही किसान भाइयों के दर्शन यहाँ पर हम कर रहे हैं। हम जानते है कि यह अभ्यास वर्ग जो इतने अच्छे ढंग से चल सका, इस क्षेत्र के किसान बन्धुओं की सहायता से चला। इस विद्गालय की प्रबन्ध समिति, प्रधानाचार्य जी, अध्यापक वृन्द तथा विद्यार्थी व कर्मचारी बन्धुओं के सहयोग से ही यह वर्ग सफल हुआ। आज ऐसे सभी बन्धु इस कार्यक्रम में एक साथ एकत्रित आकर हमें आनन्दित कर रहे हैं।

जहाँ तक किसानों की समस्याओं का सवाल है किसानों की समस्याओं की गिनती करना कठिन हैं। यदि कोई जन्दी करेगा तो 24 घंटे उसके लिए अपर्याप्त होंगे। किसान जिस किसी चीज को हाथ लगाता है वह समस्या बन जाती है। और जिस किसी आदमी का सम्पर्क आता है वह व्यक्ति किसान के लिए समस्या सिर दर्द बन जाता है। पानी है, बिजली है, खाद है, बीज है, दवायें हैं, इंजन हैं, ट्रैक्टर है हल है अर्थात् जिन चीजों को किसान हाथ लगाता है वह समस्या बन जाती है और हर एक आदमी जो किसान के संपर्क में आता है वह समस्या बन जाता है। बैंक का कर्मचारी, तहसीलदार लेखपाल सभी किसान के लिए समस्या हैं, इसलिए समस्याओं की गिनती करने यदि बैंठे तो समय पूर्ण होने तक भी वह खत्म नहीं होगी। 38 साल बीत गये किन्तु हमारी प्राथमिक मांग भी पुरी नहीं हुई यह हम जानते हैं। कोई भी कारखानेदार ऐसा है क्या, जो अपना कारखाना वर्षो तक घाटे में चलाता हैं? 5,7 वर्ष तक ही वह प्रतीक्षा करता है यदि घाटा नहीं रूकता तो वह बन्द कर देता है। पूंजी निकाल लेता है तथा दूसरे स्थान पर दूसरा कारखाना बनाता है। हम खेत छोड़कर कहीं नहीं जा सकते हमको प्रतिवर्ष घाटा हो रहा है हम खेती लगातार कर रहे हैं क्योंकि 'हम राष्ट्र—भक्त है।'

हमारी पहली मांग यह है कि जैसे किसी भी उद्योग में उत्पादन का खर्चा निकालकर उसके ऊपर लाभांश जोड़कर कारखाने वालो को उचित मूल्य प्राप्त होता हैं हमारे उत्पादन की पुरी कीमत मिलनी चाहिए। हमारे लागत व्यय की पुरी गिनती होनी चाहिए फिर लाभ जाड़कर हमें उचित मूल्य मिलना चाहिए।

कई लोग बोल उठते कि यह मांग गैर जिम्मेवारी की हैं। उनका कहना है कि यह मांग पुरी नहीं हो सकती। हम नहीं देंगे। चौथी पंचवर्षीय योजना के प्रारूप में स्पष्ट रूप से लिखा है कि किसानों को उपज मूल्य का पूरा दाम देने से हमारा आर्थिक ढांचा चरमरा जायेगा। राव वीरेन्द्र सिंह जब कृषि मंत्री थे उन्होंने कहा कि हम किसान को अनाज का पूरा मूल्य नहीं देंगे तो एक किसान ने पूछा क्यों, तो उन्होंने फिर कहा कि उचित मूल्य देने से किसान की आदत बिगड़ जायेगी। वह हमेशा पुरे दाम मांगने लगेगा। माने सरकार को पता है। सरकार जानबुझकर किसानों के साथ अन्याय कर रही है। जहाँ तक किसान को पुरी कीमत देना सम्भव है या नहीं, यह प्रश्न है। भारतीय किसान संघ एक जिम्मेवार संगठन है। हम जिम्मेवारी के साथ सरकार व जनता को आश्वासन देने हैं। यदि हमारे सुझाव के अनुसार सरकार चलती है तो किस तरह से किसान की मांग पुरी हो सकती है? हिन्दुस्थान का आर्थिक ढांचा मजबूत बनाते हुए इस विषय में राय देना यह किसान संघ की जिम्मेवारी है ऐसा हम समझते हैं।

38 साल में हमारी पहली गलती यह हुई है कि यहाँ जो योजनायें बनाई गई वह हिन्दुस्थान की परिस्थितियां, परम्पराये, आवश्यकतायें ध्यान में न रखते हुए बनाई गईं। हिन्दुस्थान कृषि—प्रधान देश है। यहाँ योजना का प्रकार दुसरे तरह का होना चाहिए था। हमने योजना बनाते समय विदेश की नकल की है। रूस की योजना में भारी उद्योग को प्राथमिकता है उसके बाद लघु उद्योग फिर कृषि है, ग्राम उद्योग, कुटीर उद्योग है। हमारे यहाँ भी प्राथमिकता का क्रम रूस की नकल हैं। अपने देश में पहले भारी उद्योग बड़े उद्योग, मध्यम उद्योग, लघु उद्योग, कुटीर उद्योग फिर कृषि उद्योग, ग्राम उद्योग का क्रम है। सबसे बड़े देश चीन में रूस की योजनाओं की नकल करके 30 साल अनुभव किया है। अब स्पष्ट रूप से उन्होंने कहा है कि रूस की नकल करके हमनें बहुत भारी गलती की है। चीन ने स्वीकार किया योजनाओं का क्रम हमने गलत लगाकर हानि उठाई हैं। अब उन्होंने अपना क्रम उलट दिया हैं। अब उन्होंने कृषि को प्रथम फिर ग्राम

उद्योग लघु उद्योग बड़े उद्योग तथा भारी उद्योग का क्रम बैठाया हैं। यह परिवर्तन उन्होंने 1978 में किया। चीन के कम्युनिस्ट नेता अनुभव के आधार पर नया सबक सीख सकते हैं। हमारा देश कम्युनिष्ट नहीं भी हम अन्धानुकरण करने के कारण अपना नुकसान कर रहें हैं। हमारी योजनाओं में प्राथमिकता का क्रम बदलना चाहिए। यह पहला सुझाव भारतीय किसान संघ का हैं। यह यदि बदलता है तो परिणाम क्या होगा? जो—जो सुविधायें उद्योगों को मिल रही हैं। आर्थिक सहायता निर्यात की सुविधा कारखाने के माल के लिए मिलती है वह खेती को नहीं मिलती। हमारा कहना है कि 6 साल तक आप यहाँ उल्टा क्रम लीजिए। यानी जो पैसा जो सहुलियतें आप उद्योगों के लिए देते थे वह सहुलियतें कृषि के लिए दीजिए। सरकार कल्याण्कारी राज्य घोषित करती है। कल्याणकारी राज्य के नाते जो जो जिम्मेवारियां सरकार की हों, उस कार्य को सरकार निर्वाह करती है। कई जिम्मेवारियां हैं। सब कल्याणकारी राज्य की जिम्मेवारी यदि निभाती है तो स्वाभाविक रूप से हमारा कुछ खर्चा कम हो जाता हैं।

सरकार की अनेंक योजनायें है। ग्रामीण विभाग का औघोगिकरण होना चाहिए। उसके लिए जिला उद्योग कार्यालय खोले गयें थे वह भी काम अपना ईमानदारी से करें तो यहाँ नये उद्योग आ सकते है। जमीन पर से बोझ कुछ कम होगा क्योंकि उद्योग में कुछ लोग लग जायेंगे, किन्तु सबसे बड़ी बात है कि कृषि को प्राथमिकता देते हुए सब्सिडी देने का ढंग बदलना चाहिए। खेती में प्रयुक्त होने वाले सभी चीजों को मूल में सब्सिडी देना चाहिए। जितनी भी चीजें खेती में प्रयुक्त होती हैं पानी, बीज, खाद जो जो प्रयुक्त होती है यदि आप मुल में सब्सिडाइज करते हैं तो हमारा उत्पादन खर्चा कम हो जायेगा और उत्पादन खर्चा कम हो जायेगा तो शहर में रहने वाले उपभोक्ताओं पर ज्यादा बोझ न बढ़ाते हुए किसान को उसका उचित मूल्य मिल सकेगा। दुर्भाग्य की बात है कि आज की स्वतंत्र भारत की सरकार भी उन्हीं नीतियों का अनुकरण कर रही है जो नीतियां अंग्रेज सरकार की थी। अग्रेंज सरकार की नीति थी फूट डालो और हुकूमत चलाओं। यही भारत सरकार कर रही है। जैसे हम उचित मूल्य की मांग करते हैं तो सरकार उपभोक्ताओं को बताती है कि किसान नाजायज मांग कर रहे हैं। उनकी मांग पूरी होती हैं तो आप पर नाजायज आर्थिक बोझ बढ़ जायेगा। माने किसान के खिलाफ उपभोक्ता को भड़काना। खेतिहर मजदूरों से बताते हैं कि सान तुम्हारा दुश्मन है। तुमको पुरा पैसा देना नहीं चाहता हैं। खेतिहर को किसान के प्रति भड़काना। हर एक

को हर दूसरे के खिलाफ लड़ाभिड़ा कर चलाना। यह फूट डालो तकसीम करो हुकूमत चलाओ की नीति हैं।

जहाँ तक खेतिहर मजदूरों का संबंध है हम उसमें दो बातें स्पष्ट कर लें। कोई किसान ऐसा नहीं है 'अपवाद छोड़कर' जो अपने साथ में रहने वाले खेती मजदूरों को अपना दुश्मन समझता है। खेतिहर मजदूरों को वह अपने परिवार का ही एक अंग समझता है लेकिन उसको पूरा पैसा नहीं दे सकता इसका कारण यह नहीं है कि वह खेतिहर मजदूर को दुश्मन समझता है या उसको भूखा रखना चाहता हैं। यह उसका मतलब नहीं है। उसका कारण यह है कि किसान को अपने माल की कीमत ही नहीं मिलती है। वह अपने परिवार का ही पेट ढ़ंग से नहीं पाल सकता। वह सोचता है मेरे ही बाल बच्चे भूखे है तो दूसरे को पुरा कैसे दें? इसलिए वह पुरा पैसा देता नहीं हैं। माने खेतिहर मजदूर को पुरा पैसा देना ही नहीं चाहिए, यह उसकी इच्छा नहीं हैं। पैसे देने की ताकत नहीं है, क्योंकि उसको उसके माल की पुरी कीमत नहीं मिलती हैं, लेकिन जैसे ही किसान को उसके माल की पुरी कीमत मिल जायेगी वह अपनी खुशी से उसमें से अपने खेतिहर मजदूर को पुरा पैसा देंगे। खेतिहर मजदूर और किसान का झगड़ा समाप्त हो जायेगा। इतनी ही बात नहीं है, जैसे ही पुरा पैसा किसान को मिलेगा वह कहां जायेगा? वह क्या उससे ऐश या विलास की चीजे खरीदने वाला हैं? लिपिस्टिक या पाउडर खरीदने वाला हैं? नहीं। वह तो जीवनावश्यक वस्तुएं खरीदेगा और जीवनावश्यक वस्तुएं खरीदेगा तो उपभोक्ता, उद्योग जो ग्रामीण भाव पर चल सकते हो, ऐसे उद्योग शुरू हो जायेंगे। और उसी के द्वारा आने वाले पैसे से जो पैसा ग्रामीण भागों में जाने वाला है, चाहे वह उपभोक्ता उद्योग में जाये, चाहे प्रक्रिया उद्योग में जाय: जैसे ही छोटे छोटे उद्योग शुरू होंगे, गांव के जो लोग आज बेकार है उन्हें काम धन्धा मिल जायेगा उनको काम मिलेगा तो उनके भी गांव में कुछ पैसा आयेगा। और वह भी गांवों में खर्च करेंगे। इसके कारण वहां और उद्योगों में वृद्धि होगी और ज्यादा लोगों को काम मिलेगा। खरीदने की भी ताकत ज्यादा लोगों की बढ़ेगी। खरीदने की ताकत बढ़ जायेगी तो यह बढ़ा हुआ पैसा फिर गांवों में ही लगाया जायेगा और छोटे छोटे प्रक्रिया उद्योग बढ़ेंगे। मानो उस तरह से किसान की जेब में पुरा पैसा आना और गांवों में ही लगाया जाना: जिसके कारण उद्योग शुरू होना, वहां लोगों को काम मिलना, काम मिलने के कारण रोजी रोटी मिलना, उसके कारण उनकी खरीदने की ताकत बढ़ना,

उसके कारण वहां छोटे—छोटे और नये उद्योग प्रारम्भ होना, उसके कारण वहां छोटे—छोटे और नये उद्योग प्रारम्भ होना उसके कारण और ज्यादा नये लोगों को रोजगार मिलना; यह एक नया उत्कर्ष का, नये समृद्धि का चक्र इसके कारण शुरू होगा और सम्पूर्ण ढ़ांचा ही बदल सकता है। भारतीय किसान संघ सरकार को यह आहवान पूर्वक कहता है कि अब छ: साल तक हमारी इस योजना का ट्रायल कीजिए। 38 वर्षो तक आपने जिस योजना का अनुसरण किया उसका नतीजा आज जनता के सामने है। छ: साल तक हमारी इस प्रक्रिया को ट्रायल कीजिए आवाहन पूर्वक हम कहते हैं कि इसके कारण गांव का एवं किसानों का आर्थिक कायाकल्प हो जायेगी। इसको अभिमान पुर्वक हम सरकार को कह रहे है यह समझना गलत होगा। हम कुछ और कह रहे है; सरकार अलग ढंग से कार्य कर रही है तो हम सरकार से कुछ ज्यादा बुद्धिमानी रखते हैं ऐसा समझना फालतु होगा। ऐसा नहीं है कि जितना हम बोल रहे हैं सरकार जानती नहीं हैं। हां मिनिस्टिर लोग भले ही न जानते हो क्योंकि मिनिस्टर बनने के लिए जानकारी की आवश्यकता नहीं होती। लेकिन उनके पास भी एक्सपर्ट्स हैं। हम लोगों से ज्यादा बुद्धिमान लोग हैं। तब जानते हुए भी यह अन्याय क्यों हो रहा हैं?

यहाँ की सरकार की नीति अंग्रेज सरकार की नीति का अनुसरण हैं। और अंग्रेज सरकार की तरह यह नीति पूंजीपतियों, उद्योगपतियों एवं कारखानेदारों कें लिए बाकी जनता का शोषण करने की हैं। उसका भी काम बढ़ना चाहिए उसका भी मुनाफा बढ़ना चाहिए, किन्तु कारखानेदार का मुनाफा बढ़ाना जहाँ अंग्रेज सरकार का उद्देश्य था, आज की सरकार भी उसी उद्देश्य को लेकर काम कर रही है। कारखानेदारों मिल मालिकों का मुनाफा कैसे बढ़ सकता हैं? तीन प्रकार से बढ़ सकता है। पहली बात मिल और कारखाना का उत्पादन खर्चा घटाना। यह कैसे घट सकता हैं? तो मिल के लिए कारखाने के लिए जो कच्चा काम चाहिए वह कच्चा माल सस्ते से सस्ता लेना तो उत्पादन खर्चा घटेगा यह एक बात हैं। अब यह कच्चा माल सस्ते से सस्ता खरीदना है; उसके लिए यह हो जाता है कि किसानों का शोषण होना चाहिए। किसानों का शोषण नहीं होगा, किसानों को काम का पुरा दाम मिलेगा तो कच्चा माल सस्ता नहीं मिल सकता और उत्पादन का खर्चा घट नहीं सकता। दूसरी बात इस कच्चे माल से उत्पादन कौन करता हैं? कारखानों में मिलों में मजदुर करते है। मिल मालिकों को उन्हें मजदूरी देनी पड़ती हैं। मजदूरी यदि उनको पुरी दी गई तब भी उत्पादन खर्च बढ़ जायेगा। तो

उत्पादन खर्चा घटाने का दूसरा रास्ता है कि मजदूर से ज्यादा से ज्यादा काम लिया जाय और उनको कम से कम पैसा दिया जाय। दुना फायदा निकालने का यह दूसरा रास्ता है और इसके लिए जैसे किसानों का शोषण वह एक मार्ग है। मजदूरों का शोषण यह दूसरा मार्ग हैं। और तीसरा मार्ग है न उत्पादन हो न मांग पुरी हो। कारखानों में मिलों में पैदा हुआ माल यदि उचित कीमत में उपभोक्ता को, ग्राहक को मिलता है तो ज्यादा मुनाफा नहीं बढ़ सकता। मुनाफा बढ़ाने का तरीका यह है कि इस माल का जो उत्पादन खर्चा है उससे बहुत ज्यादा नफा लेकर वह माल बेचना माने उसमें मुनाफा ज्यादा बढ़ सकता है। कारखानेदारों, पूंजीपतियों, मिल मालिकों का यदि मुनाफा बढ़ाना हो तो किसानों का शोषण मजदूरो का शोषण एवं उपभोक्ताओं का शोषण। इन तीनों का शोषण यदि होगा तो तभी कारखानेदारो का उद्योगपतियों का मुनाफा बढ़ सकता है। लेकिन जब इस बात का तीनों को पता चलेगा कि सरकार ने पूंजीपतियों के साथ साठ गांठ करके हम सब लोगों का शोषण कराया है। जिन लोगों को पता चलेगा वे आश्चर्य में पड़ जायेंगे। एक बड़ा बवण्डर खड़ा हो जायेगा। इस कारण जैसे अंग्रेज सरकार करती थी कि फूट डालो और हुकूमत चलाओं सरकार ने भी इस नीति का अनुसरण किया है। आज उपभोक्ता को किसान के विरूद्ध भड़काया जाता हैं। मजदूर को किसान के खिलाफ भड़काया जाता है। हर एक को हर एक के विरूद्ध भड़काया जाता है और इस तरह से सबको गुमराह करते हुए थोड़े उद्योगपतियों का लाभ बढ़ता जाय, इसलिए किसानों का, मजदूरों का और आम जनता का शोषण खुले आम 38 साल से चल रहा हैं।

हम बहुत बुद्धिमान हैं सरकार कुछ समझती नहीं ऐसा नहीं है। हम लोगों से ज्यादा बुद्धिमान एक्सपर्ट उनके पास है लेकिन उनके इरादे ही गलत है जिसके कारण जनता का यह शोषण हो रहा है। हमें हमारे माल की कीमत नहीं मिल रही हैं। यह हमें समझना चाहिए। इसे उदाहरण के रूप में कहा जाय तो जिन चीजों का उत्पादन हमारा किसान प्रचुर मात्रा में करता हैं। ऐसी ही चीजे हमारी सरकार विदेशों से लाती है, क्या कपास, क्या चीनी, क्या चावल, यहाँ भण्डार भरा हैं, तो भी विदेशों से सरकार वह चीज लाती है। हमारे किसान की उसी चीज की जब कीमत गिरती है तो उससे ज्यादा कीमत बाहर से आये माल से लेती हैं, जैसे पाकिस्तान से कपास लाया। अट्ठाइस लाख गांठ देश में पड़ी हुई है, फिर भी पाकिस्तान से गांठे लायी है। उनको सरकार ने आठ

सौ से साढ़े आठ सौ रूपये तक की कीमत दी है। पाकिस्तान को 850 रूपये सरकार देने को तैयार हैं। हमारे किसान को सरकार 400—430 रूपये तक देने को ही तैयार है, लेकिन कई लोगों के निहित स्वार्थ हैं। अफसर शाही के निहित स्वार्थ हैं। बहुत इसमें वर्णन करने की आवश्यकता नहीं।

यह सारी बातें होने के कारण अब हम किसी पर अवलम्बित नहीं हो सकते कि हमारा भाग्य विधाता बनकर हमें कोई बचायेगा। यह आशा हम नहीं रख सकते। अब हम किसानों को अपने ही पैरो पर खड़ा होना आवश्यक हो गया है। इसलिए अखिल भारतीय स्तर पर किसानों का एक मजबूत संगठन खड़ा करना यह आवश्यक हो गया है यह आवश्यकता जिन लोगों ने महसूस की ऐसे ही कुछ लोगों ने 4 मार्च 1979 को राजस्थान के कोटा में एकत्र आकर भारतीय किसान संघ की स्थापना की। भारतीय किसान संघ एक राष्ट्रवादी किसान संघ है कट्टर राष्ट्रवादी जिसके लिए राष्ट्र का हित और किसान का हित दोनों एक रूप है। राष्ट्र खड़ा है तो किसान को गिरने नहीं देगा। राष्ट्र गिर जायेगा तो किसान बच नहीं सकता। ऐसे ही किसान खड़ा है तो राष्ट्र को गिरने नहीं देगा किसान गिर जायेगा तो राष्ट्र बच नहीं सकता। राष्ट्र और किसान दोनों का हित एक है, ऐसी हमारी धारणा है। साथ ही साथ जहाँ भारत में किसान संघ अखिल भारतीय स्तर पर किसानों की समस्याओं को लेकर किसानों का ही संगठन खड़ा करना चाहता है यह किसानों का है किसानों के लिए है किसानों के द्वारा चलाया गया है और सभी किसान एक मंच पर जब तक नहीं आते तब तक अपने शोषण के खिलाफ हम लड़ाई नहीं लड़ सकते ऐसा हमारा विश्वास हैं, किन्तु सभी किसान एक मंच पर जब आने हो तो कुछ मर्यादा रखने की आवश्यकता हैं। मर्यादा यह है कि कोई भी किसान संगठन यदि सभी को एक मंच पर लाना चाहता है तो राजनीतिक दृष्टि से अपने को अलग रखना होगा। यह बात ठीक है कि हर एक किसान जैसे किसान है वैसे नागरिक भी है। नागरिक के नाते किसी भी राजनैतिक दल का काम करने का उसको हक है, न करने का भी हक है जैसे उसकी इच्छा होगी तब नागरिक के नाते जो उसको अधिकार है कोई उसे वंचित नहीं कर सकता, लेकिन जहाँ किसान के नाते हम सोचते है; किसान के अधिकारों के लिए किसान के हित के लिए जब हम सोचते है तो वहां सभी राजनैतिक विचार अलग रखते हुए, केवल किसानों के हितों का विचार सामने रखते हुए; अपने राजनैतिक दलबन्दी को भूलकर, किसानों की समस्याओं को

सुलझाने के लिए, विभिन्न राजनैतिक दलों के किसान एक मंच पर किसान के नाते खड़े हो जाये यह आवश्यक हो जाता है।

भारतीय किसान संघ राजनीति से अलग है हर एक को व्यक्तिगत रूप से राजनैतिक कार्य करने का हक है। कोई भी भारतीय किसान संघ को राजनीति में घसीट कर न ले जाय। राजनीति को घसीट कर भारतीय किसान संघ में न ले आयें। भारतीय किसान संघ में सभी को राजनैतिक दलबन्दी भुलकर आना चाहिए। जैसे हर एक को चाहे जो जुता या चप्पल पहनने का अधिकार है। कोई यह कह नहीं सकता कि तुमको यह जूता या चप्पल पहननी चाहिए। चाहे तो वह बाटा का जूता पहन सकता है चाहे तो अपने गांव के चमार की बनाई चप्पल पहन सकता है लेकिन यदि हमारे मंदिर में गुरूद्वारे में आना चाहते है तो जहाँ प्रवेश करते है वहां करबद्ध प्रार्थना हैं, महाराज चप्पल और जूते बाहर रखकर नंगे पैर आप अन्दर प्रवेश कीजिए। उसी तरह हर किसान को नागरिक के नाते राजनैतिक अधिकार है लेकिन किसानों की समस्याओं को सुलझाने के लिए अखिल भारतीय स्तर पर यह भारतीय किसान संघ का मन्दिर चल रहा हैं। जब किसानों की समस्याओं के लिए हम एकत्रित होते है तो हम यह प्रार्थना करेंगे कि आप चाहें जो राजनीतिक जूता, चप्पल पहन सकते हैं, उसके बारे में हम कुछ नहीं कहेंगे लेकिन हमारे किसान संघ के मंदिर में जब आप प्रवेश करेंगे तो राजनैतिक जूता चप्पल बाहर रखकर प्रवेश कीजिए। यह प्रार्थना हम आपसे करेंगे। मुझे यह विश्वास है कि इस तरह से मर्यादा रखते हुए यदि हम किसान संघ मजबूत बनाने की कोशिश करते है तो थोड़े ही दिनों में हिन्दुस्थान का किसान अपने पैरो पर खड़ा हो जायेगा और फिर किसान को मिनिस्टरों के पीछे नहीं लगना पड़ेगा। मिनिस्टरों की दाढ़ी में हाथ लगाने की बारी किसान की नहीं आयेंगी। किसान स्वयं इतना मजबूत हो जायेगा कि मिनिस्टरों को किसानों के पीछे भागना पड़ेगा। ऐसी परिस्थिति आयेगी।

हमारे अन्दर बहुत ताकत है। हम ही सरकार को बनाने और बिगाड़ने वाले हैं। मुश्किल यह होती है, कि हम सरकार तो बना देते है लेकिन बनाने के बाद हम भूल जाते है कि हमारी ताकत से बने हुए यह सरकार के लोग हैं। अब हमारा ही कबूतर हमसे गुटरूगुं कर रहा है यह बात हम लोग भूल जाते है उसके कारण हमारे ही बनाये हुए नेता हमारे ऊपर हावी हो जाते हैं जिस दिन किसान जागृत हो जायेगा कि हम सरकार को बिगाड़

सकते है उस दिन यह सवाल नहीं रहेगा कि हिन्दुस्थान के किसानों की मांगे मानने के लिए सरकार तैयार है या नहीं।

सवाल यह रहेगा कि सरकार हमारी मांगे माने या हिन्दुस्थान का संगठित किसान जो कोई सरकार जिस किसी की भी सरकार उस समय होगी सरकार को सरकार के नाते मान्यता देना बन्द कर दे, ऐसा मौका आ जायेगा और यदि हिन्दुस्थान का संगठित किसान किसी भी सरकार को सरकार के नाते मान्यता नहीं देता तो इस देश का प्रशासन 24 घंटे भी नहीं चल सकेगा, इतनी ताकत किसानों के हाथों में हैं। अपनी इस ताकत को हम पहचानें। सारी दलबन्दियों को छोड़कर हम किसान के नाते एक मंच पर आ जायें यही प्रार्थना लेकर भारतीय किसान संघ आपके पास आया हुआ हैं।

यह बड़ी खुशी की बात है आप सब इस क्षेत्र के किसान बन्धुओं ने बहुत प्रेम के साथ अब तक हम से सहयोग किया है अब हम लोग और आप लोगों का भेद भी खत्म हुआ है हम सब एक परिवार के है। भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि यह जो प्रेम और आत्मीयता आपने दिखाई है; यह अखण्ड बढ़ती रहे और इस तरह इस क्षेत्र में भी भारतीय किसान संघ की शक्ति बढ़ती रहे, यही प्रार्थना करता हुआ और दुबारा आप सब किसान बन्धुओं का आभार प्रकट करता हुआ; मैं अपना भाषण समाप्त करता हूँ।

— —अभ्यास—वर्ग— —एक दृष्टि में— —

25 सितम्बर की सायंकाल से कार्यकर्ताओं का आना प्रारम्भ हुआ। रात्रि में लगभग 400 कार्यकर्ता भोजन के समय तक पहुंच गये थे। रेलगाड़ी व बसों की अव्यवस्था के कारण 150 के लगभग कार्यकर्ता 26 सितम्बर की प्रात: आये। वर्षा की अधिकता के कारण सुलतानपुर पहुंचने के मार्ग कट गये थे। चक्कर लगाकर आना पड़ता था। रेडियों, टेलीविजन तथा समाचार पत्रों द्वारा सुलतानपुर जिले को पानी से घिरने का समाचार निरन्तर प्रचारित हो रहा था। फिर भी वर्ग में दिनांक 26 सितम्बर को 529 कार्यकर्ता पहुंचे तथा पुरे समय वर्ग में भाग लिये।

यह दुसरा प्रशिक्षण वर्ग था। इसके पूर्व हरियाणा प्रान्त के पानीपत में वर्ग हुआ था। उसकी संख्या 80 थी। इस दुसरे वर्ग में सभी प्रान्तों के कार्यकर्ता थे। केवल केरल अनुपस्थित था। तामिलनाडु तथा आसाम में किसान संघ की इकाई का गठन नहीं हुआ है। आये हुए प्रान्तो के 114 जिलों से कार्यकर्ता भाग लिये।

26 सितम्बर की प्रात: 9 बजे मा०सरदार प्यारा सिंह 'पंजाब' ने झण्डा फहरा कर वर्ग प्रारम्भ किया। उसके बाद सभी कार्यकर्ता मंडप में बैठे। इस प्रथम सत्र में मा०ठेंगड़ी जी का उद्घाटन भाषण हुआ। उसके बाद सभी कार्यकर्ता प्रान्तानुसार बैठे और कार्य का वृत्त तैयार किये। अपरान्ह 3 बजे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरकार्यवाह प्रो०

राजेन्द्र सिंह 'मा०रज्जु भैया' का मार्गदर्शन तथा कार्यवृत्त प्रस्तुत हुआ। दिनांक 27 व 28 सितम्बर को मा०ठेगड़ी जी का परिसंवादात्मक मार्गदर्शन हुआ। रचनात्मक, संघर्षात्मक, प्रचारात्मक व संगठनात्मक चर्चायें हुईं। कार्यकर्ताओं को विचार प्रगट करने की छुट समयबद्धता के साथ थी। 29 सितम्बर को राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प०पू०सरसंघ चालक मा०बाला साहब देवरस का उद्बोधन, प्रश्नोत्तर एवं आशीर्वचन सभी कार्यकर्ताओं को प्रेरणास्वरूप प्राप्त हुआ।

दिनांक 29 को ही उस क्षेत्र के तथा जिले के ग्रामों से भरपुर संख्या में किसान बन्धु आये थे। वर्ग में भाग लेने वाले कार्यकर्ताओं के साथ एक सार्वजनिक सभा हुई। सभी प्रान्तों से एक प्रमुख कार्यकर्ता ने अपनी हिन्दी में भाषण किया। प्रमुख भाषण मा०ठेगड़ी जी का था। श्री राधेश्याम यादव सभा के अध्यक्ष थे। सायंकाल 6 बजे ध्वजावतरण के साथ वर्ग का समरोप मा०सरदार प्यारा सिंह ने किया।

सदस्य

श्री योगेन्द्र प्रताप सिंह (हिमगिरि संगठन मंत्री)

श्री शिवपाल सिंह (हिमांचल)

श्री जनकराज महाजन (पंजाब)

श्री दशरथ चौहान (हरियाणा)

श्री कुबेर दत शास्त्री (हरियाणा)

श्री कुंज बिहारी शुक्ल (महाकोशल)

श्री कृष्ण चन्द्र सुर्यवंशी (महाकोशल)

श्री बस्ती राम तवर (मध्यभारत)

श्री बद्री लाल सोनी (मध्यभारत)

श्री जीवनभाई पटेल (गुजरात)

श्री अशोक भाई चौधरी (गुजरात)

श्री ओम प्रकाश माथुर (राजस्थान)

श्री बसन्त कुमार शर्मा (राजस्थान)

श्री नाना जोशी (महाराष्ट्र)

श्री तुपे जी (महाराष्ट्र)

श्री मुरकुटे जी (विदर्भ)

श्री राजा भाऊ देशपाण्डे (विदर्भ)

श्री भानु प्रकाश (कर्नाटक)

श्री एम०पुरूषोत्तम राव (कर्नाटक)

श्री जोगा रेड्डी (आन्ध्र)

श्री विद्यासागर राव (आन्ध्र)

श्री सधन्वा पात्र (उड़ीसा)

श्री सुकुमार पात्र (बंगाल)

श्री सुनील चौधरी (बंगाल)

श्री कामेश्वर सिंह (बिहार)

श्री परमानन्द चांदवाला (बिहार)

श्री राम कृष्ण मिश्र (पूर्व उत्तर प्रदेश)

श्री शारदा प्रसाद दिवेदी (पूर्व उत्तर प्रदेश)

श्री बाबु लाल शर्मा (पूर्व उत्तर प्रदेश)

श्री गिरिराज प्रसाद (पश्चिम उत्तर प्रदेश)

श्री जोगराज (दिल्ली)

श्री दादा सहस्र बुद्धे (मध्यभारत)

श्री शरद केलकर (विदर्भ)

श्री गन्धर्व सिंह (जम्मू)

प्रबन्ध समिति पदाधिकारी

श्री दत्तो पन्त ठेंगड़ी (संस्थापक)

श्री भाऊ साहब भुस्कुटे (टिमरनी, मध्य प्रदेश) मार्गदर्शक

श्री सुन्धन्वा पात्र (उड़ीसा)

श्री पुरूषोत्तम दास भाटिया (जुगरूनागर बरेली उ०प्र०) अध्यक्ष

श्री सरदार प्यारा सिंह (होशियारपुर, पंजाब) कार्यवाहक अध्यक्ष

श्री श्यामसुन्दर द्विवेदी (हरदोई, उ०प्र०) महामंत्री

श्री बाल कृष्ण पाण्डे (विदर्भ) संगठन मंत्री

श्री सुर्य नारायण रेड्डी (आन्ध्र) उपाध्यक्ष

श्री त्रिलोक चन्द्र शर्मा (दिल्ली) कोषाध्यक्ष

श्री भाष्कर राव (कर्नाटक) मंत्री

श्री लक्ष्मण सिंह शेखावत (राजस्थान) मंत्री

श्री वीरेन्द्र शर्मा (हरियाणा) मंत्री

श्री संकठा प्रसाद सिंह (पूर्व उत्तर प्रदेश) मंत्री